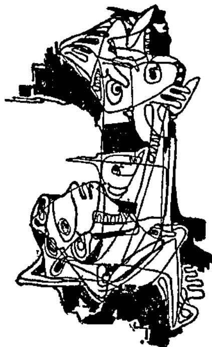


आतंक

[कहानी-संग्रह]

आतंक

(सामयिक बोध की सशक्त कहानिया)

ईश्वर चन्दर

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम),
उ द य पु र

AATANK – Collection of Stories

प्रकाशक
राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

प्रथम सस्करण 1976 ई०

मुद्रक
अर्चना प्रकाशन, अजमेर

मूल्य
सजिल्द - ग्यारह रुपए मात्र
अजिल्द - दस रुपए मात्र

प्रकाशकीय

- हिन्दी जगत के जाने-पहचाने कथाशिल्पी श्री ईश्वर चन्दर का यह सकलन पाठको के समक्ष प्रस्तुत करते हुये मुझे हर्ष है।

- इस सकलन की कहानियो मे मानसिक चेतना और युगीन अडचनो की आवाज स्पष्ट सुनाई देती है। जीवन मूल्यो मे जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे है, सदर्भों मे जो अचीन्हा अजनबीपन मुखरित है। उसका सघन अहसास इन कहानियो मे है।

- अकादमी ऐसे ही सशक्त हस्ताक्षरो के सकलन अथवा उनकी श्रेष्ठ कृतिया अनतिदूर प्रकाशित करने वाली है।

आशा है साहित्य जगत मे राजस्थान के सृजनधर्मी साहित्यकारो की इन कृतियो का स्वागत होगा।

उदयपुर
दिसम्बर 1976 ई०

राजेन्द्र शर्मा
निदेशक

अनुक्रम

उनके आने पर



जान-बूझकर मैं पालम नही गया।

वैसे, कहने को पिताजी ने मुझे बहुत कहा कि तुम दिल्ली चलो। तुम्हारे मामाजी आ रहे हैं। तुम साथ होगे तो उन्हे अच्छा लगेगा।

लेकिन मैंने झूठ-मूठ ही कह दिया कि मेरे पैर मे अभी तक दर्द है। मामाजी को दिल्ली तो मैं घुमा नही पाऊंगा। व्यर्थ ही, केवल पालम जाकर उन्हे रिसीव करने के लिये फालतू का खर्चा क्यो किया जाय।

हुआ ऐसा था कि कुछ ही दिन पहले सीढी से मेरा पैर फिसल गया था। उन दिनो पैर काफी सूज गया था। यद्यपि सूजन अब करीब-करीब खत्म हो गई थी लेकिन पैर मे हल्का सा दर्द बाकी था। मैं इस बात पर मन ही मन खुश होने लगा कि चलो यह दर्द का बहाना कुछ काम कर गया।

तो मैं पालम नही गया।

घर मे बच्चे बहुत खुश हो रहे थे कि मामाजी आएगे। अब के साथ में नई-नई मामी भी होगी।

वैसे बच्चों को शायद इस बात की कोई अधिक खुशी नहीं थी कि मामाजी या मामीजी आएंगे लेकिन उन्हें तो खुशी इस बात की थी कि मामाजी उनके लिये वहां की बहुत सारी चीजें लाएँगे और उन चीजों को लेकर वे अपने मित्रों में पापुलर होते रहेंगे कि देखो—फलां-फलां के मामाजी फोरेन से आए हैं, और देखो, कितनी अच्छी-अच्छी चीजें लाए हैं।

होने को मेरी बहन वर्तिका को बहुत खुशी हो रही थी। उसे खुशी थी तो बस एक बात की कि मामाजी उसके लिये वहां के नये-नये कास्मेटिक्स लाएँगे, उन्हें दिखा-दिखाकर वह कॉलिज की अन्य लड़कियों के सामने डींग हांकती रहेगी।

हुआ ऐसा था, कि उसके कमरे में सहेलियों से हुई उसकी ऐसी बातों को मैंने एक दिन ओवर-हीयर कर लिया था। और तभी उसकी अपनी सहेलियों की बातचीत से ही मैंने यह भी पता लगा लिया था कि घर वालों से छिपकर मामाजी को वर्तिका ने कास्मेटिक्स लाने के लिये चिट्ठी भी लिख दी थी, जिसका आज तक घर में किसी को पता नहीं है और न ही उसने घर पर किसी के साथ ऐसा कोई जिक्र ही किया था।

खुशी तो मां को भी बहुत हो रही थी कि उसका छोटा भाई आ रहा है और अब की तो वह अपने साथ बहू भी ला रहा है, जो उस देश की लड़की है, जहां उसका भाई रहता है।



पालम जाने के लिये एक बार वैसे मेरे मन में आया भी था कि चलो, पिताजी की बात मान लूं और उनके साथ चला जाऊं। लेकिन तभी मुझे याद आया कि पिछली बार जब मामाजी यहां से विदेश जा रहे थे, तब पिताजी और मामाजी के साथ मैं भी पालम गया था। मुझे याद आया कि तब पिताजी किस तरह अलग-अलग एयरलाइन्स वालों को व्यर्थ ही बोर करते रहे थे, कि फलां प्लेन कब आएगा या फलां प्लेन कब जाएगा।

तब पिताजी को हर एयरलाइन्स वाले से पूछताछ करता देख, एयर-फ्रांस वाले ने पिताजी को कह दिया था—कि आखिर आपको किस एयरलाइन्स से काम है, इस तरह हरेक से पूछताछ करने से तो बेहतर है कि आप टाइम-टेबुल देख लीजिये।

पिताजी तब बडी ही खिसियानी हसी हसे थे और तब ही मुझे लगा था कि पिताजी कितने बातूनी आदमी हैं। तभी तो एयर फ्रांस वाले ने पिताजी से ऐसी बात कह दी जो कुछ-कुछ अपमानजनक सी थी।

उसके बाद भी पिताजी ने हमे वहा खासा बोर किया था। पास से गुजरने वाले हर हिप्पी को या उसकी वेशभूषा को बडे गौर से देखना, बेमतलब उनसे कोई न कोई बात करना, आए या न आए, जबरदस्ती अग्रेजी में बोलना और फिर बार-बार, किसी जहाज के चढने या उतरने पर बालकोनी में जाकर खडे रहना मुझे तो बहुत बुरा और अजीब सा लग रहा था। फ्लाइट से पहले जहाजो के फैन की जू जा की ध्वनि ऐसी तीखी थी कि उसके सामने हम तो खडे ही नही हो पा रहे थे। लेकिन पिताजी के चेहरे से लग रहा था कि उस शोर को वे एन्ज्वाय कर रहे थे।

बुरा तो तब मामाजी को भी लग रहा था। लेकिन अपने जीजाजी से उसने शायद यही सोचकर शिकायत नही की कि दो घण्टे बाद उसका फ्लाइट था। दो घण्टे के उस थोडे से समय के लिए, जीजाजी को ऐसी कोई बात क्यो कही जाय, जो उन्हे बुरी सी लगे। शायद यही सोचकर मामाजी उस बोरियत को पी गये थे।

और फिर उस बोरियत का केवल वही तक अन्त हुआ होता, तो भी चल जाता। लेकिन मामाजी के प्लेन मे बैठने से लेकर उसके उडने तक वे बालकनी में खडे लोगो से जहाजों के प्रति या उनकी तकनीकी बातो के सम्बन्ध मे ऐसी-ऐसी बातें करते रहे थे, जैसे कि उनकी अपनी जहाजो की कोई फैक्टरी हो या वे भी कभी पायलट रह चुके हो।

मुझे आज भी याद है कि तब मुझे कितनी शर्म आ गई थी, जब बेल-बाटम मे एक पजाबी लडकी ने, पिताजी की तरफ देखने के बाद कैसे व्यग्य भरी दृष्टि से मेरी तरफ देखा था। तब मुझे ऐसा लगा था जैसे वह लडकी मुझ पर ही व्यग्य से मुस्कराई थी कि मैं कैसे बातूनी बुढऊ के साथ पालम आ पहुँचा था। तब, उसी क्षण, मैंने यह निश्चय कर लिया था कि भूल कर भी पिताजी के साथ कभी पालम-वालम जैसी जगह पर नहीं जाऊँगा।

तो यही वजह थी कि अब की बार मैं पिताजी के साथ पालम नहीं गया।

तीन दिन बाद ही सब लोग आ गये। जब उनकी टैक्सी आकर रुकी, तो मैं जान बूझकर लेट्रिन चला गया।

इस बीच वे लोग अन्दर आ चुके थे। सामान उन्होंने बैठक के पास वाले छोटे से कमरे में रखवा लिया था।

लेट्रिन से निकल कर मैं वाश-बेसिन में हाथ ही धो रहा था कि पिताजी ने बुला लिया।

नैपकिन से हाथ पोंछता हुआ अन्दर गया। मामा के पैर छुए तो लगा कि नई नवेली मामी के भी पैर छूने चाहियें। लेकिन मामी मुश्किल से मेरी उम्र की लग रही थी, इसलिए उसके पैर छूना मुझे कुछ अजीब सा लगा। साथ के साथ यह भी लगा—कि विदेशी लडकी है. मेरा ऐसा करना, क्या पता, उसे अच्छा भी लगेगा कि नहीं। यही सोचकर, मैंने मामी के पैर नहीं छुए। किया सिर्फ इतना कि मामी की तरफ देखकर थोड़ा मुस्करा दिया। ऐसा करते हुए मैंने अपनी मामी का चेहरा भी ध्यान से देख लिया, जो मुझे अच्छा लगा।

तब पिताजी बोले—"लो देखो, तुम्हारे मामा को यह बहुत बुरा लगा कि तुम उसे रिसीव करने दिल्ली नहीं आए" तुम्हें कितना कहा था मैंने कि तुम भी साथ चलो।" लेकिन तुम आजकल के छोकरों को तो....।" ऐसा कहते हुए पिताजी खिसियानी हँसी हँसे। तभी मुझे पिताजी का आखिरी वाक्य बडा फूहड़ सा लगा। बात हो न हो, बस इन बूढों को तो ऐसा कहने मे शायद कोई सुख मिलता है कि तुम आजकल के छोकरों को तो ...।

तब मामाजी ने बड़े आत्मीय ढंग से कहा—"तुम आये क्यों नहीं? अरे भई! मेरी खातिर न सही, कम से कम अपनी मामी की खातिर ही आ जाते। यह तो बेचारी पहली बार इण्डिया आई है। तुम साथ होते, तो वह तुम्हारी कम्पनी को और ज्यादा एन्ज्वाय करती। हमे तो भई! इसीलिये दिल्ली में मजा ही नहीं आया। देखो ना, इसलिये हम दो दिन में ही यहां आ गये। तुम होते तो दो-चार दिन और वहां ठहर लेते।"

मुझे लगा कि मामाजी की यह बात शायद पिताजी को अच्छी नहीं लग रही होगी कि इसका मतलब उस बूढ़े की कम्पनी को वह विदेशी लड़की एन्ज्वाय नहीं कर पाई है या उसके साथ होने से वे लोग बोर हुए हैं।

लेकिन पिताजी को शायद मामाजी की बात से कुछ भी बुरा नही लग रहा था। वे तो पहले की तरह मामाजी की बात पर मद-मद मुस्करा रहे थे। जैसे कि उन्होने जो भी कुछ कहा, बिल्कुल सही था, कही गलत नही था।

वही फिर एक ऐसी बात हो गई, जिससे मुझे लगा कि पिताजी जैसे मामाजी को फ्लेटर कर रहे थे। माजी को बुलाकर, खिसियानी सी हँसी हँसते हुए पिताजी बोले--"अरे, तुम्हारा भाई तो अब पक्का स्मग्लर हो गया है। कस्टम वालो की आखो मे ऐसे धूल झोक आया कि मैं तो सच मे ही हैरान रह गया, डार्लिंग।"

मुझे बड़ा अजीब लगा। यह नहीं कि मामाजी कस्टम वालों की आँखों मे धूल झोक आए है, बल्कि यह कि मैंने पहली बार पिताजी के मुँह से माँ के प्रति 'डार्लिंग' शब्द का उपयोग होते देखा। तब मुझे लगा कि पिताजी शायद हमारी विदेशी मामी को झूठ मूठ यह बताना चाहते होंगे कि देखो हम लोग भी यहाँ इण्डिया मे कही-कही बीबी को 'डार्लिंग' शब्द से सबोधित करते है।

और इधर मा जी को पिताजी की यह बात समझ मे नही आई कि कैसे उसका भाई एक पक्का स्मग्लर हो गया है। वह जब हैरानी से पिताजी की तरफ देखने लगी तो पिताजी ने उसे स्पष्ट बता दिया कि किस तरह 'लिकर चाक्लेट कैप्सूल्स' को चीरा देकर, उनकी शराब निकालकर, उसके भाई ने उन कैप्सूल्स मे एक-एक सोने की गिन्नी भर दी थी। और फिर किस तरह कस्टम वालो ने जब उन चाक्लेटो से भरे डिब्बे के बारे मे उससे पूछा, तो उसने कैसे उसे कन्फेक्शनरी का बाक्स बताकर अलग हटा दिया था। और कैसे कस्टम वाले, इस बात पर थोडा भी शक नही कर पाए।

तब लगा, मा अपने भाई की इस हरकत पर बहुत खुश हो रही थी कि देखो, उसका भाई विदेश मे रहकर कितना होशियार हो गया है।

लेकिन न जाने क्यो मुझे यह सब अच्छा नही लग रहा था। वैसे मैं कोई बहुत ज्यादा आदर्शवादी आदमी भी नहीं हूँ और न ही मेरे मन मे ऐसी कोई भावना थी कि मामाजी ने अपनी ही सरकार के साथ धोखा किया है। सरकार मे कई लोग, सरकार के अपने बनकर ही, जब अन्दर ही अन्दर कई तरह के गबन कर रहे हैं, तब ऐसी कोई तस्करी की बात, मेरे मन मे सरकार के प्रति सहानुभूति या वफादारी पैदा नही कर रही थी लेकिन

मुझे तो बुरा यों लग रहा था कि अगर ऐसे में मामाजी पकड़े गये होते, तो अपनी विदेशी बीबी के सामने उनकी कितनी किरकिरी हो गई होती और तब शायद पिताजी इस तरह की कोई डींग न हाकते, जो मुझे तो कम से कम पलैंट्री जैसा ही कुछ लग रहा था।

एक क्षण को मन ही मन मुझे लगा कि कहीं मैं अपने पिता या मामाजी के प्रति मन में कोई पूर्वाग्रह लेकर तो नहीं सोच रहा हूं। लेकिन तभी मेरा ध्यान ऐसी गम्भीर बात सोचने से अलग हट गया। कमरे में एक अजीब प्रकार की खुशबू फैल गई थी।

हुआ ऐसा था, कि मामी ने उठकर शायद किसी काम से अपना बैग खोला तो एक भीनी सी खुशबू कमरे में फैल गई। वह खुशबू मुझे भली सी, या अच्छी सी लगी।

लगने को, मामी भी बड़ी अच्छी लग रही थी। तब एक पागलपन सी बात सोच बैठा मैं, कि अगर मैं कभी विदेश गया तो विदेश से ऐसी ही किसी लड़की से शादी कर आऊंगा।

मैंने देखा, मां कुछ लम्बी सांसें लेने लगी थी। शायद कमरे में अचानक फैली वह खुशबू उसे भी भली लग रही थी।

तभी मां ने मामाजी से पूछ लिया—"क्या है······ वहा सोने का क्या भाव है ?"

मामाजी बोले—"यही कोई पैंसठ सत्तर के बीच समझ लो।"

मां की तो जैसे आंखें फट गई—"अरे मजाक तो नही कर रहा है, रे !·······यहां तो पांच सौ से भी बहुत आगे का भाव हो गया है।"

मामाजी बोले, "ऐसा है, दीदी ! असल में कारण यह है कि हमारे उधर औरतों को सोना-वोना पहनने का कोई शौक तो है नहीं, इसलिये सस्ता है। आज अगर अपने यहां की औरतें भी सोने के गहनों से मोह निकाल लें, तो अपने यहाँ भी सोने का भाव गिर सकता है।"

अब बात ऐसे सतह पर उतर आई थी कि मैं बोर सा होने लगा था। जब देखो, वही पैसा, वही सोना। मुझे लगा कि इन लोगों का शायद ऐसा ही फलसफा है कि जैसे बस सोना कमाने के लिये ही भगवान ने इन्हें जन्म दिया है।

माँ को ही देख लो ना।"..... बुढापा आ गया है। फिर भी सोने मे मोह है। अपने भाई से यह तो पूछा नही, कि वहा विदेश मे और क्या क्या है? तुझे वहा कैसा लगता है? वहा विदेशी लडकी से जो तुमने शादी कर ली तो क्या कोई तुम लोगो के आपस मे अफेयर्स चल रहे थे? या कि उस विदेशी लडकी के साथ तुम्हारी ठीक से निभ रही है? ...लेकिन नहीं। पूछा तो बस इतना, कि सोने का वहा क्या भाव है?

तभी वर्तिका कमरे मे घुस आई। जैसे बिल्ली को छीछर की गंध आ गई हो। खुशबू जो फैली थी इस कमरे मे, तो आटे से सने हाथों ही वह चौके से भाग आई थी शायद यह देखने कि अगर कास्मेटिक्स जैसा कुछ खोला गया हो तो वह अपना हाथ मार ले।

लेकिन उसने देखा, कि मामी अपने कपडे निकाल रही थी। शायद बाथ लेने जा रही थी। तब वर्तिका अपना सा मुंह लेकर वापिस चौके मे चली गई।

तभी मामाजी मुझे सम्बोधित करके बोले—"अरे हा, तुम्हारी चिट्ठी मिल गई थी मुझे। यहा क्या तुम्हे कोई अच्छी नौकरी मिलने की उम्मीद नही है क्या?" फिर कुछ रुक कर मामाजी बोले "अरे कुछ नही रखा है विदेश मे। अब वहां पहले जैसी बात भी नही रही है। केवल बाहर का पोम्प एण्ड शो है। अन्दर की तो हम जानते हैं। दीज़ डेज़ इट इज़ मिज़रेबुली वर्स्ट देअर।"

पहले जब मामाजी बात कर रहे थे, तो मामी का ध्यान हम लोगो के वार्तालाप की तरफ बिल्कुल नहीं था। लेकिन जब वाक्य के आखिरी शब्द मामाजी अंग्रेजी मे बोले तो अचानक मामी ने हम लोगो की तरफ घूम कर देखा कि ऐसी क्या बात, या ऐसी क्या चीज थी जिसे 'मिज़रेबुली वर्स्ट' कहा जा रहा था।

तभी पिताजी बीच मे बोले—"नही .... वो ऐसा था कि चिटठी लिखने के लिए मैंने ही इसे कहा था। यहाँ तो इसे सरकारी या गैर सरकारी कोई भी नौकरी नही मिल रही थी। तो मैंने ही इसे कह दिया कि अपने मामा को लिख दो कि तुम्हे विदेश बुला ले। बाकी यहा तो बिना जेल के कुछ भी नहीं है। कभी कही कोई जगह खाली होती भी है, तो कहते हैं, कि उस पोस्ट के लिए फला-फला का टेलीफोन आ चुका है कि उसके फला-फला रिश्तेदार को ओब्लाइज करना है।" पिताजी कुछ देर के लिए शांत हो गये।

मामाजी ने कोई उत्तर नहीं दिया। लेकिन उनके चेहरे से लगा कि जैसे वे सोच रहे थे कि जीजाजी को उनकी बात का क्या उत्तर दिया जाए, लेकिन फिर शायद उन्होंने चुप रहना ही ठीक समझा। इसलिये पिताजी की बात का उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।

मामाजी ने अब जेब से एक पैकेट निकाला, जिसमें अलग-अलग रङ्गों की काक्टेल सिगरेटें थी। लाइटर से उन्होंने एक सिगरेट सुलगाई तो मैं हैरान रह गया। पीने को सिगरेट तो वे पहले भी पीते थे। लेकिन पिताजी के सामने इस तरह खुलमखुल्ला उन्होंने सिगरेट कभी नहीं पी थी। तभी फिर मुझे ही लगा कि मामाजी ने शायद यह सोचकर भी पिताजी के सामने सिगरेट पी होगी कि अब तो उन्होंने शादी कर ली थी और अक्सर आदमी शादी कर लेने के बाद, अपने आपको बड़ा समझने लग जाता है।

लेकिन पिताजी का ध्यान उनके सिगरेट पीने की तरफ बिल्कुल गया ही नहीं। गया तो सिर्फ उस अजीब ढग के लाइटर की तरफ, जिसके सम्बंध में, पूछने पर, मामाजी ने बताया कि वह गैस लाइटर था और उसमें एक खूबी यह भी थी कि उसकी लौ को अपनी इच्छा से छोटा वड़ा किया जा सकता था। माँ फटी-फटी नजरों से लाइटर की तरफ देख रही थी। हमारे घर मे कोई सिगरेट-विग्रेट पीता नहीं, तो ऐसे घर में किसी हल्के-फुल्के लाइटर का आ जाना ही अजूबा था, जबकि मामाजी वाला तो गैस लाइटर था।

मामी नहाने चली गई थी। अपना बैग उसने कब बन्द कर दिया था और कब कमरे में फैली वह पहले वाली खुशबू कम होती-होती खत्म सी हो गई थी, हमें पता नहीं चला।

माँ भी अब फिर बाहर जाकर अपने कामकाज में लग गई।

तब मैं मामाजी से बोला—"पासपोर्ट तो मैंने बनवाकर रखा हुआ है।.........अगर आपको लग रहा है कि आपके उधर कोई चान्सेज या स्कोप नहीं है, तो मुझे स्पेन भिजवा दीजिए।.........आपने एक बार बताया था, कि वहां आपका एक दोस्त रहता है, जिसकी आउट-फिटर्स की अपनी चार दुकानें हैं।"

मामाजी कोई उत्तर देने ही वाले थे कि मामी नहाकर कमरे में लौट आई। उसके कमरे में घुसते ही हमारी बातों का लिंक टूट-सा गया। फिर

किसी लैवेंडर की एक सुखद सी खुशबू कमरे में फैल गई। मामी के शेम्पू किए हुए सुनहरे बाल मुझे बड़े अच्छे लगे। ब्रुश कोम्ब से वह अपने रेशमी से बाल सँवारने लगी तो मैं अपने पासपोर्ट-वासपोट की बात भूल सा गया। सोचने लगा कि न जाने स्पेन मे ऐसी लडकिया होगी भी कि नही। व्यर्थ ही मैंने मामाजी को स्पेन के लिए कह दिया। वरना सोचा तो मन म यनी था, कि विदेश जाकर मामी जैसी किसी लडकी से अफेयर्स रखने हैं। हुआ तो शादी भी कर आयेंगे।

तभी अचानक पिताजी को शायद कुछ याद हो आया। वे तुरन्त उठ कर बाहर चले गये।

मामाजी को अब जैसे मुझ से अकेले म बोलने का मौका मिल गया— 'अरे हां! एक बात तो बताओ! तुम दिल्ली हमे रिसीव करने क्यो नही आए? मैंने वायर तो तुम्हे किया था और वहा पाया कि रिसीव करने जीजाजी आए थे। क्यो नही आए तुम?"

मैंने कहा—'ऐसे ही पैर मे थोडा दर्द था और फिर जब पिताजी लेने आ रहे थे, तो मुझे ठीक नही लगा कि व्यर्थ ही दो आदमी रेलवे को किराया दें।'

मामाजी को शायद मेरी बात पर विश्वास आ गया कि जैसे मैं झूठ नही बोल रहा था। हल्का सा लगडाता हुआ मैं सुबह से ही चल रहा था सो उन लोगो ने देखा ही था।

तब फिर मामाजी बोले—"वहा दिल्ली में तो, बाई गॉड, जीजाजी ने अच्छा खासा बोर किया। जनपथ से लेकर रणजीत तक सभी होटलो म चक्कर कटवा दिये। लेकिन जीजाजी को हर होटल महँगा सा लग रहा था। हम वहाँ इतने तो होटल घूम लिए कि मारथा ने एक बार मुझ से पूछ ही लिया कि क्या बात है, ये एक होटल से दूसरे होटल तक हम क्यो घूम रहे हैं। तब झूठ-मूठ मुझे कहना पड गया कि कही भी कमरा खाली नही है। और अन्त मे, जीजाजी ने एक घटिया से होटल म हमे ले जाकर ठहरा दिया। रीयली, बहुत बोर हुए।"

चलो, मामाजी की इस बात से यह तो पता चल ही गया कि मामी का नाम मारथा है। मैं भी फिर जैसे औपचारिक होता हुआ सा बोला— "आप वहा अपनी इच्छा रख लेत। घटिया होटल मे मामी को तो बहुत बुरा लगा होगा।'

मामाजी जैसे खुश हो गये कि मैंने मामी का स्तर जान लिया था, कि उसे हल्के फुल्के होटल पसन्द नहीं होंगे। तभी वे फिर बोले—"मैंने जीजाजी से कहा भी कि ठीक है, जितना मांग रहे है, दे दें। बड़े होटलों मे बार्गेन करना अच्छा भी नहीं लगता और फिर हम लोग आठ दस हजार रुपये लाए हैं। खर्च ही तो करने है.......हम लोग वहां अच्छा खासा कमा लेते हैं। फिर खर्च से क्या कतराना।"

यहां मुझे लगा कि जैसे मामाजी की अपनी ही बात मे कितना विरोधाभास है। कहां तो अब कह रहे हैं कि हम वहा अच्छा खासा कमा लेते हैं और कहां कुछ देर पहले कह रहे थे कि दीज डेज इट इज मिजरेबुली वर्स्ट देअर।

तभी फिर अचानक मुझे लगा कि मैं कुछ सोचने लग गया हूँ। मुझे मामाजी की बात का लिंक तोड़ना नहीं है। इसलिए बोला—"हां पिताजी इन दिनों कुछ अधिक कंजूस हो गये है। हर किसी के साथ बचत-बचत जैसे विषय पर कोई न कोई बात कर लेते है कि वन गुड सेव समथिंग फार रेनी डे।"

कहने को मैं कह तो गया लेकिन मैं यह तय नहीं कर पाया कि मैंने यहाँ मामाजी को खुश किया था या पिताजी की बात को प्रोटेक्ट कर गया।

मामाजी बोले—"राइट! बिलकुल ऐसा उन्होंने मुझे भी कहा कि अच्छा कमा लेते हो तो क्या यों ही गँवाने के लिए है? वन गुड सेव समथिंग फार रेनी डे।"

तभी पिताजी अन्दर आ गये। वे माँ के साथ बाहर कुछ देर खुसुर-फुसुर करके बाद में अन्दर आए थे। मामाजी ने तो खुसुर-फुसुर करते हुए नही देखा था। लेकिन मै कुछ ऐसी मुद्रा में बैठा हुआ था कि मैंने सब देख लिया था और यह भी देख लिया था कि माँ ने पिताजी के हाथ में एक थैला और कुछ नोट दिए थे।

पिताजी अन्दर आए, तो हमने अपनी बातों का संदर्भ बदल लिया; लेकिन पिताजी के लिये इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा। आते ही मामाजी को सम्बोधित करके वे बोले—"हाँ भई! गोश्त मे तुम्हे क्या पसन्द है?" फिर जैसे जबरदस्ती आत्मीयता जताते हुए बोले—"तुम तो खैर, अपने हो.......मेरा मतलब है, तुम तो कुछ भी खा लोगे, लेकिन तुम्हारी बीबी के खान-पान से हम लोग वाकिफ नहीं है—तो इसलिए पूछ रहा था कि....।"

पिताजी की बात को बीच में ही काट कर मामाजी बोले—"गोश्त में मारथा को मुर्गी ही अधिक पसन्द है। लेकिन दीदी को शायद मुर्गी पकाना

नहीं आता होगा। इसलिए बकरे का गोश्त ही ले आइये। लेकिन मारथा के लिए बस, गुर्दे कपूरे ही लाइयेगा।"

पिताजी गोश्त लेने चले गये।

तब मामाजी बोले—"तुम्हारे लिए त्रिवेश का एक पेंट और एटी ट्वेन्टी का एक शर्ट लाया हूं। शर्ट के कफ पर तुम्हारा नाम भी मढवा लाया हूँ।"

मैंने गर्दन हिलाई। ऐसे कि जैसे कह रहा होऊं कि चलो, ठीक है।

मामी तब तक बिलकुल तैयार हो ली थी। उसके कपडो मे अजीब सी चमक थी। मैंने मन ही मन बहन के लिए सोचा कि मामी के चमकते हुए कपडो को देख कर, वर्तिका की तो लार टपक आई होगी और साथ के साथ शायद उसे खुशी भी हुई होगी कि मामाजी अगर उसके लिए कुछ लाए होंगे तो वो भी शायद ऐसा ही कोई कपडा होगा।

मैं एकटक मामी को देखे जा रहा था। कितनी अच्छी लगती है! तभी फिर अचानक मेरी गर्दन झुक गई, जब मैंने देखा कि मामाजी मेरी तरफ ध्यान से देख रहे थे कि कैसे मैं मामी मे आँखें अटकाए हुए था।

एक तो शर्म इसलिए भी आई कि देखो, मामी को जी भर कर देख रहा था कि पकडा गया। दूसरे इसलिए भी कि उनके कपडों के सामने मुझे अपने चाहे घर वालो के कपडे ऐसे लग रहे थे, जैसे हम लोग अब तक खद्दर ही पहनते आए हो।

तभी फिर मामाजी बोले—"अच्छा, एक बात बताओ। अगर तुम यहा कोई अपना बिजनेस शुरू करना चाहो तो करीब कितने हजार की जरूरत पड़ेगी तुम्हें?"

माँ ने कहा—'क्या पता? ...... हमारे खानदान मे तो शुरू से सभी लोग नौकरी ही करते आए हैं।...... इस घर मे न कभी किसी ने बिजनेस किया है और न ही किसी को पता है कि बिजनेस कैसे होता है और उसमे कितने पैसों की लागत हो सकती है।"

तब जैसे किसी बच्चे को समझाते हुए से मामाजी बोले—'नही! यह मैं इसलिए पूछ रहा हूँ कि, अगर तुम पाच सात हजार से कोई काम चला सको, तो यहीं ठीक है। वहा विदेश मे भी क्या रखा है? और फिर वहाँ अब पहले जैसी बात रही भी नही है।' 'पाच-पांच साल तक घर वालो से दूर रहना...... न चाहते हुए भी यहां के लोगों, यहा के वातावरण से

समझौता करना''''''''सोच लो तुम।''''''''''अगर चाहो तो मैं कुछ फाइनेन्स कर सकता हूँ।"

मैं चुप रहा। इस अन्दाज में कि मामाजी को लगे कि मैं शायद मन ही मन कैल्क्यूलेट कर रहा हूँ कि कितनी रकम की जरूरत पड सकती है। लेकिन असल मे मैं मन ही मन अपने को कोसने लगा था कि क्या बात है, या कैसी मजबूरी है कि काम धन्धे के लिए जैसे हम किसी ऐसे आदमी के गले पड़ रहे हैं, जिसको हमारी मजबूरी से बस इतना भर ही सरोकार है कि थोड़ी मदद से काम चल जाए तो गले में घण्टी बंधने से पीछा छूट जाए।

यहाँ फिर मुझे आज की व्यवस्था पर गुस्सा आया कि कैसी अजीब बात है।''''''''इतनी पढाई लिखाई करने और डिग्री लेने के बाद भी भविष्य का कोई स्कोप दिखाई नही देता।

तभी मामी के बोलने पर मेरा ध्यान टूटा। मामा के साथ, वहाँ की भाषा मे उसने कुछ बात की। बात का सही अर्थ मैं नही समझ सका। लेकिन कुछेक शब्दों में ऐसा लगा, जैसे वह भाषा उर्दू से प्रभावित थी या फिर उर्दू उस भाषा से प्रभावित थी। मतलब कि कुछ शब्द मुझे उर्दू जैसे लगे।

मामाजी उठकर मा के पास चले गये। अब एक बार फिर चोर निगाहों से मैंने मामी को देखा और सोचने लगा—कैसे यह लड़की मामा की पटाई में आ गई। मामाजी शक्ल सूरत से भी कोई ऐसे बहुत खूबसूरत नही लगते।

मेरे मन का निश्चय जैसे डांवाडोल सा होने लगा था। मामी को देखता तो मन में तय कर लेता कि विदेश अवश्य जाऊँगा। लेकिन फिर मामा के कोल्ड-रेस्पांस को देखकर लगता कि क्यों फालतू ही मे इन पैसे वालों के पीछे लगा जाए। रूखी-सूखी दाल-रोटी अपनी भली।

कुछ ही क्षणों बाद मामाजी मा के साथ अन्दर आते दिखाई दिये। मैंने देखा कि मा को शायद अब ही खुलकर मामाजी के साथ बात करने का अवसर मिला था। वह मामाजी से कहती आ रही थी कि क्या बात है, उसके शरीर मे तो कोई फर्क हो नही आया है। वरना देखो, विदेश से जो भी आता है, मोटा होकर आता है और उत्तर में मामाजी कह रहे थे कि नहीं, पहले से तो मैं दस पौंड बढ़ गया हूँ।

मुझे लगा, यह सब कितना औपचारिक और फालतू सा है।

वे लोग जब कमरे मे चले आये, तब मा ने भी गौर से मामी को नीचे से ऊपर तक देखा। मुझे बड़ा अजीब सा लगा कि मा, मामी को निहारते-निहारते जैसे थक ही नही रही थी। इससे पहले भी जब मा कमरे मे बैठी थी तो मामी को एकटक देखती रही थी और अब तो मामी ने चमकीले कपड़े पहन रखे थे। चमकते हुए उसके कपड़ो को देखकर मा की आखो मे भी जैसे चमक आ गई थी। मा जब मामी को देखने लगी तो मैंने भी एक बार फिर जी भरकर उसे देख लिया। मुझे लगा, उसक कपड़े ही नही, सुनहरे बाल भी कितने चमक रहे थे। साथ के साथ मामी की हरी बिलोरी आँखें भी मुझे भली सी लगी।

तब फिर मेरी तरफ इशारा करते हुए मामाजी मा से बोले—"दीदी! देखो, मैंने तो इसे अभी कहा है कि अगर तुम कुछ बिजनेस आदि करना चाहो तो यही कर लो "पैसे वैसे की कुछ मदद मैं कर दूँगा। अब हम भी तो अपने हैं—कोई पराए तो हैं नही। वक्त पर अपने ही तो काम आएँगे।"

मामाजी ने फिर जो बिजनेस की बात दोहराई तो मेरा चेहरा उतर गया। लेकिन अब तो मुझे और भी साफ लगा कि मामाजी निश्चय ही यह नही चाहते कि मैं उनके साथ विदेश मे रहूँ।

मेरे उतरे-उतरे चेहरे को देखकर मा बोली—"क्यो? ... ...करोगे कुछ यहा? ... या विदेश ही जाने की ज़िद है?"

मेरा गला रुंध गया। लेकिन फिर भी मैं बोला ही—"ज़िद-विद क्या है।" यहा कोई स्कोप नही दीखा तो मामाजी को लिख दिया था। अब अगर विदेश नही गया तो पिताजी ही खुद महीनो यह राग अलापते रहेगे कि व्यर्थ ही पासपोर्ट पर खर्चा करवाया।" मेरी आँखो मे शायद आसू भी आने को थे। लेकिन मैं अन्दर ही अन्दर पी गया। तभी मुझे लगा कि मैं शायद पिताजी के प्रति कोई अपमानजनक बात कह बैठा था।

एक बार फिर मुझे गुस्सा आने लगा कि कैसी अजीब स्थिति है कि पढ-लिख लिये, फिर भी कोई काम नही मिल रहा है। ले देकर मैं या तो अपने मा-बाप पर गुस्से हो सकता था, जिन्होने मुझे इस युग मे पैदा किया या फिर पिताजी की तरह, सरकार पर गुस्सा हो लेता, जिसकी व्यवस्था ही शायद डिफेक्टिव है।

इस बीच मैंने देखा, पिताजी गोश्त लेकर लौट रहे थे। मुझे बड़ा अजीब सा लगा, जब वे बच्चों की तरह थैला हिलाते हुए आ रहे थे।

तभी एक बार फिर खुशबू उठी तो मैंने घूमकर मामी की तरफ देखा, जिसने अब एक दूसरा बैग खोला था।

बैग मे से उसने एक पेंट और एक शर्ट निकाली। मैं समझ गया कि वे चीजें शायद मेरे लिये ही थीं। मामाजी भी ऐसा ही बोले—"लो! अपनी मामी से वे कपड़े ले लो। तुम्हारे लिये लाया हूं।" खुशबू जो उठी थी तो वर्तिका फिर अन्दर आ गई कि शायद मामी कास्मेटिक्स निकाल रही है। कपड़े लेने के लिये मैं उठा। मामी से कपड़े ले रहा था कि उसकी उँगलियों से मेरी उँगलियां छू गई।

मामी की उँगलियों से मेरी उँगलियों का छू जाना, वैसे तो मुझे अच्छा लगना चाहिये था। लेकिन न जाने उस वक्त क्यो मुझे वह अच्छा नही लगा। मुझे तो बस लगा, जैसे मेरा एक सुन्दर सा सपना टूट-टूट रहा था। मामाजी मुझे विदेश बुलवाने वाले नही थे। उनकी अब तक की बातो से बहुत कुछ स्पष्ट हो चुका था। अब तो बस वे मुझे कुछ विदेशी कपड़े देकर बहला या टरका रहे थे।

जब मैं विदेश जाऊँगा ही नहीं, तो फिर मामी जैसी किसी बीबी के लाने का सपना क्यों कर सजोया जाए।—मैंने सोचा।

कपड़े लेकर मैं वापिस मूढे पर जाकर बैठ गया। मैंने तो खोलकर भी नहीं देखा कि कपड़े कैसे थे। मैंने देखा कि वर्तिका अब भी अपने कास्मेटिक्स की उम्मीद लगाए खड़ी थी।

तभी न जाने क्यों मुझे रोना आ गया।

सब लोग हैरान रह गये कि अभी तक तो सब ठीक था। यह अचानक ही मुझे क्या हो गया।

सभी मुझसे कारण पूछने लगे कि क्या बात है, मैं क्यो रो रहा हूं?

मैंने कोई उत्तर नही दिया। लेकिन मुझे शर्म आने लगी कि मैं इतना बड़ा हो गया हूँ, फिर भी मैं बच्चों की तरह अचानक कैसे रो दिया। मामी क्या सोच रही होगी। उसका मेरे प्रति कितना पूअर या बचकाना सा इम्प्रेशन बना होगा।

मेरी आंखों के सामने सभी लोग जैसे धुंधला गये थे। जेब से रूमाल निकाल कर मैंने अपने आंसू पोंछ लिये और चुप हो गया।

तभी मैंने देखा, मामी बड़े स्नेह से मुझे निहार रही थी और मेरी बहन बेचारी अब भी कास्मेटिक्स की उम्मीद लगाए, मामी की तरफ देख रही थी।

मुझे लगा, जैसे मैं बेमौके रो दिया था।

लड़का-लड़की



कुछ देर दोनों कुछ नहीं बोलते। चुपचाप आगे बढ़ने लगते है। लड़की गर्दन नीची कर, अपने सैंडिल की तरफ देखती है। काफी पैदल चलने से धूल की एक हल्की सी परत उसके सैंडिल पर जम गई है। उस धूल की हल्की परत को सैंडिल पर से झाड़ने के लिए लड़की एक-दो बार पैरो को जोर से जमीन पर पटकती है और फिर लडके को तरफ देखने लगती है। लेकिन लड़के के चेहरे के भाव मे कोई फर्क नही आता। मानो लड़की को खुश करने के लिये ही वह भी एक बार अपने जूतो की तरफ देखता है। लड़के के जूतो पर लड़की के सैंडिल से अधिक मोटी धूल की परत जम गई है; लेकिन वह लड़की की तरह शू पर से धूल की परत झाड़ने के लिये जमीन पर जोर से पैरों को नहीं पटकता। अपनी उसी रफ्तार से वह चुपचाप चलने लगता है।

थोडा आगे जाकर लडके की निगाह एक खोमचे वाले पर पड़ती है। लडकी की तरफ देखकर, लड़का पूछता है—"मूंगफली खाओगी?"

लड़की हामी के भाव से गर्दन हिलाती है।

मूंगफली लेकर लड़का उसका आधा हिस्सा लड़की की तरफ बढ़ाता है। लड़की पर्स का जिप सरका कर मूंगफली उसमे रख देती है। पर्स का जिप वह खुला ही रहने देती है और पर्स मे से एक-एक मूंगफली निकालकर वह खाती हुई चलती जाती है। लड़के ने भी मूंगफली अपने पैंट की जेब मे रख ली हैं और धीरे-धीरे एक-एक मूंगफली निकालकर, लड़की की तरह वह भी खाता हुआ चलता है।

कुछ देर बाद लड़का, लड़की की तरफ देखकर कहता है—'तुम्हें यह अजीब नहीं लगता कि हम दोनो रास्ते चलते गंवारो की तरह मूंगफली खाते चल रहे हैं, और रास्ते पर आने-जाने वाले आश्चर्य से हमारी तरफ देखते जा रहे हैं ?"

लड़की कहती है—'नही। तुम तो जानते ही हो कि मूंगफली मुझे कितनी अच्छी लगती है और जब भी मैं मूंगफली खाती होती हूँ, तब मुझे दुनिया की किसी भी और चीज का अस्तित्व नजर नही आता। मुझे तब ऐसा लगता है कि मूंगफली है, और मैं हूँ और बस।'

लड़के को लड़की का उत्तर अजीब-सा लगता है।

काफी आगे चलकर लड़का एक सिग्रेट सुलगाता है और फिर लड़की से पूछता है—तुम आज इतनी उदास-उदास क्यों हो ?

लड़की कहती है—'कोई खास बात नही है।''''''''आज होस्टल मे निकी से मेरा झगड़ा हो गया।' और वह चुप हो जाती है।

लड़का उससे 'क्यों' जैसा कोई प्रश्न नही पूछता। उसे पता है कि वह ऐसी बातें किस्तों में बताया करती है।

लड़की पर्स का जिप बन्दकर, लड़के से कहती है—'मेरी मूंगफलियाँ खत्म हो गईं। तुम्हारे पास कुछ और हैं क्या ?'

लड़का अपने पेंट की जेब से बाकी बची मूंगफली निकालकर लड़की के हाथ मे दे देता है। मूंगफली छीलती हुई लड़की फिर कहती है—'निकी ने आज मुझे 'फ्लर्ट' कहा। तुम्हे तो पता ही है कि अगर कोई लड़का मुझे फ्लर्ट कह दे तो मैं उसकी परवाह नहीं करती। लेकिन निकी ने मुझे फ्लर्ट क्यों कहा ? खुद कोई कम है क्या ?'

लड़का कोई उत्तर नही देता। केवल हाथ वाले सिग्रेट को उंगली का झटका देकर दूर एक नाली मे फेंक देता है। लड़की भी चुपचाप फिर मूंगफली खाने मे जुट जाती है।

लड़का फिर बोलता है—'इतना पैदल चल आए हैं हम। तुम्हें कोई थकान महसूस नहीं होती ?'

'हाँ, यों ही थोड़ी-सी।.......चलो। कहीं बैठें चल कर।' लड़की एक जम्हाई लेकर कहती है। लड़का पूछता है—'कहां चलने का इरादा है ?'

लड़की कहती है--'जहाँ तुम ले चलो।'

लड़का कहता है--'जहां तुम्हारी चलने की इच्छा हो, वहीं चलें। वैसे मेरी इच्छा बगीचे में चलने की थी। लेकिन एक तो अन्धेरा हो चला है और दूसरे आज ठण्ड कुछ ज्यादा ही है। है न ?'

'हाँ' लड़की कहती है--'तो चलो फिर पुलिया पर चलें। श्मशान के पास वाली पुलिया पर बैठने से न जाने क्यों मुझे थोड़ी शांति मिलती है। मूँगफली खाते समय जैसे मैं दुनिया का अस्तित्व भूल जाती हूँ उसी तरह श्मशान वाली पुलिया पर मैं अपना अस्तित्व भी भुला बैठती हूँ। सामने से दिखाई देने वाला धुएँ से काला हुआ टिन शैड। राख का ढेर।.......और राख से निकलते हुए उस धुएँ में मैं अपना सब कुछ भुला बैठती हूँ। तब मुझे ऐसा लगता है कि राख से निकलता हुआ वह हलका-हलका धुआँ ही दुनिया है।'

लड़का कहता है—'तुमने आज फिर मुझे 'बोर' करने की कसम खाई है क्या ?'

लड़की इस बात का कोई उत्तर नहीं देती। केवल लड़के की तरफ देखकर, होठों पर फीकी मुस्कान ले आती है और फिर विचारों में खो-सी जाती है।

पुलिया के पास पहुँचकर लड़का पुलिया के पत्थर को हाथ लगाकर देखता है। फिर लड़की से कहता है—'पत्थर बहुत ठंडा है।''

इसका कोई उत्तर देने के बजाय लड़की पुलिया पर बैठ जाती है। लड़का भी चुपचाप लड़की के पास बैठ जाता है।

थोड़ी देर बाद लड़की कहती है—'लौटते समय याद दिलाना, बाजार में से होते चलेंगे। मुझे कुछ शॉपिंग करनी है।'

लड़के का लड़की के शॉपिंग से कोई खास ताल्लुक नहीं है। लेकिन कुछ तो बोलना ही है। इसलिये लड़की से पूछता है 'क्या लेना है ?'

बिना किसी लाज-शर्म के लड़की कहती है-'छत्तीस नम्बर की ब्राज लेनी है। पहले वाली सब ब्राज अब तंग पड़ गई हैं।'

'हूं।' लडका और कुछ नहीं कहता। सिर्फ एक सिगरेट निकालकर सुलगाता है।

काफी देर चुप रहने के बाद लडका लडकी का हाथ अपने हाथ में लेकर कहता है—तुम्हारा हाथ देखा कितना ठडा हो गया है। आज ठड कुछ ज्यादा है ना ?'

'हां' लडकी अन्यमनस्क-सी उत्तर देती है और फिर स्वेटर के कालर को खीचकर अपने कानो तक लाने की कोशिश करती है।

कुछ देर दोनो शान्त रहते हैं। फिर लडकी लडके की तरफ देखकर, कहती है—'तुमने क्या विचार किया ? कोई फैसला—'

लडकी की बात को बीच ही मे काटकर लडका पूछता है—'किस बात का ?'

लडकी कहती है- शादी क बारे मे।'

इस पर लड़का जैसे कुछ खीझ कर कहता है—'मैंन तुम्हे कल बताया तो—कि तुमसे शादी करने का मेरा इरादा नहीं है।'

क्या ? लडकी उसकी तरफ देखकर पूछती है।

लडका कहता है—'इसलिय कि तुम बहुत ही बदनाम लडकी हो। तुमसे शादी कर लने के बाद मे सोसाइटी मे मूव' करन क लायक न रहूँगा।'

कोई तक देने क अभिप्राय से लडकी कहती है—अभी मरे साथ दोस्ती रखकर भी तुम सोसाइटी म मूव कर रह हो ना ? तो फिर भी इसी तरह—।

लडका फिर लडकी की बात को बीच ही म काटकर कहता है—यहाँ तुम गलती पर हा। तुम्हारे साथ दोस्ती का होना तो मेरे लिये गव की बात है। तुम्हारे साथ शादी करने के बाद जो दोस्त मुझ पर फब्तिया कसेंगे वे आज तुम्हारी और मरी दोस्ती पर रश्क खाते हैं। कुछ तो जलते भी हैं।'

अजीब निगाहो स लडक की तरफ देखकर लडकी कहती है—'अजीब बात है।'

लडका फिर कहता है—'तुम्ह शायद पता नहीं होगा कि कालेज क कितने ही लडके तुमसे दोस्ती करन को उत्सुक हैं।

व्यग स लडकी पहले सिर्फ थोडा मुस्कराती है। फिर एक हल्का-सा ठहाका लगाकर कहती है—'हां, जानता हूँ और यह भी जानती हूँ

कि वे सब तुम जैसे हैं, जो सिर्फ दोस्ती ही रखने में गर्व महसूस करते हैं। लेकिन शादी करने के लिए शायद कोई भी तैयार न होगा। सबो को तुम्हारी ही तरह सोसाइटी में भी तो 'मूव' करना होगा।'

इस व्यंग पर लड़का थोड़ा ब्लश हो जाता है। इसलिए लड़की से कहता है—'उठो, अब चलें। मुझे ठण्ड कुछ ज्यादा महसूस हो रही है।'

पुलिया छोड़कर, दोनों चुपचाप चलने लगते है। फिर कुछ-न-कुछ बोलने के लिए लड़की कहती है—'अभी जब पुलिया पर तुम सिग्रेट पी रहे थे, तब कुहासे में तुम्हारी जलती हुई सिगरेट मुझे किसी जुगनू की तरह लग रही थी।

लड़का कहता है—'हां, लगी होगी। आज पुलिया पर अन्धेरा भी कुछ ज्यादा ही था। शायद पुलिया का लैम्प-पोस्ट खराब होगा।'

थोड़ी देर को फिर दोनों चुप हो जाते हैं।

बगीचे के पास से गुजरते हुए, लड़का लड़की से पूछता है—'तुम अपने बालो मे फूल लगवाना चाहोगी ?'

लड़की कहती है—हां ! भले ही.........।

लड़का बगीचे मे से एक फूल तोड़कर अपने ही हाथों से लड़की के बालो मे लगाता है। फूल के लाल रंग को देखकर लड़की को शायद कुछ याद आता है। वह लड़के से कहती है—'आज तुमने एक बात मार्क न की होगी।'

'कौन सी ?'

'कि आज मैंने अपने होठो पर लिपस्टिक नही लगायी है।'

थोड़ी खिसियानी हँसी हँसकर लड़का कहता है—'नही, मैंने यह मार्क नही किया था।'

लड़की कहती है—'यह बात मैंने पुलिया पर ही महसूस की थी। वैसे श्मशान के पास वाली उस पुलिया पर तुम हमेशा मेरे होठ चूमते हो और फिर अलग-अलग रंगो की लिपस्टिक की सुगन्ध और स्वाद के बारे में कुछ न कुछ जरूर कहते हो। लेकिन आज तुमने ऐसा नही किया।'

लड़का इस बात का कोई उत्तर नहीं देता।

लड़की फिर कहती है—'और वही मैंने महसूस किया कि अब तुम्हारा दिल मुझ पर से उठता जा रहा है।'

लड़का कहता है—'नही, तुमने गलत सोचा है। तुम्हारे होंठ चूमने का उस वक्त मेरा इरादा तो था, लेकिन तुमने फिर शादी की बात छेड कर मेरा मूड ही खराब कर दिया।'

लडकी कहती है—'खैर, तुम मुझसे शादी न करो। यह कोई इतनी बडी बात नही है, कि तुमने इसे इतना ज्यादा महत्त्व देकर अपना मूड खराब कर लिया।'

लडका, लडकी की इस बात का अभिप्राय समझ जाता है और लडकी को बगीचे के एक कोने मे ले जाकर उसके होंठ चूम लेता है।

बगीचे से निकल कर लडका लडकी की कमर के गिर्द बाँह डाल देता है और फिर दोनो चुपचाप चलने लगते हैं। थोडा आगे जाकर लड़की फिर कहती है—'शादी तुम मुझसे करना नही चाहते, क्योकि मैं बदनाम लडकी हूँ।...... लेकिन मेरे पेट मे जो यह बच्चा है उसका क्या होगा?'

'होगा क्या? गिरा देना या फिर पैदा होते ही उसे किसी गन्दे नाले मे फेंक देना।'

'नही। यह सब मुझसे नही होगा। कुछ दिन पहले सिविल हॉस्पिटल के पीछे कचरे के पाइप के पास कुत्ते एक न्यूली बार्न बेबी को खा रहे थे... यह सब मैंने अपनी आखो से देखा था।' क्षण भर रुक कर वह फिर कहती है—'और तुम तो जानते ही हो कि इससे पहले भी मैं अपना एक बच्चा गन्दे नाले मे फेंक चुकी हूँ।............और जब से कुत्तो को मैंने एक बेबी खाते देखा है, तब से सोच रही हूँ, कि कही मेरे पहले बच्चे का 'पेट' भी ऐसा न हुआ हो।...... और इसलिये मैंने अबकी बार यह फैसला किया है कि अपने पेट में पलते इस बच्चे को मैं बोल्ड बनकर समाज के सामने अपना बच्चा कहकर स्वीकार करूँगी।........ वैसे मेरे पेट मे जो यह बच्चा है, वह केवल मेरा ही नही, तुम्हारा भी तो है।' फिर कुछ रुक कर लडकी कहती है—'और इस बात से तो तुम इन्कार नही कर सकते कि यह नतीजा हम दोनो ही की गलती का है।'

लडकी की कमर पर से अपनी बाह हटाकर लडका कहता है—'इसमे मेरी क्या गलती है? जब हमारी दोस्ती ऐसी खतरनाक भावनात्मक हद तक पहुँचनी ही थी, तो तुम्हे खयाल रखना चाहिए था।' कुछ देर बाद लडका फिर कहता है—'आजकल हर समझदार लडकी किसी भी लडके से दोस्ती रखने के तुरन्त ही बाद अपने पर्स मे पाउडर और लिपस्टिक के साथ कुछ और भी रखती है।'

उदास-उदास सी लड़की कहती है—'हां।............यह गलती तो हो गई है मुझसे।'

थोड़ी देर के लिए दोनों शांत हो जाते हैं। चुपचाप वे बाजार की ओर जाने लगते हैं। लड़का लड़की की तरफ देखकर कहता है—'बाजार आ गया है। तुम्हे शायद कुछ शौपिंग करनी थी?'

'हां!' लड़की अन्यमनस्क सा उत्तर देती।

ग्लैमर से लड़की छत्तीस नम्बर की दो ब्रा खरीदती है। बाहर निकल कर लड़की पैकेट की तरफ देखकर कहती है--'बहुत दिनों से मैं तुम्हें एक बात बताना चाहती थी, लेकिन जाने क्यों नहीं बता सकी।

प्रश्न-भरी निगाहों से लड़की की तरफ देखकर लड़का पूछता है--'कौन सी बात?'

लड़की कहती है--'जब हाई स्कूल छोड़कर मैं कालेज मे आई थी, तब सुना था कि कालेज के लड़कों को वे ही लड़कियां अच्छी लगती है, जो छत्तीस नम्बर की ब्रा पहनती हैं। इसलिए मैंने भी--'लड़की आगे कुछ नहीं कहती।

उतावलेपन से लड़का पूछता है—'इसलिये क्या?'

'कुछ नहीं।' लड़की को फिर जाने क्या ख्याल आता है कि अपने मन की बात वह लड़के को बताना नहीं चाहती। चुपचाप एक हाथ में पर्स और दूसरे हाथ में पैकेट हिलाती, वह आगे बढ़ने लगती है।

थोड़ा आगे जाकर, लड़का लड़की से कहता है—'मैंने तुमसे शादी करने से इन्कार किया है इसलिये शायद अब तुम मुझसे मिलना भी पसन्द न करोगी?'

लड़की एक हल्का सा-ठहाका मार कर कहती है 'मैं इतनी तंगदिल नहीं हूं।'

लड़के को शायद वह उत्तर अच्छा नहीं लगता इसलिये सुनी-अनसुनी कर बिना किसी मतलब के सामने से आती हुई एक पंजाबी लड़की को तरफ देखने लगता है।

कुछ देर बाद लड़की कहती है—'हां, यह हो सकता है कि अगर मुझे कोई और अच्छा दोस्त मिल गया, तो फिर शायद तुमसे मेरा मिलना-जुलना कम हो जाए।'

लड़का अपने आपको इतना बोल्ड नहीं समझता कि इस बात का उत्तर दे सके। इसलिये चुप रहता है।

अब दोनों हास्टल के पास आ पहुँचे हैं। लड़का कहता है—'अच्छा, मैं चलता हूँ। तुम्हारा होस्टल आ हो गया।'...... कल का क्या प्रोग्राम है?'

लड़की कहती है—'मैंने कहा न, जब तक मुझे कोई और अच्छा दोस्त नहीं मिल जाता, तब तक वही 'डेली रूटिन' रहेगा। कल शाम को आना, आज की तरह सैर पर चलेंगे।'

'अच्छा, बाई-बाई।' कहकर, लड़का चला जाता है।

लड़की होस्टल की सीढ़ियां चढ़कर अपने रूम में आती है। हाथ वाला पैकेट और पर्स टेबुल पर फेंककर, वह दरवाजा और खिड़कियां बन्द कर देती है। ऐसा करने से ठंड उसे काफी कम हो गई महसूस होती है।

उसके बाद वह अपने सब कपड़े उतारकर, सामने लगे आदम-कद आईने में अपने नगे शरीर के अंग-अंग को देखती है और फिर पैकेट खोलकर उसमें से एक ब्रा निकाल, वह पहनकर देखती है।—बिल्कुल ठीक है—वह होठों ही होठों में कहती है।

क्षण भर बाद प्यार से दोनों हाथ धीरे-धीरे अपनी ब्रा पर फेरती है। और फिर अपनी इस हरकत पर थोड़ा मुस्करा कर वह नाइट-गाउन पहनकर, पलंग पर लेट जाती है।

लेटे-लेटे वह अपने विगत के बारे में कुछ सोचने लगती है और फिर सोचते-सोचते उसे न जाने क्या महसूस होता है, उसकी आँखों में आंसू भर आते हैं।

वह सोचती है—वे दिन कितने अच्छे थे, जब वह अट्ठाइस नम्बर की ब्रा पहनती थी और अब जब मन के किसी कोने में छिपे एक फ्रेज को पूरा करने के लिये, वह छत्तीस नम्बर की ब्रा पहनने के योग्य हुई है, तो हालत यह है कि कोई भी लड़का उससे शादी करना नहीं चाहता।

फिर न जाने क्या सोचकर, वह आँखों के आंसू पोंछ, गाउन के बेल्ट को तेजी से कसते हुए, होठों ही होठों में बुदबुदाती है—'डैम द ब्वायज, डैम द सोसायटी, डैम देम आल।'

तब उसे फिर अपने पेट में पलते हुए बच्चे का ख्याल आता है और फिर एकटक वह अपने पेट की तरफ देखती ही रह जाती है।

कमज़ोर नसों वाला घर



अस्पताल से ले आने के बाद भी, वह ठीक कहां रहने लगा था। घंटों बिस्तर पर पड़ा रहता। फिर कभी जब हवाएं और ठंडी हो जाती, या थोड़े बादल घिर आते तो घुटनों के दर्द की या 'कमर गई' 'कमर गई' की उसकी शिकायत और बढ़ जाती।

डॉक्टरों ने तो उसके घर वालो को मना की थी कि अभी उसे घर मत ले जाओ। अभी तो ठीक से उसका इलाज भी पूरा नहीं हुआ है।

लेकिन घर वाले ही जिद किये हुए थे कि नहीं, जब मरीज स्वयं ही कह रहा है कि अब मैं ठीक हूँ तो फिर जबरदस्ती काहे को उसे अन्य मरीजो के बीच सुलाकर, इस बात के लिये सोचने को मजबूर किया जाए कि वह अभी तक ठीक नहीं हुआ है या वह अभी तक बीमार है।

चाहते, तो डॉक्टर लोग उसे डिस्चार्ज सर्टिफिकेट न भी देते, लेकिन घर वालों और स्वयं मरीज की जिद के आगे उन्होंने भी सोच लिया कि जाने दो। अट्ठावन साल की उम्र का आदमी है। अब बाकी उम्र तो उसकी ऐसे ही गुजर जानी है। कुछ न कुछ तो लगा ही रहेगा।

लेकिन उन्होंने उसे फिट सर्टिफिकेट नही दिया। बोले, अभी तो कुछ दिन मरीज को घर पर आराम करने दो, उसके बाद ही शायद कही जाकर वह आफिस जाने लायक होगा।

इस पर घर वाले भी राजी हो गये थे।

असल मे, लग तो उन्हे भी रहा था कि बूढे को अभी तक चलने फिरने मे तकलीफ हो रही है। लेकिन वे लोग अस्पताल आते-आते थक गये थे। दिन मे दो-दो, चार-चार बार अस्पताल आते, और फिर अगर डॉक्टर ने कहीं कोई इन्जेक्शन या कोई दवाई या कोई गोलिया आदि लाने को कहा, तो शहर तक का एक चक्कर और हो जाता।

यहा तक हो तो भी ठीक। लेकिन कभी-कभी रात मे भी पास वाले कर्नल साहब के घर डाक्टर का टेलीफोन आ जाता कि उन लोगो से कहे कि मरीज बहुत नर्वस हो गया है और घर वालो को वहा बुलाने के लिये जिद कर रहा है। तब, बुढिया को खुद को ही यह अच्छा नहीं लगता कि देखो उसका आदमी कितना कमजोर दिल का है। अब सुख-दु.ख तो हर इन्सान के लगा ही रहता है। इसमे ऐसी घबराने की बात ही क्या है कि रात रात में घर वालो को अस्पताल बुलवाने की जिद की जाए।

घर वाले तब अस्पताल पहुच जाते। वहाँ जाकर देखते कि बूढा पलग पर बैठा बैठा बीडी के जल्दी-जल्दी कश ले रहा है, और सोये हुए अन्य मरीजो को ऐसे गौर से देख रहा है जैसे वे सब मर गये हो, या जैसे वह कही लाशो के बीच घिर गया हो।

वैसे बूढे को, बीडी पीने की आदत तो थी ही, लेकिन जब-जब भी वह बहुत घबराया हुआ होता या फिर जब उसका नर्वस-ब्रेक-डाउन हो जाता तब वह बीडी के जल्दी-जल्दी कश लेने लग जाता था। बुढिया इस को पहचान गई थी।

तब फिर होता बस इतना ही कि घर वालो को आया देख वह मुस्करा देता और बुढिया को, पास मे रखे लोहे के स्टूल पर बैठने के लिये कहता।

बुढिया जब पूछती, कि क्या बात है? वह बस इतना भर ही कहता, कि खिडकी के पास वाला पर्दा जब हिला था तो बाहर कॉरीडर की मध्यम रोशनी में उसने एक भयानक आकृति को देखा था। और वह बहुत डर गया था।

होने को इससे पहले भी एक दो बार ऐसा हुआ था। तब से और कुछ तो हुआ नहीं; लेकिन बुढ़िया को अब खुद ही उस कॉरीडर में से गुजरते हुए डर लगता कि यह तो अस्पताल है। कई मरीज मरते रहते हैं, कहीं किसी की रूह तो नहीं भटक रही है, जो कॉरीडरों में घूम-घूमकर मरीजों को डरा रही है।

अभी पिछले मंगलवार को ही ऐसा हुआ था। कर्नल साहब के घर फोन आने पर, घर वाले जब रात में अस्पताल पहुंचे और बूढ़े से पूछने लगे, कि क्या बात है? तो बूढ़ा बोला था, कि हवा से जैसे ही खिड़की का पर्दा हिला, तो मैंने देखा, काले भैंसे पर सवार, किसी नीग्रो जैसा काला-सा एक मोटा आदमी बाहर खड़ा था।

बुढ़िया ने देखा, कि यह बात कहते-कहते बूढ़े का चेहरा आतंक से न जाने कैसा-कैसा हो गया था।

असल में इस बार तो बुढ़िया भी डर गई थी कि कहीं कुछ ऐसा-वैसा तो नहीं होने वाला। लोग बताते है कि काल देवता इसी तरह भैंसे पर सवार होकर आते हैं।

ऐसा ही डर बूढ़े को भी लगा था और शायद इस कारण ही वह सोचने लगा था कि उसे अब घर जाना चाहिए। यहाँ अस्पताल में ही मर जाना उसे स्वीकार नहीं था।

और तभी से उसने यह रट लगा ली थी कि वह अब ठीक हो गया है और अपने घर जाना चाहता है।



तो अब घर आ जाने के बाद भी, वह घुटनों के दर्द और 'कमर गई' 'कमर गई' की शिकायत करता रहता है। बुढ़िया उसे ऐसा आश्वासन देती रहती है कि वह जल्दी ही ठीक हो जाएगा। बुढ़ापे में अगर कोई बीमारी-बीमारी लगती है तो कोई आसानी से तो पीछा छोड़ती नहीं।

कभी-कभी बुढ़िया को लगता कि अपनी बड़ी बेटी को लिख भेजे कि घूमने-घामने के बहाने, वह हम लोगों के यहाँ आ जाए और अपने बाप को कुछ ढाढ़स बंधवा जाए कि वे जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

बाकी, वैसे बूढ़े को अब यह डर लग गया था कि अब क्या बचना-बचाना है। अब तो बस चला-चली का खेल है। आशा सिर्फ एक रह गई थी

कि वह जीवित रहते रिटायर हो जाए और इस सुख का आनन्द भी ले ले कि रिटायर होने पर देखो, लोग कैसे बैंड बाजो के साथ घर तक छोडने आते हैं और एक बार मे हथेली पर कैसे पी० एफ० के हजारो रुपये आ जाते हैं। उस सुख की कल्पना भर से ही वह उल्लसित हो उठता।

रहने को, उसके रिटायर होने मे बाकी केवल चार ही महीने तो रह गये थे।



पहली बार जब उसने बीवी को आकर बताया था कि गजट में उसके रिटायरमेंट के सम्बन्ध मे तिथि आदि छप गई है, तब बीवी को इस बात से कोई खुशी नहीं हुई थी। उसे तो तब लगा था कि उनके रिटायर हो जाने के बाद घर की कमाई का जो एक ही रास्ता है, वह बद हो जाएगा। घर मे और कोई कमाने वाला तो है नही।

तब, उस दिन बुढिया का अपनी बडी लडकी की बहुत याद आई थी। वह लडकी क्या थी लडका था। मेट्रिक पास करने के तुरन्त बाद, उसने टीचरी कर ली थी, तब भी वह दो ढाई सौ कमाकर लाती थी। तनख्वाह इतनी नही थी। वेतन के नाम पर तो बडी वाली को कवल सवा सौ रुपये ही मिलते थे, लेकिन ट्यूशन, सिलाई और कसीदे आदि स वह वेतन जितनी कमाई और भी कर लाती थी।

जब बडी वाली की शादी हुई थी तो उसे ऐसा लगा था, जैसे एक कमाऊ पूत मा-बाप से अलग जाकर रहने लगा है।

आज भी बुढिया जब कही किसी के घर म जवान लडकी को देखती है तो उसे अपनी बडी वाली की याद हो आती है और वही बैठे-बैठे ही बडी वाली की प्रशसा मे वह लोगो से कुछ न कुछ कहती ही रहती है। कई बार तो उसकी याद आते ही बुढिया की आखो मे आसू तक आ जाते हैं।



एक दिन वह पति से बोली—'सुनो! ऐसा नही हो सकता कि आप सरकार से लिखा-पढी करें, अभी तो मैं काम करने लायक हू। मेरी नौकरी की, एक दो साल की अवधि और बढा दी जाय।'

खीजकर तब बूढ़ा बोला था—'अरी नहीं ! सरकारी दफ्तर है। कोई मेरे काका की खेती नहीं है। अट्ठावन तो अट्ठावन। उमसे एक दिन भी ज्यादा नौकरी करने नही देंगे।'

बुढ़िया बोली—'कमाल है। उम्र का हिसाब क्यों रखते है ? आदमी की सेहत के हिसाब से नौकरी में रखें। अब अपने लालाजी को देखो, कितने बूढ़े दिखते है, तो भी लखन की मां बता रही थी कि अभी तीन-चार साल और नौकर रहेगा।'

बूढ़ा बोला—'उसने तो अपनी उम्र झूठी लिखवाई है। साठ-पैंसठ करोड़ के देश में कौन फिक्र करता है कि किसने सही उम्र लिखवाई है और किसने गलत।'

'तो आप भी गलत लिखवा लो ना ! ……… ……जब सरकार के सामने झूठ-सच में कोई अन्तर ही नही है तो आप भी झूठ बोलकर फायदा क्यों नहीं उठाते।'

बूढ़ा चुप हो गया था। उसे लगा था कि बुढ़िया को यह बात समझाना कठिन है। उसकी इस बात का उत्तर देने के लिए उसे स्कूल की पहली कक्षा से लेकर रिटायर होने तक का पूरा इतिहास या पूरी प्रक्रिया समझानी होगी और इतना स्पष्टीकरण देने की शक्ति अब उसमे रही ही कहां थी।

तब फिर बूढ़े को लगा कि औरतें कितनी लालची होती हैं। पहले एक बार चुनावों के तुरन्त बाद जब ऐसी अफवाह उठी थी कि पचपन तक वालों को रिटायर कर रहे हैं, तब भी उसकी बीबी बिफर पड़ी थी कि हम लोगों ने इन्दिरा गांधी को वोट इसलिये थोडे ही दिया है कि हमारे ही पेट पर लात मारे। कम से कम कायदे के अनुसार अट्ठावन तक तो नौकरी करने दे। .... और अब, जब वह अट्ठावन पर आकर रिटायर होने को है, तो भी बुढ़िया को लग रहा है कि सरकार उसे अभी एक दो साल तो और नौकर रखे।

❋

अब जब अस्पताल से बूढ़े को घर ले आए हैं तो वह बैठा-बैठा व्यर्थ की बातें सोचने लगा है। वह देख रहा है कि उसका एक मात्र लौंडा यों ही इधर-उधर के धक्के खा रहा है। बड़े सपने संजोए थे उसने अपने लौंडे को

लेकर कि इसे इतना पढवाऊँगा ऐसी ऐसी नौकरी की कोशिश करूँगा। कोई अच्छी सी नौकरी नहीं मिली तो विदेश ही भिजवा दूँगा।

लेकिन बूढे को अब लग रहा है कि सब धरा का धरा रह गया है। लौंडा हर क्लास में एक दो साल फेल होता रहा है।

कही वह आवारा छोकरो के साथ न घूमे, यह सोचकर उसने अपने कई खर्चों मे कटौती करके लौंड को हास्टिल मे रखवा दिया कि वहा आदमी बन जाएगा। लेकिन लौंड ने वहा भी एक लडके का पाकेट ट्रांजिस्टर चुरा लिया। बात छुपी न रह सकी। फादर ने उसे स्कूल से ही निकाल दिया। तब से लौंडा आवारा छोकरो के साथ घूमता रहता है। सिगरेट और चरस पीता है। रात मे देर देर से घर लौटता है फिर जब देखता है कि घर के सब लोग सो रहे हैं तब कोई न कोई 'ब्लू बुक' पढने लगता है।

वसे तो बूढे को इस बात का पता नही था लेकिन एक रात पढते-पढते लौंडा कही टट्टी-वट्टी गया तो बाप ने उठकर किताब देख ली कि देखें लौंडा कैसी किताबे पढ रहा है। मार नगी ही नगी तस्वीरें थी उस किताब मे। बूढे को शर्म आ गई थी।

बस, तभी से बूढे ने यह आशा छोड दी है कि लडका उसके जीते जी उसके किसी काम आ सकता है।

और यही आकर बूढा व्यर्थ की बातें सोचने लगता है कि कितना अच्छा होता अगर पहले पहल उसके घर मे लडकी की बजाय किसी सपूत ने जनम लिया होता। तब वह सुख चैन की मौत मर सकता था, कि चलो घर पर कोई तो कमाने वाला छोड जा रहा हूँ। बाकी यह लौंडा क्या निहाल करेगा।

अब ले देकर उसकी अगर आशा बची हुई है तो दूसरी लडकी मे जिसने इस वर्ष बी एस सी कर लिया है और आगे अपने भविष्य के चक्कर म सोच रही है कि अब किस विषय मे उसे अपनी पढाई आगे बढानी चाहिए।

꙰

इससे पहले तो बूढे या बुढिया, दोनो में से किसी ने भी यह नही सोचा था कि छोटी वाली को कही नौकरी-वौकरी करने के लिए कहा जाये।

'लेकिन अब, जबकि बूढ़े का रिटायरमेंट नजदीक आ गया है, तब बुढ़िया को यह बात समझ में आ गई है कि छोटी वाली को नौकरी ही करवाई जाए, ताकि आय की अगर एक राह बंद हो जाये, तो दूसरी खुल जाए।

वैसे, छोटी वाली को नौकरी करवाने की बात अचानक ही बुढ़िया के मन में नहीं आई थी। हुआ ऐसा था कि पिछले वाली कालोनी के काका मंगतूराम की, रिटायर होने से कुछ दिन पहले ही, मृत्यु हो गई थी। घर मे कोई और कमाने लायक नहीं था, तो सरकार ने बाप की जगह बेटी को नौकरी में रख लिया था।

कीर्तन में गई थी, तब बुढिया यह बात सुन आई थी। घर आकर उसने अपने पति से पूछा कि क्या ऐसा नही हो सकता कि आपके रिटायर होते ही, छोटी वाली को आपकी जगह नौकरी मे रख लें? पहले राजा महाराजाओं के जमाने में क्या ऐसा नही था? और फिर अंग्रेजों के जमाने मे भी तो ऐसा ही हुआ करता था। आपको ही देख लो। आपको भी तो तब ससुरजी वाली जगह पर नौकर रखा गया था। तो फिर आपकी जगह छोटी वाली को क्यों नही नौकर रखेंगे।

बूढे ने कहा—'क्या पता?·········मैंने ऐसा कभी पूछा नही है।'

'तो पूछकर देखो ना।'—और तब ही बुढ़िया ने उसे बता दिया कि देखो, काका मंगतूराम की जगह पर सरकार ने कैसे उसकी लडकी को नौकर रख लिया है।

बीबी के कहने मे आकर, तब उसने सरकार से लिखा पढ़ी शुरू कर दी कि उसकी बडी लड़की जो पहले मास्टरनी थी, अब शादी कर दी गई है। लड़का दिमाग का कमजोर होने के कारण, अभी तक मैट्रिक पास नहीं कर पाया है। उसके परिवार मे ले देकर, कमाने लायक अब केवल बी. एस. सी. पास एक लड़की रह गई है। क्या ऐसा नही हो सकता कि उसके रिटायर होते ही, उसके स्थान पर उसकी लड़की को नौकरी मे रखा जाए?

जवाब में उसके बड़े साहब ने केवल इतना भर ही लिखा कि नौकरी में रहते किसी की मृत्यु हो जाने पर सरकार उसके परिवार में से किसी को

अगर योग्य पाए तो नौकरी मे रख सकती है। बाकी [illegible] के बाद उसके किसी लडके या लडकी को नौकरी मे रखने [illegible] प्रोविजन नही है।

उसे सरकार की यह बात गलत लगी थी कि [illegible] या मर जाए, क्या फर्क पडता है। एक घर की [illegible]। ऐसी हालत में, अगर सरकार ने दोनो पहलुओं [illegible] फार्म की होती तो उसमे क्या गलत हो जाता।

घर आकर उसने बुढिया को साहब के [illegible] कि मेरे जीते जी तो छोटी वाली का मर्द [illegible] हो जाऊ तो भी।

बुढिया तभी से सोच में पड [illegible], [illegible] पति के बुढापे के साथ, इस घर के [illegible] रहा था।

लडका अगर बुरी दोस्ती [illegible] भी आशा की कोई किरण दिखाई [illegible]।

❖

चकरा गया था, और कैसे अब उसके घुटनों और कमर में बहुत दर्द हो रहा है।

बस, तभी से उसे घुटनों के दर्द और कमर की पीड़ा की शिकायत हो गई थी।

बुढ़िया अपने पति की देखभाल तो करती, लेकिन उसे अपने आपको खुद को ही लगने लगा था कि न जाने क्यों बूढ़े की बीमारी या उसके ठीक हो जाने से जैसे उसका मोह ही नही रहा था।

घर भी वह बूढ़े को तब लिवा लाई, जब घर के लोग अस्पताल के चक्कर काटते-काटते थक गये थे और इधर बूढ़े को भी खराब-खराब से दृश्य दीखने लगे थे कि अस्पताल में खिड़कियों के पर्दे हिलते हैं तो उसे कोई काली सी आकृतियां दिखाई देती हैं।

तभी एक दिन, घर पर बैठे-बैठे ही, न जाने क्या सोचकर बुढ़िया ने पूछ ही लिया था—'वो······ वो एक बार आप बता रहे थे कि आपको एक काला भैंसा दिखाई दिया था। और उस पर नीग्रो जैसा एक काला सवार भी दीखा था। कैसा था उसका हुलिया—यानी वह कैसा लग रहा था?'

बूढ़ा बोला था—'उसकी लाल-लाल सी आँखें थी। सिर पर टोप था। हाथ में एक मोटा रस्सा था।·······और ·······और वो मेरी तरफ घूर-घूर कर देख रहा था।'

'फिर?' बुढ़िया बोली।

'फिर ·······। फिर उसने मुझे उंगली से इशारा किया।' बूढ़े का आतंकित चेहरा जैसे सिकुड़ सा गया।

'तो?'

'तो क्या·······मैं नही गया। मैं बोला, नहीं आऊंगा।'

बुढ़िया आगे नहीं बोली। थोड़ी देर बाद, उसे खुद ही लगा कि उसने बड़ा ही बेहूदा और बेतुका सा सवाल पति से पूछा था। लेकिन वह खुद ही

उस गुत्थी को नहीं सुलझा पा रही थी कि इसने ऐसा सवाल क्यों कर पूछ लिया था।

इस बीच, करीब महीना भर घर रहने के बाद, एक दिन वह डाक्टर के पास गया था कि वह उसे अब 'फिट' सर्टिफिकेट दे दे। लेकिन डाक्टर ने उसे कहा था कि घुटनों और कमर का उसका दर्द कम हो गया। लेकिन उसके ब्लड-प्रेशर से वह अभी तक सन्तुष्ट नहीं है। तभी एक दो हफ्ते और आराम करना होगा।

वह घर लौट आया था। ब्लड-प्रेशर के बावजूद भी अब वह अपने आपको कुछ-कुछ स्वस्थ महसूस करने लगा था।



तभी एक दिन अचानक उसकी तबियत फिर बिगड गई हुआ ऐसा था कि बत्ती जलने के बाद उसने कोई ठण्डी सी चीज पी ली थी, जिसके कारण वह ठण्ड खा गया था और रात भर बुखार मे बहकता रहा।

घर वालो ने उसे थोडी ब्रान्डी-ब्रान्डी पिला दी। एक दो घंटे तो उसे आराम आ गया। लेकिन सुबह उठते ही उसको जोर की खांसी उठी।

लगातार, वह काफी देर तक खासता रहा। और फिर खासते-खासते उसे पीली सी एक उल्टी आई। उल्टी आने पर उसकी खासी तो रुक गई, लेकिन उसके तुरन्त बाद बूढे ने अपनी आँखें फेर ली। उसके ऐसा करते ही घर वाले घबरा गये।

जल्दी स कर्नल साहब क यहा से, डॉक्टर को फोन पर बुलाया गया। डॉक्टर आया तो मरीज की हालत देखकर उसका भी चेहरा उतर गया। केस बहुत सीरियस था। डॉक्टर ने ऐसा ही कहा। वह मरीज क पास बैठ गया। कुछेक दवाए और इजेक्शन लिखकर उसने उनको सूची बुढिया के हाथ में थमा दी कि ये जल्दी से बिना किसी देर के मगवाई जाए।

बुढिया ने तब इधर-उधर देखा कि उसका लडका कहा है, जिसे भेजकर वह दवाए मगवा ले। लेकिन छोटी वाली ने बताया कि वह तो अभी किसी लौंडे के साथ बाहर निकल गया है। बुढिया को गुस्सा आया कि यह भी कैसी औलाद है। इधर बाप को तो कुछ ऐसा वैसा हो रहा है और बेटे को देखो तो उसे आवारागर्दी से फुर्सत नहीं है।

तभी फिर पास वाले कर्नल साहब के लड़के को जल्दी से स्कूटर पर दवाइयां आदि लाने के लिये शहर की तरफ भगाया गया।

दवाइयां अभी आई ही नहीं थीं कि बूढ़े ने फिर छटपटाना शुरू कर दिया। उसके हाथ पैर ठंडे होने लगे। शरीर ऐंठने लगा। कंपकंपी सी उठने लगी। डॉक्टर खुद परेशान हो गया। वह बार-बार दरवाजे की तरफ देखने लगा कि कब कर्नल का लड़का दवाइयां आदि ले आए और कब वह मरीज को इंजेक्शन लगाकर उसकी कंपकंपी शांत करवाए।

डॉक्टर ने एक दो बार आशा-निराशा के बीच की दृष्टि से बुढ़िया की तरफ देखा।

लेकिन बुढ़िया चुपचाप खड़ी अपने पति की छटपटाहट और कंपकंपी देख रही थी। उसे कुछ सूझ ही नहीं रहा था कि वह रोए या ऐसे ही चुपचाप खड़ी, जो कुछ हो रहा है, उसे होता देखती रहे।

तभी दूसरे क्षण बिजली के हल्के करेन्ट सा एक विचार उसके मस्तिष्क को छू गया।

उसे लगा, कहीं छोटी वाली की नौकरी का रास्ता तो नहीं खुल रहा है।

एक हल्की सी मुस्कान बुढ़िया के होठों पर आई और फिसल गई।

तभी डाक्टर को भी शायद यह अजीब सा लगा, जब उसने देखा कि बुढ़िया के होठों पर कुछ देर पहले कोई एक मुस्कान उभर आई थी।

कर्नल का लड़का अभी तक नहीं लौटा था। और इधर बूढ़े की छटपटाहट बढ़ती जा रही थी।

उसका डर



वह सच में ही डर गया था।

उसे यह कहाँ पता था कि जीप वाला नगर का कोई बहुत बड़ा दादा था। और उसका भला दोष भी क्या था। एक तो वह दादा राग साइड जीप चला रहा था, दूसरे खुद ही अकड़कर बोला था, 'अबे ओए'' अन्धा है ?'''' दीखता नहीं ? '''''''स्साले की चार आँखें हैं, फिर भी मादर'' '''' जैसे सूरदास होकर चल रहा है।'

उसे यह बहुत बुरा लगा था। आखिर उसे भी अपनी इज्जत प्यारी थी। और फिर ऐसा कोई थर्ड क्लास आदमी जो कि शायद इस जीप का ड्राईवर होगा—उसे ऐसे ही बिना किसी दोष के चार दोस्तों के सामने, गाली दे जाए। वह उससे सहन न हो सका था। उसने अपने चार साथियों की तरफ देखकर कहा—'देखो स्साले मूर्ख को !'''''' एक तो गलती पर है'''''' दूसरे गालियाँ बक रहा है।'—फिर जीप वाले उस व्यक्ति को बोला—'मिस्टर जुबान सम्हालकर बात करो'''''' तुम शायद मुझे जानते नहीं हो''''''''अभी दो मिनट में ठीक करवा दूँगा'''''' पुलिस चौकी कोई दूर नहीं है'''''।'—उसे

लगा था कि उसकी बात सुन कर उसके मित्रों में से एक ने चुप रहने के लिये उंगली से कोई इशारा किया था। लेकिन तब वह उस इशारे को समझ नहीं पाया था।

उसका बस इतना कहना था कि वह आदमी जीप से उतर आया। तब उसे लगा कि जीप में बैठा हुआ वह कोई ज्यादा लम्बा नहीं लग रहा था, लेकिन है असल में वह काफी लम्बा चौड़ा ......।

जीप से निकलकर ही उस व्यक्ति ने, उसको गले से पकड़ लिया—'किस को धौंस दे रहा है रे, मच्छर की औलाद !.... ...चल तेरे बाप के पास ...... कौन तेरी अम्माँ का यार थानेदार है......हम भी तो देखें ......!'—ऐसा कहकर उसने जेब से चाकू निकाल लिया।

चाकू देखते ही उसके होश उड़ गये। वह घबरा गया। वह व्यक्ति चाकू खोले ही खोले, उससे पहले उसके दोस्तों में से एक आगे बढ़ आया—'दादा !.... दादा ! यह क्या अनर्थ कर रहे हो ?... बेचारा अनजान है, दादा !...... आपको नही जानता !'—उसके उस मित्र ने आजजी से दादा का हाथ पकड़ लिया। हाथ छुड़ाता हुआ दादा बोला—'छोड़ बे !......स्साला पुलिस चौकी की धौंस देता है.... ...कौन तेरा बहनोई बैठा है उधर......जरा हम भी तो देखें !'—दादा ने चाकू को अपने हाथों मे और मजबूती से पकड़ लिया।

उसका मित्र फिर बोला—'मालिक !......यह हमारा दोस्त है...... इसे माफ कर दो......!' उस मित्र ने फिर अपने साथी से कहा—'देख क्या रहा है ?....हाथ जोड़ ले....जोड़.... !'

बड़ी ही असमंजस की स्थिति मे उसने दादा को हाथ जोड़ लिये।

उसका मित्र फिर बोला—'माफी मांग ले दादा से....कि आइंदा ऐसा नही करेगा....!'

मंत्र-मुग्ध सा वह बोला—'द....द....दादा ! माफ करदो....आईंदा नही कहूँगा.... !'

दादा ने एक क्रूर ठहाका मारा।

डर के मारे उसकी नसों का खून जैसे एक जगह ठहर गया था।

दादा ने चाकू वापिस जेब मे रख लिया। जीप में बैठते-बैठते दादा फिर बोला—'चल.... ! अभी तो मैं एक जरूरी काम से जा रहा हूँ, इसलिये तुझे छोड़ देता हूं....लेकिन तुझे देख लूँगा, बच्चू !'

उससे कुछ कहते न बन रहा था। वह आगे कुछ कहे ही कहे, उससे पहले गडडड करती जीप वहा से चली गई।

कुछ देर को पाचो मित्र एक दूसरे का चेहरा देखते रहे।

फिर डरे-डरे से स्वर मे उसने अपने मित्र से पूछा—'कौन था ?'

उसका एक मित्र बोला—'तू भी अजीब आदमी है, यार ! मैं उगली से इतने इशारे कर रहा था, कि ऐसा मत बोल रे !" लेकिन तू तो उसे पुलिस चौकी की धौंस देने लग गया। अबे, ये लोग कोई पुलिस-वुलिस से डरते हैं क्या'''' ?हफता पहुँचाते हैं।'

'लेकिन''''लेकिन यह था कौन ?'

'तू भी नड़ा वो है, यार ! नगर के माने हुए दादा को नही पहचानता ?'

प्रश्न भरी निगाहो से वह सभी मित्रो की तरफ देखने लगा।

तब दूसरा मित्र बोला—'अरे, यही तो जगत दादा था''''''नाम नही सुना है जगत दादा का ?'

'हाँ '''हाँ''''सुना है !'—सहमा-सहमा सा वह बोला।

तीसरा मित्र बोला—'तू भी यार सोच-समझ कर कर तो अडता !'

'मुझे क्या पता था'''' !'—उसे लगा जैसे उसकी आवाज बदल गई थी।

तब फिर पहला मित्र बोला—'मालिक के लाख-लाख शुक्र हैं कि तू बच गया'''' । नई जिन्दगी मिली है समझ ले ! ''' नही तो तुझे पता है कि दादा का चाकू जब खुल जाए, तो बिना खून पिए बन्द हो ही नही सकता !'

'क्यो ?'—उसने पूछा।

वही मित्र बोला—'अरे, दादा लोग के उसूल अपने उसूलो से भी कठोर होते हैं'''''' जो सही माइने मे दादा होते हैं, वो पहले तो चाकू खोलते नही '' ''' और अगर खोल लिया, तो समझ लो खून तो पीएगा ही'''' !'

'अच्छा ?'

' '' हाँ ! और अगर समझ लो कि दादा को किसी पर दया आ गई, या किसी और कारण उसने अपना खुला हुआ चाकू सामने वाले पर नहीं चलाया, तो अपने शरीर का थोडा खून निकालकर चाकू की नोक को पिला देगा''''दादा लोग चाकू को देवी की तरह पूजते हैं''''हाँ !'

उसे लगा कि ऐसी कोई ज्यादा गर्मी थी भी नहीं, लेकिन वह पसीने-पसीने हो गया था।

दूसरा मित्र बोला—'तुम्हें पता है कि दादाओं में भी एक और प्रकार के दादा होते हैं—रंग लिए हुए दादा!....जिनका एक बार नगर पर रौब हो जाता है, वे फिर झगड़ा-वगड़ा करना छोड़ देते हैं....घर बैठे ही आराम से उन्हें रोटी-रोजी मिल जाती है।....जुआरी लोग,...टुच्चे-मुच्चे दादा लोग घर बैठे ही उन्हें खर्चा पहुँचा जाते हैं....अपना जगत दादा भी रंग लिए हुए है....अपने जमाने में तहलका मचा दिया था।....खून पर खून....खून पर खून....अरे, एक बार तो एक आदमी को ऊपर उठा कर जो नीचे पटका.... तो आदमी खत्म।'

'अच्छा!'

'...और नहीं तो!....लोग तो फिर कई बातें करने लगे...कोई कहता—दादा के आतंक से मर गया....कोई कहता—हार्ट-फेल हो गया....!'

तब फिर चौथा मित्र बोला—'क्या बिगड़ता?........कौन साक्षी बनता?........अरे अपने जगत दादा कुछ भी पढ़े-लिखे नहीं हैं, फिर भी अपना केस खुद लड़ते हैं......कोई वकील वगैरह नहीं करते........कई खून किये......एकाध में कभी जेल हुई तो हुई, वरना छूट जाते।'

उसे अचरज होने लगा कि उसके साथी दादा के सम्बन्ध में कैसी-कैसी बातें कर रहे हैं। और फिर बोल ऐसे रहे हैं, जैसे वह उनका ही कुछ लगता हो।

तब फिर उसे अपनी सूझी। उसे लगा, जीवन कितना असुरक्षित होता जा रहा है! समझ लो, अभी वह मुझ पर चाकू चला भी देता, तो कोई शहादत को नहीं आता। सब कहते—अरे, नहीं बाबा! मरना है क्या!

वह सोचता रहा, और उसके मित्रों ने भी फिर बातों का विषय बदल दिया था। फिर वे चुपचाप चलने लगे और ऐसे काफी देर तक पांचों में से कोई कुछ नहीं बोला।

उससे अब ठीक से चला भी नहीं जा रहा था। चश्मा साफ था, लेकिन फिर शायद नर्वस हो जाने के कारण, अनजाने में ही उसने चश्मा दो-चार बार रूमाल से साफ किया। फिर उसके मुँह से अनायास ही निकल गया—'फिर?'

उसके चारों मित्रों ने अचरज से उसकी तरफ देखा।

एक बोला—'क्या ?'

वह बोला—'फिर क्या होगा ?'

दूसरा मित्र बोला—'किस बात के लिये पूछ रहे हो ?'

'वो अब कुछ करेगा तो नही ?'

तब चौथा मित्र बोला—'अब तो भूल जाओ·········तुम अब नये जनम की बात करो········ ।'

वह बोला—'नही !·········मैं········ मैं इसलिये पूछ रहा हूँ कि········ देखो, वो जाते-जाते कह गया था ना कि मैं तुम्हें देख लूँगा········ ।'

तीसरे को जैसे अब याद आया—'हाँ, यार ! कह तो गया था। वैसे भी इन लोगों का क्या भरोसा ! मन के मालिक होते हैं·········मन मे आए तो अपने बड़े से बड़े दुश्मन को माफ कर दें········ वरना एक अनजान आदमी पर चाकू चला दें।'

पहले मित्र ने पूछा—'वैसे वो गया किस तरफ था ?'

'तिलक रोड की तरफ।'

पहला मित्र अब जैसे कुछ सोचने लगा—फिर बोला, 'उधर तो यार, कोई अड्डा-बड्डा नही है········कहाँ गया होगा ?'

'क्या पता ?' आवाज जैसे उसके मुँह से निकल ही नही रही थी। उसे लगने लगा कि हो सकता है कि वह सच में ही किसी जरूरी काम से जा रहा हो और लौट कर फिर उससे निबटने की कोशिश करे। हम सब लोग तो पैदल चल रहे हैं। उसका क्या है—जीप है, हो सकता है अभी लौट कर आ जाए।

उसे लगा जैसे पूरा रास्ता मोटरो, ट्रको और जीपो से भरा हुआ है।·········· जैसे कुछ देर बाद एक जीप घडघडाती हुई आएगी और उसे कुचल कर आगे निकल जाएगी।

इसलिए वह रास्ते के बिलकुल कोने-कोने होकर चलने लगा। ऐसे कोने-कोने होकर चलने के पीछे उसका इरादा यह भी था कि हो सकता है वह दादा फिर लौटे और रास्ते से गुजरते हुए मैं उसे दीख जाऊँ। वह जीप रोक ले··········चाकू निकाल ले··········पेट में घुसेड दे··········हां ! इन लोगो का क्या भरोसा।

अब आगे चलना उसके लिए सम्भव नहीं हो रहा था। इसलिए उसने अपने मित्रों से स्पष्ट कह दिया—'देखो, मुझे डर लग रहा है.......... क्या भरोसा वह वापिस आ जाए.......वह कह तो गया है कि देख लूँगा।... मेरा ख्याल है, मुझे घर चलना चाहिए...........और........ और............मेरी तबीयत भी ठीक नहीं है।' उसे सच में ही लग रहा था कि उसे हरारत सी होने लगी है।

तब पहला मित्र बोला—'हाँ, हाँ, तुम जाओ, यार! इन लोगों का सच में ही क्या भरोसा।........वैसे मुझे कभी-कभी मिल जाता है......तुम्हारी तरफ से मैं उससे माफी मांग लूँगा।'

उसे जैसे कोई सहारा सा मिल गया—'हाँ यार!... ....इतना जरूर करना। तुम उसे कह देना—कि वो तो शरीफ आदमी है........गलती किसी की भी थी........लेकिन उसने माफी मांगी है........हाँ। कह देना जरूर।'

'हाँ, हाँ, कह दूँगा। तुम जाओ।'

बड़ा रास्ता छोड़कर वह गली में चला गया। वैसे अगर वह मेन रोड से जाता तो घर जल्दी पहुंचता। लेकिन उसने सोचा—भले ही घर पहुँचने में देर हो जाए, वह तंग गलियों से होता हुआ ही घर जाएगा। सिर्फ इसलिये कि तंग गलियों से जीप गुजर नहीं सकती और दादा उसे देख नहीं सकता।

घर आकर उसने देखा, सब बच्चे शायद सो गये थे। बीबी ईजी चेयर पर बैठी कोई किताब पढ रही थी। उसने बीबी की तरफ देखा। बीबी मुस्कराई। वह भी फीका मुस्करा दिया। बीबी बोली—'खाना लाऊँ?'

'हाँ, ले आओ'।—उसने अन्यमनस्क सा उत्तर दिया।

खाना खाते हुए उसे लगा, जैसे एक-एक कोर उसे पानी के साथ निगलना पड़ रहा था। रह-रह कर अपने सोये हुए बच्चों की तरफ देखता। उसे लगा—बच्चे कितने मासूम होते हैं।........फिर उसने सोचा, इन्सान जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे क्रूरता के कुछ अंश उसकी नसों में धीरे-धीरे फैलने लगते हैं।

कितना क्रूर था वह दादा!........बड़ी-बड़ी आँखें........फैला हुआ चौड़ा सीना........! लोहे सी बाँहें!........शेर की गर्दन!—वह एक बार फिर काँप गया।

खाना खा लेने के बाद उसे लगा कि वह सब खाना खा तो गया लेकिन उसे यह पता ही नही चला कि सब्जी का स्वाद कैसा था। रोटिया ठडी तो नही हो गई थी।

वह तो बस, यही सोच रहा था कि अगर उस दादा ने चाकू मार दिया होता, तो अनर्थ हो गया होता ''मैं मर गया होता या जख्मी हो गया होता, मित्र मुझे अस्पताल ले गये होते, मेरे बच जाने का पूरा प्रयास करते-लेकिन क्या मैं बच पाता ?''''एक तो चाकू का घाव, दूसरा फिर आतंक--मैं तो शायद आतंक के मारे चाकू के शरीर मे घुसते ही मर गया होता।

फिर ?

फिर बीबी विधवा हो गई होती''''''बच्चे अनाथ हो गये होते''''''कौन सहारा देता उन्हे ? ''''करने को लोग तो कहते हैं कि किसी के मर जाने से क्या होता है, मालिक किसी को छोडता नही है।'''''''' ठीक है, लेकिन फिलहाल एक परिवार के सुख तो छिन जाते हैं। '''' '' सुख वैसे ही कौन से कोई अधिक हैं। '''''' लेकिन इस परिवार के तो ये भी छिन जाते। वह सोचता ही रहा।

बीच मे एक बार बीबी आई, जूठे बर्तन उठाकर फिर चौके मे चली गई। वह सोचने लगा—कल मे कुछ दिनो तक यह बुशर्ट पहन कर नही जाऊंगा। हो सकता है कि दादा चेहरे से उसे न पहचान पाए, लेकिन इस बुशर्ट की जेब पर कढा हुआ फूल है, उससे उसकी पहचान और आसान हो सकती है। क्योंकि चाकू हाथ मे लिये हुए, दादा की दृष्टि एक दो बार उसके बुशर्ट की जेब पर जो फूल कढे पर उठ गई थी।''''''''और चश्मा ?'''''''' हाँ, चश्मा भी वही पुराना पहन लूंगा, जिसे आजकल कभी मैं पहनता नही। वैसे चश्मा बदलने से चेहरे मे कोई फर्क नही आ जाएगा। लेकिन यह वह महज इसलिये करेगा कि समझलो, दादा कभी रास्ते मे मिल जाए। और उसे पहचान लेने के बाद, चाकू न निकालकर, अगर मुँह पर दो चार घूँसे की जड़ दे, तो चश्मा तो टूट सकता है। नया चश्मा टूट जाने से पूरे बत्तीस रुपये का नुकसान हो जाएगा। जबकि पुराने की उसे कोई चिन्ता नही है। वह तो उसने वैसे भी रिजेक्ट करके रखा हुआ है।

फिर उसने सोचा—कपड़े भी इन दिनो ऐसे-वैसे पहनकर चलूँगा। हो सकता है, वह गले से पकड ले, खीचातानी हो, '''''' और उसे खीचातानी के दौरान उसकी कमीज फट जाए। फिर''''''!

उसके बाद उसने बहुत कोशिश की कि इस बात को वह मन से निकाल दे। ऐसा करने के लिए उसने बीबी की अध-पढ़ी किताब उठा ली। उसने पढ़ना शुरू किया। दो चार पृष्ठ पढ़ने से उसे लगा कि कोई रोमांटिक पुस्तक थी। पढ़ते पढ़ते बीस-पच्चीस पृष्ठ पढ़ गया। लेकिन तब फिर उसे लगा कि उसकी तो बस आँखें ही पढ़ रही थीं!......काफी कोशिश के बावजूद भी वह समझ न पाया कि पहले के दो-चार पृष्ठ पढ़ने के बाद वह क्या पढ़ गया। उसे अपनी हरारत बढ़ गई सी लगने लगी। शरीर उसका तप गया था।

किताब वापिस टेबुल पर रखकर वह लेट गया। लेटने से पहले उसने बत्ती बुझा दी। शायद हरारत के असर से उसे लगने लगा, जैसे कमरे की छत उड़ गई है, दीवारें ढह गई हैं, और वह अकेला किसी सहारे की खोज में भटक रहा है.......बाँहें फैला फैला कर चिल्ला रहा है।

तब उसने देखा, बीबी—शायद बर्तन वगैरह माजकर कमरे मे आ गई थी और नेपकीन से हाथ पोंछ रही थी। तभी एक बच्चा नीद मे ही रो पड़ा। बीबी ने बत्ती जला दी और जाकर बच्चे को गोद में उठा लिया। उसे गोद में उठा लेने से बीबी को लगा कि बच्चे ने पेशाब कर दी थी।

अपने आप ही बड़बड़ाती हुई बीबी बोली, 'देर में देर हो रही है.... अब छोटे ने पेशाब कर दिया है....'--कुछ रुक कर वह फिर बोली, 'मैं समझ गई हूं कि आपने बत्ती क्यों बुझा दी है.......लेकिन मैं भी क्या करूँ?....... पहले आपके इन बाल-गोपालों से तो निबट लूँ।'

—क्या?.......बत्ती.......?—आखें बन्द किये ही वह सोचने लगा।

—अरे हाँ!

अब उसकी समझ मे आई कि बीबी क्या कह रही थी।.......लेकिन नहीं! आज नही।

आज वह कुछ कर नही पाएगा—-उसने सोचा।

उसे लगा उसके शरीर मे कही कोई गुदगुदी नहीं थी। सिर्फ उसे लग रहा था कि उसके कान कुछ गरम हो गये थे।

बीबी ने तब तक बच्चे का अन्डरवेयर बदल लिया था और वह शायद हाथ धोने बाहर चली गई थी। जब वह वापिस आई तो भी उसने उसकी

तरफ देखा नही, आखें मूंदे ही ऐसा अभिनय करने लगा जैसे उसे सो गये हुए काफी देर हो गई थी। बीबी ने पास आकर एक-दो बार धीरे से उसे आवाज लगाई। लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। उसे जैसे बहुत गहरी नीद थी।

बीबी भी चुपचाप जाकर छोटे बच्चे के साथ दूसरी खटिया पर सो गई।

उसे भी फिर न जाने कब नीद आ गई।

सुबह उठकर वह आफिस जाने के लिये तैयार होने लगा। उसे आश्चर्य हुआ कि न तो बीबी ने यही पूछा कि—ऐसे बिगडे हुए कालर वाली शर्ट क्यो पहने जा रहे हैं ?······ और न ही उसका ध्यान चश्मे पर गया।

आफिस जाते हुए उसने सोचा—दादा मिल सकता है रास्ते मे।······ आफिस तो मेन-रोड से ही जाना होगा। मिल गया तो थोडा साहस से काम लूंगा। कह दूंगा—देखो भाई ! मैं······ मैं बहुत शरीफ आदमी हूँ······ कभी किसी से झगडा करता ही नही।······ देखो, कल आपने चाकू दिखाया, तो भी मैंने तो हाथ जोड लिये थे।······ सच ! हमने तो आज तक किसी से झगडा नही किया। अब भी अगर आपको लगता हो कि मेरा दोष है, तो मुझे दस गालियाँ और दे दो ··· ·· सच कहता हू, मैं बुरा नही मानूंगा ·· ····।

··· ··· आफिस पहुचते ही वह सीधा अपने मित्र के पास गया—'वह मिला क्या ?'

'कौन ?'

'वही दादा !'

'नही ! ·· ··· दिखा ही नहीं ·· ··· हाँ, रात को तिलक रोड से वापिस आते हुए देखा था ··· ·· लेकिन तब जीप तेजी से हमारे पास से गुजर गई थी ··· ···उस समय तो कैसे बुलाता उसे !'

उसे लगा कि दादा शायद उसी के लिये ही लौटा था। लेकिन जब देखा होगा कि उन चारो मित्रो में मैं नही था, तो वह जीप तेज करके निकल गया होगा।

'वैसे तुम बेफिक्र रहो। अकसर मिल जाता है मुझे।·······मैं कह दूंगा।' उसका मित्र बोला।

'कहाँ मिल जाता है तुम्हे ?',

'अधिकतर तो पंजाब आटोमोबाईल्स पर दीख जाता है ·······वैसे मैं कह दूँगा, यार !'

·······तो ठीक है—उसने सोचा--शाम को पंजाब आटोमोबाईल्स वालों के पास मैं खुद ही देख लूँगा उसे । माफी ही तो मांगनी है·······। दो-चार आदमी देख लेंगे—तो देख लें । उन्हें क्या पता कि हरेक का अपना-अपना दुःख होता है । उन्हें क्या पता कि उसे कितना कष्ट हो रहा है, जब तक कि वह जान नही लेता कि दादा ने उसे माफ कर दिया है ।

वह वापिस अपनी सीट पर चला आया ।

शाम को वह पंजाब आटोमोबाईल्स पर चला गया । लेकिन दादा वहाँ नही था । तब साहस बाँधकर वह आगे बढ़ गया । वहाँ एक लडका सा मेकेनिक एक स्कूटर ठीक कर रहा था । बड़ी ही नम्रता से उसने पूछा—'सुनो ! जगत भाई साहब आए थे क्या ?'

'आज तो नही आए !' लड़के ने अचरज से उसकी तरफ देखा। फिर पूछा—'कुछ काम है ?'

'हाँ !'

'क्या ?'

'उनसे ही काम है ।'

'कुछ पैसे-वैसे पहुँचाने हैं ?'

'नही !' उसने सोचा--अच्छा ! तो लोग यहां आकर उसके पास पैसे पहुंचा जाते हैं ।

लड़के ने भी फिर उसकी तरफ कोई ज्यादा ध्यान नही दिया । वह अपने काम मे लग गया ।

वह काफी देर तक उस दुकान के सामने खड़ा रहा । लेकिन दादा नही आया । खड़े-खड़े वह कुछ न कुछ सोचने लगा । तब उसे अपने ऊपर ही आश्चर्य होने लगा । कितनी हीन-भावना और अदब से मैंने छोकरे से पूछा-'जगत भाई साहब आए थे क्या ?·······भाई साहब !'

उसे लगा—वह शायद गलत सम्बोधन कर बैठा था ।

·········दादा नहीं आया । और वह भी खड़ा-खडा थक गया था । वह फिर उस लड़के के करीब चला गया—'देखो, वैसे मेरा कोई खास काम तो था नही·······मैं कल आ जाऊँगा ।'

लडके ने फिर एक बार गौर से उसे देखा। और गर्दन हिलाकर पुनः काम मे जुट गया। उसे लगा कि लडके ने उसे शायद इसलिये गौर से देखा होगा कि दादा को वह उसका हुलिया आदि ठीक से बता सके।

वह वापिस चला आया।

दूसरे दिन आफिस जाते ही फिर उसने अपने मित्र से पूछा—'मिला क्या ?'

'नही, यार ! ... मैं कह दूँगा यार ! क्यो फिक्र करते हो .. .. ?'

उसे लगा उसका मित्र होठो ही होठो मुस्कराया था। सोच रहा होगा—कैसा कायर दोस्त है।—उसे अपने मित्र की मुस्कान मे कुछ व्यंग्य की मात्रा सी नजर आई।

उसने जैसे स्पष्टीकरण देते हुए कहा—'नही यार ! फिक्र जैसी कोई नही है...... लेकिन... ... छोटी सी एक गलतफहमी है ... दूर हो जानी चाहिये ना !'

'हो जाएगी, यार ! हो जाएगी !'—उसे लगा, उसके मित्र ने फिर भी बडी लापरवाही से उत्तर दिया था। मन ही मन जैसे उसने मित्र से कहा—बच्चू ! हमारी जगह होते तो पता चलता।.........और फिर तेरे तो स्साले बच्चे नही हैं। हम तो बाल-बच्चो वाले आदमी हैं, इसलिये थोडा ऐसे .. ..।

वह फिर वापिस आकर अपने काम मे लग गया।

.........ऐसे कुछ दिन बीत गये। कही उसके मित्र उसे कायर न समझ लें, इसलिए उसने भी मित्रों से इस सम्बन्ध मे बात करना छोड रखा था।

⁂

..... तभी एक दिन अचानक सुबह सुबह मार्केट से सब्जी लेते हुए दादा उसे दीख गया।

वह कांप गया।

दादा एक ठेले वाले से टमाटर खरीद रहा था।

आज तो माफी माग ही लूँगा --ये स्साला हमेशा का डर तो निकल जायगा मन से।

वह खुद भी टमाटर खरीदने के बहाने टमाटर वाले के ठेले पर चला गया।

दादा ने उसे देखा। दादा के देखने से उसके पूरे शरीर में सुरसुरी फैल गई।

फिर भी, चाहे काँपते स्वर में ही, साहस बांध कर वह बोला--'नमस्कार, भाई साहब !'

'नमस्कार !'—दादा ने बिना पहचाने ही उसे नमस्कार कर दिया और टमाटर थैली में डालकर वह वहाँ से आगे बढ गया।

बहुत सोच-समझकर, बड़ी ही नर्मी से वह बोला—'सुनिये……!' —आगे उससे कुछ कहा नही गया। और न दादा ने ही सहमी हुई आवाज में कहा हुआ वह 'सुनिये' शब्द सुना।

तब काफी देर तक फटी-फटी आंखो से वह दादा को जाते हुए देखता रहा।

—तो उसने मुझे नहीं पहचाना।

—क्या पता ?

—पहचान लेता, तो जरूर कुछ गालियाँ बकता या फिर शायद चाकू निकालता……।

—शायद ऐसा करता भी……।

ऐसे मन ही मन अपने आप से उसने खासा वार्त्तालाप कर लिया।

फिर उसे लगा कि दादा भूल गया होगा। वह तो शायद उसी ही दिन भूल गया होगा……मैं ही फालतू मे इतने दिनों तक इस को अपने मन में बिठाए हुए था।

फिर उसने मन ही मन सोचा—मैं इतना डरपोक क्यों हूँ ?………… इतना क्यों डर गया था मैं ?

तब जैसे किसी ने फुसफुसाकर उसके कान में कहा—तुम अपने लिये कहां डरे थे। बच्चो की सुरक्षा की भावना ने तुम्हें इतना आतंकित कर दिया था।

हा !—उसे लगा—यही सही बात है। मैं ·····मैं·····मैं भला कहा डर गया था।

फिर उसे उस स्थिति पर जैसे रहम आने लगा। एक बार फिर उसे लगा कि आज का इन्सान अपने आप को कितना अकेला, बेसहारा और असुरक्षित महसूस करने लगा है।

न जाने क्यो, उस दिन उसने ढेर सारी सब्जी खरीद डाली।

न मरने का दुःख

जब मां की तबियत अचानक बिगड़ गई तो भी उसने इस बात को इतनी गंभीरता से नहीं लिया। उसे तो बस लगा कि इस मौसम मे ऐसा होता ही है। कभी-कभी हरारत महसूस होने लगती है। फिर कभी तेज बुखार भी आ जाता है और बुखार में तो अक्सर गले में कड़ुवाहट और चुभन महसूस होती ही है--तो उसे लगा कि माँ के गले मे चुभन सा कुछ महसूस होना ऐसी कोई नई बात नहीं थी। लेकिन फिर भी मां की बात उसे रखनी ही थी।

ताँगे मे बिठाकर, वह माँ को अस्पताल ले गया। डाक्टर को उसने सक्षेप मे बता दिया कि मां को कई दिनो से गले में हल्का हल्का दर्द होता है। कभी कभी खाना खाने या पानी पीने में तकलीफ़ भी महसूस होती है। लेकिन आज सुबह से अचानक बुखार के साथ गले का दर्द कुछ और बढ़ गया है।

आरंभिक 'चेक अप' के बाद डाक्टर ने उसे कह दिया कि बेहतर यह होगा कि मां को वह अस्पताल मे भर्ती करवा जाए, क्योंकि उनकी थूक में हल्का-हल्का खून दिखाई दिया है। आवश्यक 'एक्सरे' आदि के बाद वे निर्णय पर पहुँच पायेंगे कि सच में क्या बीमारी है?

डाक्टरी का उसे कोई विशेष ज्ञान नहीं था। लेकिन निजी रूप से उसकी अपनी राय यही थी कि उसकी मां पिछले दस बारह साल से बीड़ी पीती रही है, हो सकता है उसी के कारण यह कुछ हो। वैसे भी इन दिनों उसे लगता रहा था कि मा रात-रात भर खासती रही थी। हो सकता है खांसते-खासते उसके फेफड़े कमजोर पड गये हों और इसी कारण थूक के साथ हल्का सा खून आता हो।...... वैसे यह उसकी अपनी राय थी। किसी डाक्टरी ज्ञान के आधार पर उसने ऐसा नहीं सोचा था।

डाक्टर की राय मानकर उसने मा को भर्ती करवा दिया। जाते जाते मा को आश्वासन देकर आया कि डरने या घबराने की कोई बात नहीं है। कोई ऐसी खास बीमारी भी नहीं है। वे लोग [illegible] लेना चाहते हैं। देखें। और वैसे, उसके कपड़े आदि [illegible] आ ही जाएगा। हाथ के हाथ अभी जाते हुए [illegible] जाएगा ताकि समय समय पर दूध चाय [illegible] ला सके।

तब फिर बैठे बैठे उसे लगा कि कहीं ऐसा न हो कि मां को भी दमा हो गया हो। निश्चय करने के लिए उसने बीबी से पूछा— सुनो! कहीं ऐसा तो नहीं है कि मा को भी पिताजी वाला ही रोग लग गया हो? पिताजी भी रात रात भर खांसते रहते थे।

बीबी को भी लगा कि हाँ, ऐसा हो सकता है। मां जी भी उनकी बहुत सेवा करती रहती थी। बुढ़ापे में कोई भी बीमारी लगते क्या देर लगती है।

लेकिन उनकी राय फिर बदल गई। बीबी से उसने कहा— लेकिन खांसी मे मुझे कुछ अन्तर नजर आता है। पिताजी की खांसी के मेरे कान आदी हो गये थे। लेकिन मुझे लगता है कि मां जी की खासी कुछ अलग अलग सी है।

बीबी भी उसकी राय से सहमत थी।

काफी देर तक वे ऐसे ही बातें करते रहे। बीमारियों की आधी अधूरी जानकारी होने के कारण वे ठीक ठीक किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पा रहे थे। शाम हुई तो बच्चे भी स्कूल से आ गये। तब फिर उसे ध्यान आया कि वह मां के लिए शाम को चाय ले जाए। अक्सर शाम के साढ़े चार बजे, उसकी मां को चाय पीने की आदत थी। अब साढ़े पांच बज गये थे।

बीबी को उसने चाय बनाने के लिये कहा। जब तक बीबी चाय बना लाए, तब तक वह थरमस के ऊपर लगे ब्राण्ड को पढने लगा। उसे लगा कि थरमस किसी अच्छी कंपनी का था। कई बार उसका विज्ञापन वह अखबारों मे पढ़ चुका था। उसे थोड़ी खुशी हुई कि चलो, इसी बहाने घर की एक चीज बन गई। पैसे तो वह अपने मित्र को पहली तारीख को ही देगा।

मां के लिये चाय लेकर वह अस्पताल पहुंचा।

वहां पहुंच कर उसने मां से पूछा—डाक्टरों ने कुछ देखा?

बहुत ही साधारण स्वर में मां बोली— हां!

लेकिन उसकी उत्सुकता वैसी ही बनी हुई थी—उन्होंने कुछ पूछा होगा?

—हां, गले के लिये पूछ रहे थे कि कुछ दर्द तो नहीं होता?

—फिर?...... तुमने क्या कहा?

—मैंने कहा, हा, होता है।.........और कभी-कभी ऐसा लगता है कि गले के अन्दर कोई सुई सी चुभ रही है.........या फिर जैसे कोई कीड़ा सा रेंग

रहा है ..... या कुछ ऐसा ही .. ..दरअसल मे मुझे क्या-क्या और कैसा-कैसा लगता है, मैं उन्हे ठीक से बता नही पा रही थी ...... ।

तब फिर उसे लगा, कुछ भी विशेष नही होगा ... मा को बीडी पीने की आदत है ही और कभी-कभी ज्यादा भी पी लेती है, इसलिये गले मे थोडी सी खराश सी महसूस होती होगी और मा को लगता होगा जैसे उसके गले मे कोई कीडा रेंग रहा है ।

उसने फिर मा से पूछा—फिर ? .. उसके लिये उन्होने कुछ कहा होगा ?

—क्या पता ? ..... पहले तो आपस मे कुछ गिट-पिट कर रहे थे । ये मुई अंग्रेजी बोली तो मेरे पल्ले ही नही पडती । ...... हा बाकी, जाते-जाते कह गये थे कि कल और देखकर वे शायद तुझे कुछ बता देंगे ।

तब अचानक एक अनजाना सा डर उसके मन में उठा कि शायद कोई ऐसी वैसी बीमारी है, जो डाक्टर कल भी देखना चाहते है, नहीं तो गले की खराश वराश के लिये इतना कुछ देखने की ऐसी क्या जरूरत पडती होगी ?

तब उसे लगा—कही मा को कैंसर तो नही हो गया है ।

यह सोचते ही एक अजीब सी सिहरन उसके अग-अग मे दौड गई ।

घर आकर उसने अपनी बीबी को बताया कि उसका अनुमान है कि मा को शायद कैंसर हो गया है ।

सुनकर बीबी को भी एक बार धक्का सा लगा ।

लेकिन फिर कुछ देर सोचकर वह बोली--सुनिये । लोग कहते हैं कि इस बीमारी का अभी तक कोई इलाज नही मिल पाया है । ...... क्या यह सच है ?

वह बोला--नही, ऐसी बात तो नही है । लेकिन हाँ, यह सच है कि यह बीमारी लगने के बाद आदमी के जीने-मरने का कुछ निश्चित नहीं रहता ...... ।

उसने सोचा कि परोक्ष रूप से उसने जो कुछ कहा है, बीबी उसका अर्थ समझ गई होगी । लेकिन बीबी फिर भी शायद बात को स्पष्ट रूप से नही समझ पाई । शायद इसलिये ही वह बोली—जीने मरने का तो किसी का भी निश्चित नही रहता ।

तब उसे अपनी बात स्पष्ट कहनी पड़ी—तुम समझी नहीं। मेरे कहने का मतलब है कि इस बीमारी में अक्सर मरीज की मृत्यु हो जाया करती है।

बीबी भी ऐसा ही बोली—हां।……मैंने भी तो यही सुना है।

उसने कोई उत्तर नही दिया।

बीबी तब सोचने लगी—तो अब मांजी कुछ ही दिनों की मेहमान होंगी।

वही बैठे बैठे तब उसे एक अजीब सी बात सूझी। सोचा—व्यर्थ ही मैं मांजी से इतना लडती रहती हूं। बात-बात में उनसे उलझ जाती हूँ। दरअसल गलती मेरी है। मुझे ही सयम से काम लेना चाहिये। उनका तो क्या है। बुढ़ापा है। बुढ़ापे में तो आदमी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो ही जाता है।

तब उसे अपने सोचने पर स्वयं ही आश्चर्य सा लगने लगा कि मांजी के बुढापे का उसे आज ही ध्यान क्यों आया है, जबकि उनका बुढापा तो कभी का शुरू हो चुका था।

सुबह होने तक दोनों गुमसुम पड़े रहे। दोनों को शायद ठीक से नींद नही आ रही थी। रह रह कर जब वे करवट बदलते तो देखते कि दोनो सो जाने का अभिनय किये हुए है। वैसे असल में वे दोनो जाग रहे थे।



सुबह जैसे तैसे नहा धोकर वह अस्पताल गया। थरमस में मां के लिये दूध की बनी हुई चाय लेता गया।

अस्पताल जाकर उसने देखा, मां हाथ मे माला लिये, आंखें बन्द किये पलङ्ग पर बैठी थी। उसे इस बात पर कोई आश्चर्य नही हुआ। उसकी मां का यह रोज का नियम था। कुछ देर वह चुपचाप, पलङ्ग के पास पड़े, लोहे के स्टूल पर बैठ गया।

तब थोड़ी देर बाद उसने देखा—दो डाक्टर, अन्य मरीजों को देखते हुए उसकी मा के पलङ्ग की तरफ आ रहे थे। पास आकर एक डाक्टर ने उससे पूछा—आपने अपनी मां को कुछ खाना वाना तो नहीं दिया ना?

—जी नही।……उसे लगा कि उसने बडी विनम्रता से उत्तर दिया है।

तब फिर उसने देखा, उसके और डाक्टर के बीच हुए उन दो शब्दो के वार्तालाप से, मा की आँख खुल गई थी या फिर मा न उसकी आवाज को पहचानकर आँखें खोल ली थी। वह आश्चर्य से कभी डाक्टरो की तरफ तो कभी अपने बेटे की तरफ देखने लगी थी।

तब एक डाक्टर न उसकी मा से कहा कि आपको हमारे साथ आवश्यक चेक अप के लिये पास वाले कमरे में चलना होगा।

वे लोग मा को वहाँ ले गये। उसने एक बार डाक्टर से पूछा भी कि कही उसकी उपस्थिति की आवश्यकता तो न होगी? लेकिन डाक्टरो न उसे वही बैठे रहने के लिये कह दिया।

अब उसके लिये क्या काम रह गया था। फालतू ही मे इधर उधर देखने लगा। कई मरीज कराह रहे थे। एक तो बिल्कुल बच्चो की तरह रो ही रहा था और एक नर्स मा की तरह जैसे उसे दुलार कर चुप रहने का आग्रह कर रही थी। नर्स उसे अच्छी लगी।

तब उसे याद आया कि जब उसकी शादी नहीं हुई थी, तब एक बार उसने नर्सों के चरित्र के बारे मे कुछ ऐसा वैसा सुना था और तब उसकी इच्छा हुई थी कि एक बार ऐसा बीमार पड जाए कि उसे अस्पताल मे भर्ती होना पडे और फिर वह किसी नर्स के इश्क मे फँस जाए या किसी नर्स को पटा ले ...... या ऐसा ही कुछ ... ..।

लेकिन आज जब वह बाल बच्चो वाला हो गया है, तब ऐसी बातें उसे बडी बचकानी सी लगती है। उसे हँसी आने लगती है कि देखो, आदमी इश्क विश्क के चक्कर मे, बीमारी मे होने वाली यातना को भी स्वीकार कर लेता है।

काफी देर ऐसी व्यर्थ की बातें सोचता रहा। तब उसने देखा, वार्ड बॉय मा को वापिस ला रहा था। वार्ड बॉय ने ही उसे आकर कहा कि डाक्टर साहब ने आपको ,बुलाया है। मा से कोई बात किये बिना वह डाक्टर के चेम्बर की तरफ चला गया।

डाक्टर ने तब उसे बताया कि उसकी मा को कैंसर हो गया है— आपरेशन होगा।

तब बडी आजिजी से उसने डाक्टर से पूछा—डाक्टर! क्या बहुत ज्यादा · यानी कोई बहुत बडा घाव है?

डाक्टर बोला--देखिये। यह सब आपकी समझ में नहीं आएगा। हम आपरेशन करेंगे.......। आप समझदार और पढ़े लिखे आदमी हैं, आपसे क्या छिपा है। इस बीमारी से छुटकारा भी मिल सकता है, न भी मिले। कुछ ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता.......वैसे, हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश करेंगे।

एक क्षण को उसे खुशी हुई कि देखो, वह कितना समझदार तो था हो कि इस बीमारी का अनुमान उसने पहले से ही लगा लिया था। लेकिन दूसरे ही क्षण वह उदास हो गया। डाक्टर के शब्दों ने उसे किसी तरह का स्पष्ट आश्वासन नहीं दिया था कि मा का आपरेशन सफल हो जाएगा और वह बच जाएगी।

डाक्टर के यहां से लौटकर, वह सीधा मां के पास आया। उसने देखा, दो मरीज वहीं खड़े-खड़े उसकी मां से बातें कर रहे थे। शायद वे पूछ रहे होंगे कि डाक्टर ने क्या-क्या किया। कैसा 'चेक-अप' किया.......या फिर क्या कहा?

लेकिन उसे आया देख, दोनो मरीज अपने-अपने पलंग की तरफ चले गये। तब मा ने उससे पूछा—क्या कहा डाक्टर ने?

उसने रोग का नाम छिपाना चाहा। बोला—डाक्टर ने कहा है कि कुछ दिन तुम्हें यहा रहना होगा। कह रहा है कि आपरेशन होगा।....... तुम कह रही थी ना कि गले मे खाना खाते या पानी पीते हुए तुम्हें कुछ तकलीफ होती है और तुम्हे गले मे कुछ रेंगता हुआ सा लगता है सो शायद उसी कीड़े वीड़े को निकालने के लिये आपरेशन जरूरी होगा.......।

मा ने पूछा--अच्छा!....... डाक्टर ने क्या कहा कि कोई कीड़ा है?—उसे लगा कि यह बात कहते-कहते माँ का चेहरा कुछ उतर सा गया था।

तब वह बोला—नही। डाक्टर ने ऐसा नही कहा। लेकिन मैं समझता हूं, ऐसा ही होगा। वरना आपरेशन की क्या जरूरत है?—तब फिर उसे लगा कि अब उसे बात का रुख बदल देना चाहिये। इसलिये फिर बोला—अच्छा! मैं फिर शाम को आऊंगा। तुम्हारे कपड़े भी लेता आऊंगा। अभी तो मैं इसलिये नही लाया कि कहीं शायद ये लोग तुम्हें यहां भर्ती नही भी करते....... लेकिन अब तो लगता है कि तुम्हें कुछ दिनो के लिये यहां रहना होगा।.......तो, अभी तो मैं घर होता हुआ सीधा आफिस जाऊंगा शाम को फिर यहां आ जाऊंगा।

इतना कहकर वह घर चला आया। घर आकर उसने बीबी से कहा—देखा ! वही हुआ, जिसका मुझे डर था।

बीबी भी बात समझ गई, बोली—क्या डाक्टर ने भी कैंसर ही बताया ?

—हा !—उससे कुछ आगे कहते न बना।

—फिर ?

उसे लगा, यही प्रश्न वह भी करना चाहता था। लेकिन बीबी ने पहले से ही कर दिया है।

उत्तर मे वह बोला—फिर क्या ? तुम्हारे या मेरे हाथ मे क्या है ? आपरेशन तो होगा ही" "।

तब कुछ देर दोनो चुप रहे। फिर उसकी बीबी ही बोली-एक बात कहूं" " आप बुरा तो नही मानेंगे ?

—क्या ?

—मैं " " मैं सोच रही थी कि यह बहुत ऐसा वैसा रोग है। कोई जरूरी नही होता कि आपरेशन सफल ही जाए। कल को अगर माजी को कुछ हो गया, तो अपने पास तो उनके क्रियाकर्म के लिए पैसे तक नहीं हैं।

तब थोडा फीका हसकर वह बोला—सच तो यही है कि ऐसा विचार मेरे मन मे भी उठा था। लेकिन मैं यह बात सिर्फ इसलिये नही बोला कि कही तुम ऐसा न सोच बैठो कि अपनी ही मा के लिये कैसी-कैसी बातें सोचता हू मैं।

बीबी बोली—तो फिर ?

फिर जैसे समाधान सुझाते को खुद ही बोली—आप ऐसा कीजिये कि जब तक इलाज चले और आपरेशन हो तब तक आप अपने पी० एफ० में से थोड़ा पैसा निकलवाकर रख लीजिये। " " उस समय किसी के सामने हाथ फैलाने की नौबत तो नही आएगी।

बीबी की यह बात सुन, वह कुछ देर के लिये चुपचाप कुछ सोचता रहा।

वैसे हर साल वह पी० एफ० मे से केवल तब ही पैसे निकलवाता है, जब स्कूल खुलने को होते हैं। तब बच्चों की वर्दिया, किताबें, फीस आदि पर

बहुत खर्चा हो जाता है और उसकी तनख्वाह में से इतना पैसा तो बच नहीं पाता कि वह घर का खर्चा भी चलाए और बच्चों की पढ़ाई का इतना ढेर सा खर्च भी उठा सके।

लेकिन अब उसे लग रहा था कि बीवी का कहना भी सही था। तब ऐन मौके पर कौन किसके सामने हाथ फैलाता रहेगा।

असमंजस में उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा था।

आफिस आकर उसने पी० एफ० से कुछ पैसे निकलवाने के लिये फार्म भर दिया।

शाम को वह मा के लिये कुछ कपड़े और थरमस में दूध लेकर अस्पताल गया। मा आँखों पर चश्मा लगाए, लेटे-लेटे ही कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ रही थी।

वह चुपचाप मां के पास जाकर बैठ गया। तब उसकी मां बोली– अभी नर्स आई थी, वो बता रही थी कि पहले हफ्ता भर कोई टानिक वानिक ''' '' पता नहीं और क्या-क्या लेना होगा और उसके बाद जाकर कहीं आपरेशन करेंगे।

बेटे ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब फिर मा बोली-बेटे! इसमें खर्चा तो बहुत होगा। फिलहाल किसी दोस्त वोस्त से कुछ पैसे वैसे ले लेना।

वैसे ही मां का दिल रखने के लिये वह बोला––पैसे वैसे की फिक्र तुम क्यों करती हो, मां! ''''''''तुम्हारा बेटा बैठा है। सब ठीक हो जाएगा। वैसे पी० एफ० से कुछ रुपये निकलवा लेता हूं। आज अर्जी भी दे आया हूँ।

तब बेटे को लगा कि टानिक वानिक के इस खर्चे का तो उसे ध्यान ही नहीं आया था। अब टानिक आदि पर भी सौ दो सौ 'खर्चा हो ही जायेंगे।

तब फिर उसे लगा कि उसको इस बात से मां खुश हो रही है कि बेटा उसका कितना ख्याल रखता है और हकीकत भी यही थी कि उसने पैसा मां के लिए ही लिया था।

जाने से पहले, वह डाक्टर से उन टानिक आदि की सूची लेता गया, जिनकी आपरेशन से पहले आवश्यकता थी।

रास्ते में वह सोचता गया– मां कितनी कमजोर हो गई है। घर में रहते रहते उसने कभी मां के शरीर को इस दृष्टि से या इतने ध्यान से नहीं

देखा था। लेकिन आज अस्पताल मे और मरीजो को देखते देखते उसने जब मां के शरीर को भी एक मरीज के रूप मे बडे गौर से देखा तो उसे लगा— मां की चमडी मे कितनी सलवटें पड गई थी और उनमे से हड्डियां जैसे झांक-झांक कर अपना अस्तित्व प्रकट कर रही थी। तब वहां उसे फिर लगा कि शायद कमजोरी की हालत मे वे लोग मरीज का आपरेशन नही करते होंगे या फिर कोई टानिक आदि देने के बाद करते होंगे। ········या फिर ।



पी० एफ० से उसने पैसे ले लिये थे।

फिर उसके लिये कुछ रोज का यह एक रूटीन बध गया था। रोज वह अस्पताल मे मा के लिए जरूरी चीजें लेता हुआ जाता, मा से और डाक्टरो से कुछ बातें करता और वापिस घर चला आता।

तब, एक दिन उसे लगने लगा कि धीरे-धीरे अब वह पी० एफ० से मिले पैसो मे से भी कुछ रुपये निकालने लगा था। उसे अब इस बात का डर लगने लगा कि कही ऐसा न हो कि रुपये उसके यो ही इलाज-विलाज मे खतम हो जाएँ और जिस काम के लिए उसने रुपये लिये थे, उस वक्त उस काम के लिये, फिर उसे किसी के सामने हाथ फैलाना पड जाए।

·· ···जाने दो, उसकी बीबी भी बीच बीच मे, वहां अस्पताल जाती रही थी। तब उसे लगने लगा था कि घर पर तो सास के साथ उसका रोज किसी न किसी बात पर झगडा होता रहता था, लेकिन यहां अस्पताल मे माजी उसके साथ कितना मीठा बोलती है। तब फिर उसे सुनी सुनाई एक बात सच होती सी लगी कि आदमी जब मरने को होता है, तब ऐसा ही मीठा बोलने लगता है।

और ऐसे उसका शक, निश्चय मे बदल गया कि माजी अब शायद बच नही पाएँगी।

कुछ दिनो बाद आपरेशन हुआ। उस दिन सुबह से बेटा बडा उदास-उदास था। डाक्टर ने एक दिन पहले उससे लिखवा लिया था कि अगर उसकी मा को कुछ हो गया तो उनको कोई जिम्मेदारी नही रहेगी। ·· ···तब उसे अपना चोर खाने लगा कि जैसे वह खुद ही लिखकर दे आया हो कि उसे कोई आपत्ति नही होगी, अगर उसकी मा मर जाती है।

उसकी बीबी भी उस दिन कुछ उदास-उदास थी। उसे जैसे लगने लगा था कि अब के बाद उनके परिवार के सदस्यों की गिनती में एक की संख्या कम हो जाएगी।...... या फिर, आज के बाद, एक जानी-पहचानी सी आवाज उनसे अलग हो जाएगी........उनसे दूर चली जायगी।

❈

आपरेशन सफल हो गया था। डाक्टर ने उसे केवल इतना ही कहा—हमारी तरफ से तो इस आपरेशन को सफल ही मान लेना चाहिये। लेकिन यह बीमारी आपसे छिपी नहीं है। बहुत ध्यान रखियेगा। मरीज का पता नहीं चलता कि कब ......।

वह समझ गया कि परोक्ष रूप से डाक्टर ने क्या कहना चाहा था।

मां को डिस्चार्ज करवा वह उसे रिक्शा में बिठाकर घर की तरफ जब चलने लगा तो उसने देखा मां बहुत खुश थी। जैसे वह मौत से संघर्ष कर उससे जीत आई थी।

मां को खुश होता देख न जाने क्यों उसे विशेष खुशी नहीं हुई। उसे लगा कि उसके घर में, एक बार फिर, रुटीन जीवन शुरू हो जायगा। फिर मां के और बीबी के बीच छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़े होते रहेंगे।

तब फिर उसे लगा कि पी० एफ० से पैसे निकलवाकर उसने अच्छा नहीं किया। मां को तो कुछ ऐसा वैसा हुआ नहीं और गृहस्थी तो एक कुआ है—पैसे तो घर में ही खर्च हो जाएंगे।

फिर उसने सोचा—वही पैसे घर मे ही खर्च हो गये और उसके बाद ही उसकी मां को कुछ ऐसा वैसा हो गया तो? तो फिर वह पैसे कहाँ से लाएगा?

तब उसे लगा कि मां के न मरने का उसे बहुत दुःख हो रहा था। ❈

एक दिन ऐसे ही



प्रोतिमा पर नजर पडते ही चन्दर आश्चर्य से उसकी तरफ देखने लगा। प्रोतिमा की आँखो पर नजर का एक मोटा-सा चश्मा चढा हुआ था। बाल उसके सब सफेद हो गये थे, चेहरे पर उम्र कुछ अजीब से निशान छोड गयी थी। प्रोतिमा के साथ एक दुबली-पतली लडकी थी, जिसकी आँखो से चचलता टपक रही थी।

चन्दर आगे बढ गया—'प्रोतिमा हो ?'

'हाँ ......।' प्रोतिमा ने आश्चर्य से चन्दर की तरफ देखा।

'पहचानती हो ?'

आँखो को और फैला कर, चश्मे के मोटे लैंस मे से घूर-घूर कर प्रोतिमा ने चन्दर की तरफ देखा—'चन्दर हो ?'

'हाँ.... ...।'

मारे खुशी के प्रोतिमा की आखो मे चमक आ गयी। बेटी की तरफ देखकर पूछा उसने, 'अरे अबी, पहचानती हो न चन्दर अकल को ?' लडकी ने आश्चर्य मे चन्दर की तरफ देखा। प्रोतिमा बोली, 'नही पहचाना.... .. ?

अरे पगली, चन्दर अंकल को नहीं पहचानती ?' लड़की ने फिर उसी मुद्रा में चन्दर की तरफ देखा । प्रीतिमा इस पर फिर बोली, 'क्या तू भूल गयी, अंबी, चन्दर अंकल अपने घर आया करते थे ... ...और.......और प्यार भरे एक चांटे की बजाय तुझे एक टॉफी देते थे ...... और एक बार कैंची लेकर तेरी चोटी के कुछ बाल काट दिये थे ... .. उस पर तू बहुत रोयी थी.......' अंबी को अब भी आश्चर्य में डूबा देख प्रीतिमा को अपनी गलती का एहसास हुआ —'हां...... लेकिन अंबी, तुझे यह सब बातें कहां याद होंगी ...... तब तो तू केवल छह साल की ही थी....... और तब तेरी मम्मी के ये बाल काले थे....... ।'

चन्दर को लगा कि प्रीतिमा को गुजरा हुआ कुछ याद हो आया था, उसकी आंखों में आंसू भर आये थे । चन्दर को यह अच्छा नहीं लग रहा था कि बीच रास्ते में ऐसा कुछ हो, जो चाहते हुए भी उसने नहीं चाहा था । बात का रुख बदलने के विचार से वह बोला, 'प्रीतिमा, ऐसे अचानक यहां कैसे आना हुआ ?'

प्रीतिमा को भी शायद लगा कि इस घड़ी यह जो कुछ हो रहा है, वह गये दिनों की खूबसूरत यादों के साथ लुभावना होते हुए भी कोई बहुत अच्छा नहीं है, इसीलिए बोली, चन्दर, पास में कोई रेस्तरां या काफी हाऊस हो तो चलो वहां कुछ देर बैठें ।

मां की भारी हो आयी आवाज को अंबिका ने भांप लिया, लेकिन वह समझ न पायी कि आज अचानक उसकी मम्मी को यह क्या हो गया था । वह कुछ और सोचे-सोचे इसके पहले ही उसने चन्दर की आवाज सुनी—'हां चलो, किसी रेस्तरां मे चलें...... लेकिन सुनो तो प्रीतिमा, तुमने अपनी बेबी का नाम 'अंबी' कैसे रखा ? जहां तक मुझे याद है, इसका नाम अंबी तो नहीं था ।'

तब एक फीकी मुस्कान के साथ प्रीतिमा बोली, 'हां, वैसे बेबी का नाम अरुणा था । लेकिन मुझे एक पुरानी बात याद हो आयी । बेबी के नामकरण के समय मैं अरुणा नाम रखना चाहती थी और मेरे पति अंबिका नाम रखना चाहते थे ...... जिन्दा रहते उन्होंने मेरी जिद रखी थी, तुम्हें तो मैंने बताया था चन्दर कि मेरे पति को मुझसे कितना मोह था ...... और ऐसे ही एक दिन मैंने सोचा कि जिन्दा रहते उन्होंने मेरी जिद रखी और अब, जब वह नहीं रहे तो कम से कम मैं उनकी इच्छा का खयाल रखूं...... इसलिए

देवी को अब मैं अम्बिका या कभी-कभी प्यार से 'अम्बी' ही कह कर पुकारती हू।

तीनो थोडा चलने लगे। चन्दर ने अपनी बाँह अम्बिका के कंधे पर रख ली और फिर अपना सवाल दोहराया - 'हाँ प्रोतिमा तुमने बताया नही, ऐसे अचानक यहाँ कैसे आना हुआ तुम्हारा ?'

प्रोतिमा ने उत्तर दिया —'अम्बी की मगाई के सिलसिले मे आई हूँ ··· देखो ना मेरी अम्बी अब कितनी बडी हो गई है।'

अम्बिका के बालों पर प्यार से हाथ फेर कर चन्दर बोला—'हाँ, बडी तो हो गयी है।'

प्रोतिमा बोली—'यहाँ एक अच्छा लडका ध्यान में था। सोचा, बात पक्की होने के पहले दोनो एक-दूसरे को देख-परख लें तो अच्छा हो।'

बातो-बातो मे रेस्तरा आ गया। अम्बिका बोली—'मम्मी, मेरा मूड कॉफी पीने का नही है। आप कॉफी पीजिए। मैं तब तक बगल वाली दुकान पर कुछ चीजें देख कर आती हूँ।'

'अच्छा' कह प्रोतिमा चन्दर के साथ रेस्तराँ मे चली गयी।



रेस्तरा मे एक दूसरे के सामने बैठ जाने के बाद प्रोतिमा एक हल्का ठहाका मार कर बोली-- देखो, चन्दर, हम दोनों कितने बूढे हो गये हैं। तब उस उम्र मे हम दोनो ने शायद यह कभी सोचा भी नही होगा कि हम इस हद तक बूढे हो जायेंगे और ऐसे एक दिन अचानक ही मिल जायेंगे· ··· हाँ, तुम्हारे भी दा लडक और एक लडकी थी ·· उनका क्या हुआ ?'

'लडकी की शादी तो मैंने दो साल पहले कर दी। बडा लडका मिलिट्री मे ऑफिसर है। उससे छोटा कानपुर म डाक्टर है और गये बीस वर्षो से हम दोनो एक दूसरे से नही मिले हैं। उस दौरान मुझे 'पापा' कहने वाले तीन और पैदा हो गये है। वे अभी पढ रहे है।'

प्रोतिमा की आखो मे खुशी भर आयी—'अम्बी से छोटा जो मेरा लडका है विमल वह अब एम० ए० मे है।'

इस बीच चन्दर ने अपनी जेब से पर्स निकाल कर प्रोतिमा की तरफ बढाते हुए कहा, 'लो, देखो, इसम मेरे बडे लडके की फोटो है। देखो, लगता है ना कुछ· ?'

प्रोतिमा की आंखों में कुछ शैतानी भर आई – 'इसके चेहरे पर अगर ये बड़ी-बड़ी मूंछें न होती तो इसकी शक्ल सूरत हू-बहू तुम्हारी जवानी की सी है ......और लगता भी तुम्हारी तरह शैतान ही है। तुम्हें याद है, चन्दर, उन दिनों मैं तुम्हारी मिसेज के सामने भी तुम्हें 'शैतान' कह कर पुकारती थी ......अरे हां, तुम्हारी मिसेज अब कैसी हैं?'

'अच्छी है ......वह भी तो हम दोनों की तरह बूढ़ी हो चुकी है...... तुम्हें बहुत याद करती है ......सच बताऊं, कभी-कभी तुम्हारे लिए रोती भी है...... आज इतने वर्षों बाद तुम्हें यह बात बता रहा हूं कि जवानी में तुम्हारा विधवा हो जाना हम दोनों के लिए दुःख का विषय था ...... हमें तुम्हारे प्रति बहुत दया और करुणा हो आती थी, लेकिन यह बात हमने कभी तुम्हारे सामने प्रकट न होने दी...... सिर्फ यह सोच कर कि हमारी उस भावना को ले कर तुम अपने आपको कहीं 'बेचारी' न समझने लग जाओ और सच तो यह है कि तुम्हें 'बेचारी' के रूप में देखने के बजाय हमने तुम्हें खुश देखना चाहा था...... तुम्हारी आंखों में आसूओं के बजाय हमने तुम्हारे होंठो पर खिलती मुस्कान देखनी चाही थी।' प्रोतिमा के चेहरे पर उदासी घिर आयी थी। बात का रुख बदलते हुए चन्दर बोला, 'चलना घर ......तुम्हें देख कर वह बहुत खुश होगी...... ।'

कुछ देर तक दोनों चुप रहे, फिर जैसे किसी सपने में से जागता हुआ-सा चन्दर बोला, 'अरे हां, देख लिया फोटो? ......यह दो साल पहले का है। अब तो ऐसा हो गया है कि बस! ...... एक बात कहूं...... तुम्हें शायद हास्यास्पद-सी लगे...... मैंने सोचा था कि तुम्हारे और मेरे स्नेह को एक और मजबूत बंधन में बांधने के लिए मैं अपने बड़े लड़के के लिए तुमसे अरुणा का हाथ मांगूंगा ...... लेकिन जब तक वे दोनों इस लायक हुए, हम अलग हो गये ......वह सब किसी टूटे सपने की तरह अधूरा रह गया। और आज, बीस साल के लम्बे अन्तराल के बाद जब हम मिले है, तब सब कुछ बदल चुका है: मेरे लड़के ने वहीं किसी मिनिस्ट्री आफिसर की लड़की से शादी कर ली है ...... ।' चन्दर को लगा कि अब उसकी आंखों में भी पानी भर आया है।

प्रोतिमा बोली, 'बुढ़ापे की इस क्षीण दृष्टि से भी मैं देख रही हूं कि तुम्हारी बूढ़ी आंखों में पानी भर आया है...... ।' फिर अपनी आवाज को संतुलित करती हुई वह बोली, 'चन्दर, आज तुम मुझे एक चांटा मार दो।' आश्चर्य से चन्दर प्रोतिमा की तरफ देखने लगा। प्रोतिमा बोली, 'शायद तुम भूल

गये होंगे, लेकिन मुझे आज भी याद है कि उन दिनों तुम न जाने किस विद्रोह या स्नेह-वश मुझ से कहा करते थे कि 'मुझे एक चाटा मारने दो।' और हर बार मैं तुम्हारी इस बात को टाल दिया करती थी। आज तुम्हारी प्रोतिमा तुमसे खुद कह रही है कि आओ चन्दर मुझे एक चाटा मार दो।'

'नहीं, प्रोतिमा, इतने वर्षों की तपस्या को मैं आज भग नहीं होने दूंगा ······ नहीं······ ।'

'तपस्या ?'

'तुम शायद इसे भूल गयी हो कि जब पहले मैंने तुम्हे देखा था, तब मेरी नजर मे तुम्हारे प्रति वासना का एक हल्का-सा धुआँ, एक हल्का-सा एहसास था, लेकिन फिर जिस दिन मुझे पता चला कि तुम एक विधवा हो, मौत ने जवानी की दहलीज पर ही जिसकी खुशियां छीन ली है, तो मेरा मन बदल गया था और मैंने तुमसे कहा था कि जीवन भर मैं तुम्हारे शरीर को नहीं छूऊंगा······ ।'

लेकिन चदर, आज मैं तुमसे चांटा सजा के रूप मे माग रही हूँ ······ तब भी मेरी नजर कमजोर थी ······ तुम मुझे बहुत समझाया करते थे कि 'चश्मा लगाया करो, नहीं तो एक दिन, प्रोतिमा, तुम अंधी हो जाओगी,' लेकिन तब मैंने तुम्हारी बात नहीं मानी थी। और आज जब मैं करीब-करीब अंधी-सी हो गयी हूँ, जब मुझे तुम्हारे वे शब्द याद हो आते हैं ······ अगर उन दिनों ही मैं तुम्हारी बात मान लेती तो आज मेरी आंखो पर इतने मोटे शीशो का पहरा न होता ······ ।'

'चलो, छोडो इस बात को। अब यह बताओ, तुमने फिर दूसरी शादी तो नहीं की ?'

'नहीं।'

'प्रोतिमा, सच कह रहा हू, तब मुझे लगा था कि उम्र के आने वाले वर्षों मे जवानी की बेरहम गर्मी के सामने तुम कहीं हार न जाओ········ तब मैंने तुमसे एक बार इशारे से कहा भी था कि तुम्हारी पेशानी की रेखाए मुझे ऐसा बता रही है कि आने वाले पाच सात वर्षों म तुम्हारे जीवन मे एक ऐसी घटना होगी जो तुम्हे वर्षों तक याद रहेगी······ और प्रोतिमा, तुम्हें शायद आश्चर्य सा लगेगा कि अपने हम-उम्र को आशीर्वाद देने के एक अजीब पागलपन को मैं तब महत्व दे बैठा था और अपनी हर सुस्त और फालतू घडी मे जब भी तुम्हारी याद आती थी, मैं तुम्हारे प्रति विशेष कुछ

सोचने की बजाय तुम्हें आशीर्वाद देना बेहतर समझता था कि काश, उम्र भर तुम अपने आप में एक ही पति की पत्नी कहलवाने का हक़ सुरक्षित रख पाओ ''''''।'

एक ठंडी आह भर कर प्रोतिमा बोली, 'चंदर, तुम्हें मैं कैसे बताऊं कि जिंदगी के पिछले कठिन वर्ष मैंने कैसे गुजारे हैं। अपने पति की मूर्ति मेरे मन से तब नहीं हटी थी, आज भी नहीं हटी है। तब एक दिन तुमने मुझसे *कहा था कि तुम दूसरी शादी क्यों नहीं कर लेती ?* ''' '''और तुम्हें याद होगा, मैंने तुम्हें बताया था कि जब भी 'काम' जैसी कोई शक्ति मुझे सताती थी या मुझे झुकाने की कोशिश करती थी, तब मैं यह सोच कर अपने चंचल मन को काबू में कर लेती थी कि वे भी तो औरतें हैं, जिनके पति कहीं परदेश में वर्षों गुजार देते हैं। और यह सोच मुझे अजीब सा सुख मिलता था कि मेरा पति मरा नहीं है, बस, कहीं परदेश *गया हुआ है।* लेकिन चंदर, सच तो यह है कि तब शायद कभी-कभी मेरा मन असमंजस की स्थिति में जूझने लगता था। लेकिन फिर मैं पति के साथ बिताये गये छह वर्षों की हसीन यादों को सहारा बना मानसिक तृप्ति हासिल कर लिया करती थी''''''।'

चन्दर ने देखा कि प्रोतिमा की आंखों पर चढ़े मोटे चश्मे के पीछे कुछ चमकने लगा था। वह बोला, 'प्रोतिमा, तुम्हारी मानसिक तृप्ति की बात को अलग रख तुम्हारे आदर्शों को मैं आज भी सलाम करता हूं''' लेकिन सुनो तो *प्रोतिमा, अब बच्चों के प्रति तुम्हारे मन में मोह है या नहीं ?'*

प्रोतिमा बोली. 'हां चन्दर, अब बुढ़ापे में मेरे मन में बहुत मोह भर आया है—अपने बच्चों के प्रति और उनके प्रति, जिन्होंने जीवन के दुखी दिनों में *मुझे सहारा दिया, अपनत्व दिया''''''।'*

इस बीच चन्दर ने बेयरे को प्याले कॉफी लाने को कहा और फिर कुछ देर को दोनों चुप हो गये। प्रोतिमा ही फिर बोली, *'क्यों चन्दर, चुप क्यों हो गये ? क्या सोच रहे हो ?'*

चन्दर शायद कुछ सोचने लगा था। प्रोतिमा के सवाल पर जैसे सपने से जागता हुआ-सा बोला, 'नहीं, प्रोतिमा, खास कुछ भी नहीं सोच रहा हूं''' मैं शायद बीते हुए उन वर्षों में जीने लगा था, जिनमें हम दोनों के बाल काले थे''''मुझे याद आ रहा है. तब शायद मैंने तुमसे आत्मिक प्रेम की बात *कही थी, तो तुमने कहा था, 'प्रेम' से तुम डरने लगी हो। तब तुमने बताया*

था कि एक कुत्ते को तुमने प्यार दिया तो वह मर गया और प्यार और मौत की इस बुरी दोस्ती के वहम ने तुम्हारा पति छीन लिया। और फिर जब किसी ने तुम्हें अपनत्व दे कर तुमसे आत्मिक प्रेम की बात कही थी, तब तुम 'प्रेम' जैसे किसी शब्द से ही डरने लगी थी।'

'हां, चन्दर, यह बिलकुल सच है। आज भी यही हालत है। इस शब्द से बुढ़ापे की इस हालत मे भी मैं डरती हू, इसलिए अपने बच्चो से प्यार के लिए मुझे 'मोह' जैसे शब्द का सहारा लेना होता है।'

'हां ...... हां, मैं समझता हूँ। तब भी ऐसे ही था। इसीलिए उन दिनो अपनी बात को व्यक्त करने के लिए मुझे 'स्नेह' जैसे शब्द का सहारा लेना पडा था ...... तब तुम्हारा शाब्दिक ज्ञान भी कोई बहुत अच्छा नही था, ... लेकिन अब, मैं समझता हूँ उम्र और सफेद बालो के अनुभव ने तुम्हारा शाब्दिक ज्ञान बढा दिया होगा और तुम्हें अब लग रहा होगा कि 'स्नेह' और 'मोह' के पीछे भी प्यार जैसी ही कोई भावना छिपी होती है।'

प्रोतिमा चुपचाप सुनती रही। इसी बीच बेयरा आकर कॉफी र गया।



चन्दर को लगा कि चादी की कोई बारीक-सी लकीरें उसके मस्तिष्क मे उभरने लगी थी। प्रोतिमा की ओर देखता हुआ वह बोला, 'प्रोतिमा, जवानी मे जब हम अलग हुए थे। तब बतौर किसी निशानी के तुमने मुझे एक पिन दी थी। वह पिन मैंने एक काले कागज पर फ्रेम करवा के रख छोडी है, घर मे कही लगायी नही है—केवल यह सोच कर कि यदि कल मुझ से कोई इसका कारण पूछ बैठे तो मैं क्या जवाब दे पाऊँगा।' फिर ऐसे ही थोडा हस कर चन्दर बोला 'वैसे तो प्रोतिमा, मैंने सोचा था कि किसी के पूछने पर युवकोश का उदाहरण देकर समझाऊँगा कि आज के जीवन मे केवल दु ख और काटे हैं और काले कागज पर पिन का होना दुःखो से भरी दुनिया म चुभन के एहसास का एक प्रतीक मात्र है।'

प्रोतिमा बोली, 'चन्दर निशानी लेने देने की बातें आज बुढापे की इस अवस्था मे बचपने की सी लगती हैं, लेकिन फिर भी न जाने क्यो उनको सहेज कर रखने मे कुछ ऐसा सुख मिलता है, जो इजहार से परे है।'

उस समय एक दम्पती दो-तीन साल के एक बच्चे के साथ रेस्तरां में आया। पैर में पैर मिला कर चलते हुए बच्चे को देख प्रोतिमा की आंखों में चमक भर आई। बोली चन्दर, कोई भी बच्चा जब चलना सीखता है, तो उसकी चाल मुझे अपने पति की याद दिलाती है। जब बीमारी की हालत में मैंने अस्पताल मे उन्हें यह बताया था कि अब अपना विमल थोड़ा-थोड़ा चलने भी लगा है, तो खुशी से वह बोले थे कि शाम को विमल को अस्पताल लेती आना·······और जब शाम को मैं विमल को अस्पताल ले गयी थी तो विमल को पैर मे पैर मिला कर चलते देख वह खूब ठहाकेदार हंसी हंसे थे·······लेकिन उफ् चन्दर मैं कहां जानती थी कि वे उनके आखिरी ठहाके थे। दूसरे ही दिन अपने पति के वे ठहाके मुझसे रूठ गये। और हालत यह है कि आज भी जब अकेले में मैं पति की तसवीर को तरफ देखती हूं, तो मेरा पागल मन ऐसा चाहने लगता है कि तसवीर की फ्रेम तोड़ कर अन्दर से कोई ठहाके निकल आएं और मैं फिर अनजाने में जवानी की वे रूठी घड़ियां पति के ठहाकों के साथ ठहाके मार-मार कर बिताऊं।' फिर एक ठंडी सांस लेकर बोली, 'लेकिन अफसोस, वह सब कल्पनाओं का नगर है, जो तिलस्मी है·······केवल कुछ देर अस्थाई सुख दे सकता है, और कुछ नहीं।'

चन्दर बोला, 'प्रोतिमा, एक बात पूछूं ?'

'हां·······हां, पूछो·······जरूर पूछो। पिछले कितने वर्षों में न जाने कितनी बातें मैंने भी सोच रखी थीं कि चन्दर को बताऊंगी·······लेकिन जैसे इन बालों का रंग उड़ गया, वैसे ही मस्तिष्क से भी कई बातें शायद दिमागी पिंजरे की उमस से निकल कर उड़ गयीं।'

चन्दर बोला, 'प्रोतिमा, सच बताना, इतने वर्षों में कभी तो वासना ने तुम्हें बहुत तंग किया होगा ?'

अपनी बाह की बूढ़ी चमड़ी पर चिकोटी काटती हुई, थोड़ा खांस कर प्रोतिमा बोली, 'हां, चन्दर, एक बार बिल्कुल बुरी तरह काम ने मुझे तंग किया था। तब हारती-हारती मैं काम से जीत गयी थी······ या शायद तब प्रकृति ने मेरी उस जीत मे मेरा साथ दिया था·······कि उस वक्त·······फागुनी हवाओं की उस ठंडी रात में कोई पुरुष मेरे पास मे न था·······फिर मैंने अपने बाल नोचे थे·······कपड़े फाड़ डाले थे·······घर मे लगे आईने को तोड़ डाला था·······किसी कुत्ते की तरह हांफते-हांफते मेरी जीभ बाहर निकल आयी

थी'''' '''शायद मैं बेहोश भी हो गयी थी। जब होश आया, तब लगा था कि मेरी रगों पर बर्फ घुमा घुमाकर किसी ने शरीर को ठंडा कर दिया था '' ।'

एक ठंडी सांस भर कर चन्दर बोला, 'प्रोतिमा, यहां आ कर मेरे विश्वास के मूल्य बदल जाते हैं। मैं सोचने लगता हूं कि दुनिया में शक्ति जैसी कोई चीज नहीं है—मतलब, कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो किसी को नुकसान पहुँचा कर खुद साफ बच कर निकल जाये। एक बम फटने पर भले ही इन्सान के टुकड़े कर दे, लेकिन ऐसा करते हुए वह खुद भी टुकड़ों में बंट जाता है ।'

पंखे की हवा लगने से प्रोतिमा के सफेद बाल फैल कर उसके चश्मे के मोटे शीशों पर टहलने लगे थे, लेकिन उस उनका ध्यान ही न रहा। वह शायद कुछ सोचने लगी थी। कुछ देर बाद वह बोली, 'चन्दर तुम बताओ, तुमने ये गये साल कैसे बिताये ?'

आश्चर्य से चन्दर ने पूछा, 'प्रीति, 'कैसे' से तुम्हारा क्या मतलब है?'

हल्का-सा हंस कर प्रोतिमा बोली, 'चन्दर पहले तुम मुझे खुशी की एक हंसी हंस लेने दो कि इतने लम्बे वार्तालाप में पहली बार तुमने मुझे 'प्रीति' के नाम से पुकारा है '''' '' मैं नहीं जानती कि इस एक शब्द के साथ मेरी कितनी यादें जुड़ी हुई हैं'''' '''इतनी-इतनी कि जिनका कोई अन्दाजा नहीं है '''' '' हां, मैं कह रही थी, तुमने अपने इतने साल मुझे देखे बगैर कैसे गुजारे ? '''' '' तुम वह व्यक्ति हो, जो एक दिन भी मुझे नहीं देखते या मुझे नहीं मिलते तो बेचैन हो उठते थे, तुम्हें याद है चन्दर, एक दिन जमाने की अफवाह से तंग आ कर मैंने तुमसे बात करना छोड़ दिया था और दूसरे दिन वार्निश लगी तुम्हारी लाल आंखें देख मैं पछतायी थी कि मैं ऐसा नाहक कर बैठी'''' ' उस दिन तुमने बताया था कि रात तुमने आँखों ही में काट दी थी '''' ' इसलिए पूछ रही थी कि तुमने इतने साल '''' '''' ।'

प्रोतिमा की बात बीच में काट कर चन्दर बोला, 'मत पूछो, प्रोतिमा! वह सब मत पूछो। कोई सपने थे, जो हकीकत की प्रतीक्षा में बूढ़े हो गये '''' मर गये। प्रीति, मेरी तसव्वुर की आंखों ने अपने ही सपनों की लाशें उठती देखी हैं ''''''अपने बूढ़े सपनों की लाशें ढो-ढो कर आज मैं भी बूढ़ा हो गया हूं। यह सब सोच कर कभी-कभी सर्द लाशों की तरह मैं भी ठंडा पड़ जाया करता हूं।'

एक ठंडी आह भर कर प्रोतिमा बोली, 'हां '''' '' हां, मुझे ऐसा लग रहा है '' '' चन्दर, अपना हाथ दो '''' '''' ।'

कुर्सी पर ही थोड़ा दूर हटता-सा चन्दर बोला, 'नहीं, प्रोतिमा ! कुछ तपस्या·······कुछ स्पर्श ·····नहीं, प्रोतिमा ।'

तब अजीब-सा चेहरा बना कर प्रोतिमा बोली, 'चन्दर मानसिक तौर पर भी तुम इतने बूढे और कमजोर क्यों हो गये हो ? पवित्रता हम दोनों में आज भी है······स्पर्श भी उसी तरह पवित्र········ ।'

'प्रोतिमा ! तुम्हें शायद याद नहीं है, एक बार तुमने ही कहा था कि पवित्र स्पर्श भी कभी गलत भावना पैदा कर सकते हैं·······एक बार के गलत सपने के पश्चात्ताप ने मुझसे मेरी एक प्यारी और मीठी चीज छीन ली थी ।'

तब अपने आपको स्वाभाविक स्थिति में लाती-सी प्रोतिमा बोली, 'चन्दर, चलो, छोड़ो । लेकिन एक बात सुनो····आज जमाने की इस हालत में, जब कि प्यार के मूल्य ही बदल चुके हैं, लोग हमारे पवित्र प्यार की बात पर शायद हंसने लगें ।'

'क्यों ?'

'इस पर आश्चर्य मत करो । आज अगर मैं अपनी अंबो के सामने ही कोई ऐसी बात कह बैठूं, तो शायद पहले तो वह एक बहुत बड़ा ठहाका मारेगी और उसके बाद पूछेगी कि क्या प्यार अपने आप में एक हस्ती नहीं है, जो उसकी हस्ती को पूर्ण रूप देने के लिए उस शब्द के पहले एक 'पवित्र' शब्द का लगाना भी आवश्यक है ?'

कोई उत्तर देने की बजाय चन्दर ने केवल एक बार प्रोतिमा को घूर-घूर कर देखा, फिर कुछ देर बाद वह बोला, 'अच्छा, प्रोतिमा, जब तक तुम यहां हो, तब तक हम रोज इसी रेस्तरां में मिला करेंगे·······कल यहां से हो कर मेरे घर चलना······मैं आज मिसेज को बता दूंगा । तुम्हें देख कर वह बहुत खुश होगी ।'

चन्दर की बात बीच में ही काट कर प्रोतिमा बोली, 'देखो, आज तुम फिर वही पुराने चन्दर बनने जा रहे हो ।'

'हां, मैं चाहता हूं कि जब तक तुम यहां हो, तब तक तुम वही पुरानी प्रोतिमा रहो और मैं वही पुराना चन्दर ।'

प्रोतिमा कुछ कहना चाह रही थी, लेकिन अंबो को सामने से आता देख कुछ नहीं बोली ।

❋

रेस्तरां से बाहर निकल कर चन्दर बोला, 'अबी, तुम्हें हमारा शहर कैसा लगा ?'

'अंकल सच बताऊं, मुझे तो बहुत अच्छा लगा, बडी ही पीसफुल लाइफ है यहां के लोगों की....' कोई दौड धूप नही ''.....।'

कुछ मजाक-सा करता हुआ चन्दर बोला, 'अबी, यह तुम इसलिए तो नहीं कह रही हो कि अब तुम्हें शायद इसी शहर मे रहना है '' ?'

'नो ...... नो, अंकल। सच ''... । पहाड मुझे वैसे ही बहुत अच्छे लगते हैं।' फिर प्रोतिमा की तरफ देखती हुई अबी बोली, 'क्यों मम्मी, तुम ही बताओ, मुझे पहाड अच्छे लगते है ना ?'

प्रोतिमा ने केवल गरदन हिला कर हां कह दिया।

मार्केट मे आकर चन्दर एक जनरल स्टोर पर चढ गया, अबी तब तक सामने एक रेडी-मेड कपडे की दुकान पर कुछ पुलोवर आदि देखने लगी। जनरल स्टोर से चन्दर ने हेयर-डाई की एक ट्यूब ली प्रोतिमा की आंख बचा कर। इतने में अबी आ गयी '' चन्दर प्रोतिमा से कुछ कहने जा ही रहा था, पर बात मुंह की मुंह मे ही रह गयी।

चन्दर के हाथों मे हेयर-डाई की ट्यूब देख अबी ने आश्चर्य से एक बार उसकी तरफ देखा और फिर प्रोतिमा के चेहरे की तरफ '' अबी को लगा कि उसकी मम्मी की आंखों पर चढे मोटे चश्मे के शीशों के अन्दर कुछ चमकने लगा था। अबी ने फिर चन्दर के चेहरे की तरफ देखा, लेकिन चन्दर ने दीवार पर लगे किसी विज्ञापन को देखने के बहाने पहले ही अपनी गरदन फेर ली थी। ❋

बिना पर्दों वाला घर

वह नया-नया उस कॉलोनी में आकर रहने लगा था। इससे पहले वह जिस मकान में रहता था, वह एक तंग गली में था, जहाँ उसे जरूरत जितनी हवा नहीं मिल रही थी। उसे चाहे उसकी बीबी को यह हमेशा खटकता रहता। उन दोनों की यही राय थी कि मकान ऐसा हो, जहाँ कम से कम ठीक तरह से सांस लेने की सुविधा तो हो। वैसे भी शहर की और गलियों में हर प्रकार के लोग रहते थे। पढ़े-लिखे, अनपढ़, भद्र और फूहड़ भी।……… लेकिन यहाँ उसे लगा कि कम से कम यहाँ सब लोग पढ़े-लिखे तो हैं। हरेक के पास बोलने-चालने, रहने-जीने का एक सलीका तो है।

जब ट्रक में सामान लदवाकर वह इस कॉलोनी में आया था तब उसे लगा था कि वह किन्हीं जाने-पहचाने परिचित से चेहरों के बीच आ गया है। उस कॉलोनी में या तो उसके साथ एक ही ऑफिस में काम करने वाले लोग थे या फिर सामने वाले ऑफिस के। चाहे वहाँ के सब लोगों को वह नाम से नहीं जानता हो, लेकिन उसे लगा कि चेहरे से वे लोग भी उसे जानते हैं और वह उन्हें। कोई भी हों, लेकिन सब थे क्लर्क ही। और जहां तक नाम का संबंध था, उसने सोचा—सबों के घर के बाहर उनके नेम प्लेट लगे हुए हैं ही—धीरे-धीरे वह उनसे भी परिचित हो जायेगा।

तब सामान रखवाने-रखवाते, उसने बीवी को मकान दिखाते हुए कहा था— 'देखो, रूबी की माँ ! कितना अच्छा मकान है। और ये खिड़कियाँ देखो, कितनी बड़ी-बड़ी हैं। शहर की उन तंग गलियों के तंग मकानों में तो जैसे सांस लेने में ही तकलीफ होती थी। यहाँ इन खिड़कियों से कितनी खुली हवा आएगी।'

उसकी बीवी खुशी से मुस्कराई थी।

उसने फिर बाहर निकलकर कॉलोनी के और मकानों की तरफ देखा, करीब-करीब सब एक से मकान थे। केवल अन्दर की गई पुताई के रंग अलग-अलग थे। किसी ने हरे रंग का डिस्टेम्पर करवा रखा था—तो किसी ने नीले रंग का वार्निश ······ तो किसी ने ··· ···।

लेकिन उसे एक बात बहुत खटकी। यहाँ रहने वाले सभी लोगों ने अपनी-अपनी खिड़कियों पर बड़े बड़े पर्दे लगा रखे थे। यह उसे अच्छा नहीं लगा।

वह वापिस अन्दर चला आया। अन्दर आकर उसने बीवी से कहा—'रूबी की माँ ! एक चीज देखी तुमने यहाँ ? ········· यहाँ पर सब लोगों ने अपनी खिड़कियों पर पर्दे लगा रखे हैं ··· ··· खुली हुई हवा कैसे उनकी सांसों तक पहुँचती होगी ?'

सहज भाव से उसकी बीवी ने उत्तर दिया था—'लगाते रहें हम तो नहीं लगाएंगे। ··· ··· खुली हवा में रहने के लिए तो शहर से इतनी दूरी पर आकर हमने मकान लिया है···· ··।"

उसे लगा की बीवी ठीक कह रही थी। हाँ, हाँ, तुम ठीक कह रही हो। हम ऐसा नहीं करेंगे। वह फिर कमरे की उस बड़ी सी खिड़की की सलाखें पकड़कर बाहर खुले वातावरण को देखने लगा। जहाँ हवा तेजी से चल रही थी और जहाँ हवा के हल्के हल्के झोंकों से, पेड़ों के पत्ते ऐसे हिल रहे थे जैसे मंद-मंद कोई गीत गुनगुना रहे हों।

··· ···उसे यहाँ रहते हुए अभी दो तीन दिन ही गुजरे होंगे कि 'सी' ब्लाक वाला हेनरी उसके पास चला आया। उसके मकान को सरसरी निगाह से देखकर बोला—'अरे वाह ! तुम भी अजीब हो, यार। अभी तक तुमने अपनी खिड़कियों के पर्दे नहीं लगाए ?··· ·· अरे भाई ! देखो, हम सब लोगों ने लगा रखे हैं। बिना पर्दे तुम्हें अजीब-अजीब नहीं लगता ?'

'नहीं हेनरी ! मुझे तो कुछ भी अजीब नहीं लगता। अजीब-अजीब शायद तब लगता, जब मेरी खिड़कियां पर्दों के बुर्के ओढ़ लेतीं।' उसने गंभीरता से कहा।

कुछ देर को हेनरी चुप रहा। फिर धीरे से बोला—'डीयर !...... तुम शायद गलत हो।.........हम लोगों की किस्मत में कुछ ऐसा लिखा है कि बिना पर्दे के हम शायद नंगे दीखने लगेंगे।'—उसे लगा कि हेनरी की आवाज भारी हो आई थी। इसलिये ही शायद वह वहाँ और नहीं रुका। खुली खिड़कियों की तरफ रश्क भरी निगाहों से एक नजर देखकर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ वह वहाँ से चला गया था।

हेनरी की बात......उसकी भारी हो आई आवाज.........रश्क से भरी उसकी निगाहें.... ...उसे कुछ भी समझ में नही आ रहा था।

शाम को आफिस से लौट कर, उसने पहले हाथ मुँह धोए। फिर कपड़े बदल कर उसने कॉलोनी का एक चक्कर लगाने की सोची। वैसे शायद वह ऐसा नहीं करता। लेकिन आज दिन भर उसके कानों में हेनरी की भारी हो आई आवाज गूंज रही थी।......जो बात वह सुबह नहीं समझ पाया था, उसका कारण जानने की इच्छा उसके मन मे जोर पकड़ने लगी थी।

वह पहले मजूमदार के घर गया। उसने देखा मजूमदार की खिडकियों के पर्दों के ऊपर वाले हिस्से पर एक चिड़िया बैठ कर चहक रही थी। उसकी पूंछ रह-रह कर फुदकती और फिर वह पर्दे को रस्सी पर चोंच मारने लगती। उसे यह बडा अच्छा लगा। उसने मजूमदार को बुलाकर कहा—'मजूमदार ! तुम मुझे एक बात बताओ भाई, ये पर्दे जो तुमने, चाहे औरो ने अपनी-अपनी खिड़कियों पर लगा रखे हैं, क्या उनके पीछे कोई विवशता है, कोई मजबूरी है ?.........कल 'सी' ब्लाक वाला हेनरी, इस सम्बन्ध मे मुझे एक अजीब उलझन में डाल गया है। मैं खुले और सही रूप से सब जानना चाहता हूँ !.........देखो दोस्त।..... ...मुझसे छिपाना मत।'

मजूमदार ने एक जोरदार ठहाका मार कर कहा—'अरे इसमें छिपाना क्या है, ये तो पर्दे हैं। शब्द अपना अर्थ खुद ही समझा जाते हैं। असलियत को छिपाने के लिये पर्दे लगाए जाते हैं। तुमने क्या देखा नहीं है कि आजकल लोगों के चेहरे तक अपने नहीं रहे। उन पर मुखौटे लगे होते हैं.........पर्दे लगे होते हैं.........।' मजूमदार के ठहाके मारने से उसे लगा कि

वह शायद कोई मजाक कर रहा है, इसलिये उसने कहा—'भाई मजूमदार ! मजाक मत करो। ... मुझे इसका सही कारण बताओ। ... देखो, मैंने अभी तक अपनी खिड़कियों पर पर्दे नहीं लगाये हैं ... और ... और यहां देखता हूं, सब लोगों ने जैसे अपनी खिड़कियां ढक रखी हैं ... क्या वे यह नहीं चाहते कि बाहर की खुली और ताजी हवा अन्दर आकर उनकी घुटन को कम कर दे ?'

मजूमदार बोला—'दोस्त ! खुली हवा किसे पसंद नहीं है ? ...... सभी चाहते हैं कि ऐसी हवा चले, जिससे उनके अंग-अंग, नस-नस में गुदगुदी हो ... जिससे उनके बाल आसमान के उड़ते पक्षियों के पंखों की तरह लहराने लगें ... ।'

फिर ?'

'फिर क्या। ...... ऐसा होता नहीं है। दोस्त ! ...ये सब जादुई पर्दे हैं ... इन्हें खुद ब-खुद छोटा बड़ा होना आता है ... ...। महीने की पहली तारीखों में ये पर्दे या तो उतार दिये जाते हैं या न के बराबर छोटे हो जाते हैं और जैसे-जैसे दिन गुजरते जाएँगे, ये पर्दे बढ़ते जाएंगे। आखिर, अन्तिम तारीखों में ये पर्दे जैसे पूरी खिड़कियों को ढक देते हैं....।'

वह बोला—'मजूमदार ! ये क्या कह रहे हो तुम। ......मुझे कुछ समझ में नहीं आया।'

'आ जाएगा।' गंभीरता से मजूमदार बोला आ जाएगा—समझ में। कुछ दिन और रहलो, आ जाएगा समझ में।

वह वापिस चला आया।

उसकी उत्सुकता और बढ़ गई थी। वापिस आते आते उसने देखा कि करीम के घर पर भी पर्दे लग रहे हैं—ऐसे पर्दे जिनमें कई जगहों पर छोटे-छोटे सुराख हो गये थे। करीम को वह बहुत पहले से जानता है। दो, चार साल तक उन्होंने एक ही अनुभाग में काम किया था। उसने आगे जाकर करीम का द्वार खटखटाया। दरवाजा खोलकर करीम बाहर आ गया। उसे देखकर बोला—'आओ, आओ, यार। अन्दर आ जाओ...... आज कैसे रास्ता भूल गये हो ?'

वह बोला—'हां करीम भाई ! मैं रास्ता भूल गया हूं......भटक गया हूं ... तुम मुझे एक बात बताओ......।'

'पूछो, दोस्त ! पूछो।'

'तुमने देखा है ''''''तुम्हारी खिड़कियों के पर्दों में छोटे-छोटे सूराख हो गये हैं ?'

'हां हो गये हैं।'

'फिर तुम उन्हें उतार क्यों नहीं फेंकते ?'

फीका मुस्कराकर करीम बोला—'यही तो मजबूरी है, यार अब ! पर्दों में छेद हो गये हैं, उसका दुःख नहीं है''''''''खुशी है—इस बात की कि ये सुराख इन्सान की आंखों से छोटे है, इन्सान इनमें ठीक से झांक नहीं सकता।'

'तो करीम भाई ! इन्सान की आंखो से बचने के लिये तुमने घुटन स्वीकार कर ली है ?'

न चाहते हुए भी करीम ने एक ठहाका मारा। बोला-—'दोस्त ! यहां आकर हरेक को घुटन स्वीकार करनी होती है।''''''''कई बार हमें हालात से समझौते करने होते हैं।''''''''अब तुम इसे एक समझौता मान लो या घुटन को स्वीकार करने की मजबूरी।''''''''कोई फर्क नहीं पडता, दोस्त।'

'ये क्या कह रहे हो, करीम !''''''''मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा है।' वह बोला।

'आ जाएगा।''' ''''अब तो आखिरी तारीखें ही चल रही हैं'''''' अब समझ में आ जाएगा।'

असमंजस की स्थिति मे वह वहां से भी चला गया।

जब वह 'सी' ब्लाक के पास से गुजर रहा था। उसने सुना—गुप्ता के घर में कोई बच्चा कह रहा था, 'मां' ! आज क्या सब्जी नही बनाई तुमने ?'

फिर अन्दर से शायद उसकी मां की आवाज आई—'धीरे बोल रे। ''''''''तुम्हें कितनी बार कहा है कि ऐसी बातों को पूछने से पहले देख लिया कर कि पर्दे बन्द हैं कि नहीं।'

'पर्दे बन्द हैं, मां !'—बच्चा बोला।

'हां, अब पूछ''''''''सब्जी के लिये पूछ रहा था ?'''''' नहीं बनाई। शायद उसकी मां की आवाज थी।

'क्यों नहीं बनाई ?' बच्चा बोला।

'देख, बेटे ! सच तो यह है कि अनाज ही खतम हो गया था, तेरे बापू कहीं से दस रुपये उधार लेकर तो अनाज लाए थे, फिर सब्जी कहाँ से····· ···।'

बच्चा चुप हो गया। उसके लिये शायद यह कोई नई बात नहीं होगी या फिर यहाँ और लोगों की तरह वह एक बच्चा भी समझौतों का आदी हो गया होगा।

और उसे भी लगा कि यह कोई ऐसी विशेष बात नहीं थी। हम सब क्लर्क लोग हैं, ऐसी परिस्थितियों से तो करीब-करीब हम सबको गुजरना होता है·········तो फिर ऐसी बातों से पर्दा क्यों ?

वह आगे बढ गया और फिर कुछ सुनकर रुक भी गया। यह मीरचंदानी का घर था। वैसे वह वहां नहीं रुकता। लेकिन उसे कुछ जोरों के ठहाके सुनाई दिये थे। उसने देखा वहां भी खिडकियों पर पर्दे लगे हुए थे।

अन्दर से शायद मीरचन्दानी की आवाज आई - 'सुनो ! सुबह तुमने गोपाल को तलरेजा के घर भेजा था ना पांच रुपये लेने के लिये ·· तो उसकी बीबी ने क्या कहा था कि कल ही तो उनके एक दोस्त, उनसे सौ रुपये उधार ले गये हैं ·· ····हा ·· हा ·· हा ··· । अरे, सब झूठ था वह। ······ आज मैंने ऑफिस मे देखा, एक सरदार तलरेजा को डाट रहा था कि उसने टाइम पर ब्याज नहीं पहुँचाया। · हा · हा ···हा ·· अब तुम ही सोचो, जो खुद ब्याज पर पैसा ले रहा है, वो भला क्या किसी दोस्त को सौ रुपये उधार दे सकता है ? ····झूठे कहीं के !'

तब एक स्त्री स्वर सुनाई दिया—'वो तो ठीक है लेकिन हमारी बात भी तो नीची हो गई। तलरेजा की बीबी क्या सोचती होगी कि बडे बने फिरते हैं······ लेकिन पर्स मे है तो पाच रुपये भी नहीं।'

तब मीरचन्दानी बोला, 'तुम भी भोली हो रानी ! ऐसा कैसे होने देता ?·······अरे, अभी वही तो गया था मैं।·······मालूम है मैंने उसे क्या कहा ?'

'क्या कहा ?' स्त्री स्वर।

कहा—'अरे यार ! हमारी बीबी भी मूर्ख है। मैं उसे कह गया था कि काली पेण्ट की जेब में पचास-साठ रुपये रख जाता हूँ, जरूरत पडे तो ले लेना·······लेकिन उसने शायद सुना नहीं।······ फालतू ही मे आपको तकलीफ दी।'

'लेकिन यह तो झूठ बोल आए ना आप।' फिर वही स्त्री स्वर।

'झूठ ?"""हा"""हा"""हा"""अरे, रानी ! दुनिया झूठे बुर्कों और सफेद कपडो मे ही तो ढकी हुई है और फिर जो झूठ सहारा बन जाए, वह सच से भी बढकर होता है, रानी !'

"""""""उसने आगे सुनना नही चाहा। वह मन ही मन सोचने लगा कि उसने मकान बदलकर बडी गलती की कि इससे वह घुटन अच्छी थी कि अब वह कहां आकर फंस गया है, जहां सफेद कपडो के पीछे झूठ इन्सान का सहारा बना हुआ है"""""""जहां पर्दों के पीछे झूठे दिखावे और मजबूरियां पल रही हैं।

'नही, नही, नही।'—यह सब उसे स्वीकार नही था। उसकी इच्छा हुई कि वह जाकर कैंची ले आए और सब लोगो की खिड़कियों पर लगे हुए पर्दो को चीर फाड दे। और फिर अन्दर जाकर सब लोगो के सफेद कपड़े फाड़ दे और चिल्ला चिल्ला कर कहे—'फाड़ डालो, इन सफेद कपड़ों को, जिनके पीछे झूठ पल रहा है"""""""इससे हम नगे अच्छे है"""""""सच्चाई से बढकर सफेद कपड़ा नही है।'

लेकिन वह चुपचाप अपने घर की तरफ चला आया।

उस रात और उसके बाद कुछ रातो मे वह ठीक से सो नही पाया।

फिर कुछेक दिनो तक वह शान्त रहा।

शायद वह किसी चरम सीमा की प्रतीक्षा में था। वह देखना चाहता था कि कब तक इन झूठे पर्दों की सच्चाई पर जीत होती रहेगी।

उसे इस बात पर भी आश्चर्य लगा कि जैसे-जैसे आखिरी तारीखें आती गई, लोगो की खिड़कियो के पर्दे ऊँचे होते गये। तब उसे मजूमदार के शब्द याद आ गये कि ये जादुई पर्दे हैं"""""""। मजूमदार की उस बात का अर्थ तब वह समझ नहीं पाया था, लेकिन आज उसे लगा कि मजूमदार ठीक ही कह रहा था।

"""""तब बिल्कुल आखिरी तारीख आते-आते उसने देखा कि पर्दे इतने ऊँचे हो गये कि इन्सान का झांकना तो दूर, सूरज की किरण भी अन्दर नहीं आ पा रही थी।

वह सोचने लगा—'इस तरह तो हम सब लोग नई रोशनी से वंचित रह जाएंगे"""""""घुट-घुटकर मर जाएंगे।'

उसने देखा, पूंछ फुदकाती हुई चिड़िया हर खिड़की के पास आती, और पर्दों को ऊँचा हो आया देख किसी पेड़ की टहनी पर चढ़ जाती और उदास-उदास सी शायद उनके खुलने का इन्तजार करने लगती।" "'उसे यह सब अच्छा नही लगा।

""""दूसरे दिन जब शाम को वह आफिस से लौटा तो उसने देखा कि उसके और साथी हाथो मे मिठाइयो के पैकेट, दौने, बिस्कुट, ये वो लेते आ रहे थे और अपनी साइकिलो की घंटिया बजाते हुए, खुशी-खुशी अपने घर मे जा रहे थे। मंद-मंद मुस्कानें उनके होठो पर खेल रही थी।

सब लोगो को खुश देख वह भी खुश होने लगा। यही तो वह चाहता था कि क्या कुछ भी हो जाए, लेकिन हमारी मुस्कानें छीनने का हम किसी को अधिकार न दे।

फिर उसके आश्चर्य की सीमा ही न रही, जब उसने देखा कि सबो की खिड़किया खुली थी, जिन पर पर्दे नही थे। हवा ऊ-ऊ करती जिनके कमरो मे जा रही थी। चिड़िया अपनी पूछ फुदकाती हुई सलाखो के बीच बैठी चुन-चुन कर कुछ खा रही थी। उसे बहुत खुशी हुई। यही तो। हा, यही तो।

तब उसने मेहता से पूछा—'मेहता! एक बात तो बताओ आज ऐसी क्या बात हो गई है कि तुम लोगो ने अपनी-अपनी खिड़कियो के पर्दे उतार दिये हैं?'

सहज भाव से मेहता बोला—'कुछ नही।"" "वैसे ही ""। आज पहली है ""हर पहली या दूसरी को हम लोग पर्दे उतार देते हैं। उस दिन हम लोग पर्दों को धोते हैं"" या धुलवाने भेज देते हैं।' उसे साफ लगा कि यहाँ मेहता ने झूठ का सहारा लिया है।

वह कुछ बोला नही। केवल फीका मुस्करा दिया। उसने सोचा—जिस चरम सीमा या जिस उचित समय की वह प्रतीक्षा कर रहा था, वह शायद आ गया है। " ""आज वह इसका फैसला करके ही रहेगा।"" ""ये खिड़कियो पर पर्दे, ये चेहरो पर मुखौटे, अब इन सबके अस्तित्व को समाप्त कर देता है।

कुछ कर दिखाने का साहस बटोरकर, सन्ध्या की कुछ देर बाद, उसने सबो के द्वार खटखटाए। जो भी द्वार खोलता, वह उसे कहता—'मुझसे

कोई सवाल मत पूछना । बस, अपने-अपने पर्दे लेकर तुम सब सामने वाले मैदान में पहुँच जाओ ।'

आज पहली तारीख थी। किसी का मूड खराब नहीं था। सबों के चेहरो पर मुस्कान खेल रही थी ......या फिर न जाने उसकी बात कहने के लहजे में ऐसा क्या जादू था कि सब लोग मंत्र-मुग्ध से हुंकार में गर्दन हिलाते गये ।

........मैदान में पर्दों के ढेर लग गये ।

सब लोग उसकी तरफ देखने लगे । तब उसने सब लोगों की तरफ देखकर, जैसे भाषण देने के अन्दाज में कहा—'दोस्तो ! ये सब पर्दे या तो मैले हो गये हैं ......या फट गये हैं.... .. या फिर इनमें छेद हो गये हैं । ...... वैसे हर व्यक्ति यह महसूस भी करता है कि ऐसे पर्दे जो कभी मैले हो जाते है या जो फट जाते है · ....किसी काम के नही होते ।.... ...किसी ने ये पर्दे इसलिये लगा रखे है कि वह बच्चों की ठीक से परवरिश नही कर पा रहा है या उसके ऊपर बहुत कर्ज हो गया है । किसी के घर में अनाज नही है और किसी से दस रुपये उधार लेकर वह अनाज ले आया है। किसी के घर मे अनाज है तो सब्जी नही है। उसने पर्दे इसलिए लगाये हैं कि बिना सब्जी के रोटी खाता हुआ उसे कोई देख न ले। किसी ने भूठा बहाना देकर किसी और से पाँच रुपये मंगवाने की कोशिश की है, लेकिन उसे वहाँ से पैसे न मिलने से निराशा हुई है और उस निराशा को वह पर्दे मे ढके हुए है।'

उसने देखा—उसके सभी साथियो की गर्दनें नीची हो गई ।

तब वह फिर बोला—ऐसे तो दूरियाँ बढती जाएँगी । हमें तो एक दूसरे के करीब आना है । ऐसी बातो का हल ढूंढना है....छिपकर, दुबककर, घुटनों में मुँह छिपाकर नही रहना है । नहीं, इसकी कोई जरूरत नही है । सब अपनी-अपनी गर्दनें ऊँची करलो ।....हम सब एक ही नाव के यात्री हैं ...हम सब क्लर्क है । एक-दूसरे की हालत हम भली-भाँति जानते हैं— फिर ये पर्दे किस बात के ?....क्या छिपाना ? आज के बाद हम अपनी खिड़कियों पर पर्दे नही लगायेंगे । चिल्लाकर कहो नही लगायेंगे ।'

उसने देखा—सबो की आँखें भर आई थीं, मुस्कान उनके होठों पर खेलने लगी थी ।

उसे खुशी हुई कि किसी ने भी उसकी बात का विरोध नहीं किया,

कि सदियो से बहती दिखावे के इस झूठ की धारा को उसने रोक लिया कि अब नयी सच्चाई सामने आयेगी ।

तब उसने फिर कहना शुरू किया, ये बहुत हैं ये आँसू उस खुशी और सच्चाई के हैं जो हमे एक दूसरे के करीब लाएँगे ।'

फिर वह आगे बढ गया । पर्दों के रखे हुए ढेर को उसने एक बार देखा । फिर जेब से माचिस निकालकर उसने पर्दों मे आग लगा दी ।

तब सब लोगो ने देखा पर्दे जल रहे थे और उनमे से एक नई रोशनी जनम ले रही थी और जैसे-जैसे रोशनी तेज होती गई, वैसे-वैसे वहाँ खडे हुए सब लोग एक दूसरे के करीब आते गये ।

फिर सभी ने अपने चेहरे नोच-नोच कर मुखौटे उतारकर जलती हुई उस नई रोशनी में फेंक दिये ।

उस रात सबो को नीद आई ।

... सुबह जब सब लोगो की नीद टूटी तो उन्होने देखा कि उनकी खिड़कियो की सलाखो के बीच कई चिड़िया पूँछ फुदका कर चहक रही थी ।

कोसा जाने वाला पल

तब फिर बाहर आकर उसे ऐसा लगा कि वह व्यर्थ ही यहाँ चली आई थी।

वैसे, दो चार दिन तक तो वह सोचती ही रही कि उसका वहाँ जाना ठीक भी होगा कि नहीं।

लेकिन उसका मन उसे इस बात के लिए बार बार विवश कर रहा था कि चाहे एक बार ही सही, उससे मिल तो आऊँ। यह हो सकता है कि उसे अच्छा न लगे, लेकिन ऐसी हालत मे वह कह देगी कि—कभी कभी परिचित लोग भी तो एक दूसरे से मिलने चले जाते हैं।

चलो, ऐसे ही सही।

पति से अलग हुए उसे कुछ साल हो गये। तब से कई बार उसका मन चाहा था कि चाहे एक बार ही सही, वह अपने उस पति से मिल तो ले जिसके साथ बैठकर उसने भविष्य के कई सपने संजोये थे।

वैसे, अलग होने पर शुरू-शुरू के दिनों में उसे लगता रहा था कि वह उसे जरूर लिखेगा या शायद कभी मिलने ही चला आये। लेकिन उसने न तो कुछ लिखा और न कभी मिलने ही आया। यहां तक कि उसका

मित्र एक बार उससे मिलने आया था। लेकिन वह भी उस मुलाकात में बहुत औपचारिक सा रहा। जितनी देर तक वह बैठा बातें करता रहा, उतनी देर तक उसे लगता रहा कि जरूर उसके पति के सम्बन्ध में या उनके टूटते हुए रिश्ते के बारे में वह कुछ न कुछ बात करेगा। और फिर वह तब उससे पूछ लेगी कि वह क्या कभी उसे याद भी करता है ? या क्या उसको कभी उससे मिलने की इच्छा भी होती है ?...... लेकिन उसके पति का वह मित्र बातों के अन्तिम वाक्य तक बहुत औपचारिक सा ही बना रहा।

तब न जाने क्यों उसे लगा था कि वह जैसे उसे टीज़ करने को आया था।

शाम के करीब छह बजे वह उसके फ्लैट पर पहुंची। फ्लैट के बाहर ही माली उसे दीख गया। उसे खुशी हुई कि चलो घर के बाहर वाले बगीचे का जो उसने एक सपना संजोया था, वह बिखरा नहीं है। वहां वही माली काम कर रहा है जिसे उसने ही नौकरी पर लगाया था।

आगे बढ़कर उसने माली को बुलाया— 'धर्मा !'

एक क्षण को माली चौंका। लेकिन फिर झट से उसने घर की उस मालकिन को पहचान लिया, जो पिछले कुछेक वर्षों से रूठकर उस घर से चली गई थी। आश्चर्य और हर्ष से माली बोला-- 'बीबीजी ! आप !'

'कैसे हो, धर्मा !' —ऐसा पूछते हुए उसे खुद ही लगा कि उसके बोलने के ढंग में एक अजीब सा स्नेह भर आया था।

बड़े आदर से तब माली बोला—'अच्छा हूँ, बीबीजी !'

वैसे वह शायद माली से कुछ और बातें करती या फिर उसकी बीबी और बच्चों के सम्बन्ध में कुछ पूछती लेकिन उसे वह सब औपचारिक और समय खराब करने जैसा लगा। इसलिये तुरत ही उसने पूछ लिया—'वे घर पर हैं।'

'हां, बीबीजी ! - हैं।'

'उनसे जाकर कहो – मैं आई हूं।'

'बहुत अच्छा, बीबीजी !'— कहकर माली फ्लैट के अन्दर चला गया।

तब तक वह बगीचे को देखने लगी, उसे लगा धर्मा ने काफी नये नये प्रकार के फूल लगा दिये थे। आस-पास कुछ नये डिज़ाइन के गमले भी लगे

थे, जो तब यहाँ नहीं थे, जब वह यहाँ की इस घर की या इस फ्लेट की मालकिन कही जाती थी।

तब फिर माली ने आकर उसे कहा—'बीबीजी !······ मालिक ने कहा है — आप अन्दर आ जाइये !'

'अच्छा !'— कह कर वह अन्दर चली गई।

अन्दर गई तो देखा, वह पलंग पर लेटे लेटे कोई पुस्तक पढ रहा था। बहुत ही धीमे स्वर में वह बोली— 'कैसे हो ?'

'हूँ ?······ अच्छा हूं !·······आओ, बैठो !'

बैठने से पहले उसने इधर उधर झाँका कि कहाँ बैठना ठीक रहेगा। फिर वह चुपचाप पलंग के पास वाले सोफा पर बैठ गई।

'कब आई हो ?'

'दो चार दिन हुए हैं !'—ऐसा कहते हुए उसे थोडी हिचकिचाहट हुई कि कहीं वह शायद ऐसा न कह दे—दो, चार दिन मे आज ही फुरसत मिली है मिलने की।

लेकिन उसने ऐसी कोई बात नही कही। पूछा सिर्फ इतना ही— 'कहाँ ठहरी हो ?'

पहले उसने सोचा कि झूठ-मूठ ही वह किसी रिश्तेदार का नाम ले दे। लेकिन फिर कुछ सोचकर उसने सच सच बता दिया—'ठहरने को तो किसी स्कूल में ठहर जाती लेकिन कुछ अच्छा नही लगा·······इसलिए एक होटल मे ही ठहर गई हूँ।'

'किसी स्कूल मे तुम्हारे ठहरने की बात मैं नही समझा।'—पति ने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा।

'टीचर हो गई हूँ, आजकल। बच्चो का कैम्प इस शहर मे लगना निश्चित हुआ था, सो उनके साथ ड्यूटी लग गई······ठहरना तो वैसे कैम्प में ही था। लेकिन झूठ-मूठ मैंने कह दिया कि यहा मेरा एक अपना घर भी है।'—ऐसा कहते हुए उसने एक बार पति के चेहरे की तरफ देखा कि कहीं उस पर शायद इस बात की कोई प्रतिक्रिया हुई हो। लेकिन वह सहज ही बैठा था। केवल हाथ वाली पुस्तक को उसकी तरफ बढाता हुआ वह बोला— 'इसे जरा वहा टेबुल पर रख देना।'

किताब हाथ मे लेकर ऐसे ही बिना किसी मतलब के वह उसे उलट-पलट कर देखने लगी। किताब के नाम और स्केची से उसे लगा कि शायद वह कोई रोमांटिक उपन्यास था।

तब कुछ न कुछ कहने के लिये वह बोली—'कुछ दिन पहले मनीष जी यहाँ आए थे। शायद किसी इन्टरव्यू के संबध मे·· ··।'

उसकी बात को पूरा होने से पहले ही वह बहुत सहज ढग से बोला—'हाँ, मनीष ने बता दिया था कि वह तुमसे मिला था······।'

तब बीबी की उत्सुकता जैसे कुछ और बढी--'मेरे लिए क्या कहा उसने ?'

'कहता क्या—बस, ऐसे ही······ऐसे ही थोड़ा बता रहा था कि तुम पहले से दुबली हो गयी हो।'

बीबी को उसके पति को बताई गई मनीष की वह बात बडी सुखद सी लगी। बोली- क्या तुम्हे ऐसा लगता है कि मैं सच मे ही बहुत दुबली हो गई हूँ··· · ।'

'हूँ ?'—फिर जैसे इस सदर्भ से अलग हटने के लिये वह बोला—'वो जरा मेरा सिगार उठा देना।'

वह समझ गई कि पति जान-बूझकर बात को टाल गया। उसने चुपचाप सिगार उठाकर पति को दे दिया।

तब, उसे सिगार सुलगाते देख बीबी को शादी के शुरू-शुरू के दिनो की एक बात याद हो आई, जब एक बार उसके पति ने उसे कहा था कि उसके एक सपने को साकार होने मे शायद अभी बहुत बरस लग जाएगे। उसने सोच रखा था कि जब वे दोनो बूढे हो जायेंगे तब सर्दी के दिनो मे वे कश्मीर या शिमला या नैनीताल या मसूरी या ऐसे ही किसी हिल-स्टेशन जाएगे··· ·· और रात-रात मे खूब गर्म कपडो मे लैस होकर हल्के से नशे के बतौर थोडी सी शराब पीकर घूमते रहेगे। रास्ते मे वह बीबी के कमर के गिर्द बाह डालकर चलेगा। और बीच-बीच मे बीबी के ओवर कोट पर लगी बर्फ की परतो को उंगली के इशारे से झाडता रहेगा।

·· ·· वह बोली—'याद है तुम्हें···· ·· एक बार तुमने किसी हिल स्टेशन के बारे मे कहा था कि हम सर्दियो में कभी चलेंगे····और····।'

सिगार से एक हल्का सा कश लेकर तब उसका पति बोला-'हा, याद है। ··· ·· लेकिन अब शायद उस सपने को इन्तजार करना नही होगा··· ··· ।'

'क्यों ?'''''''''तो क्या आपने ''''''''!'—वह फिर रुक गई। उसे लगा कि बोलने में वह एक शब्द की गलती कर गई थी। अब तक वह अपने पति से 'तुम' कहकर बात करती आई थी। लेकिन आज अचानक इस क्षण उसके मुंह से 'आप' शब्द कैसे निकल गया। अपने आपको दुरुस्त करती हुई वह बोली—'तो क्या तुमने हमेशा के लिये सोच लिया है कि''''''''!' यह कहते हुए उसे खुद को ही लगा कि उसकी आवाज जैसे कुछ-कुछ कांप सी गई है।

उत्तर देने की जगह पति ने केवल मुंह से थोड़ा धुंआ निकाला। उसके मुंह से धुंए को निकलता देख उसने सोचा कि शायद अब वह कुछ बोलेगा।

लेकिन कुछ बोलने की बजाय पति ने केवल उसकी आंखों में आंखें डालकर एकटक उसकी तरफ देखा। तब उसे लगा कि पति से वह आंख नहीं मिला पा रही थी। उसने अपनी आंखें नीची कर लीं।

कुछ देर को दोनों कुछ नहीं बोले।

तब वह सोफा से उठकर थोड़ी देर को इधर-उधर टहलने लगी। फिर वह बालकनी मे चली आई। यहां वहां झांककर उसने देखना चाहा कि शायद कहीं कोई पड़ोसी/पड़ोसिन अपने फ्लैट की बालकनी में खड़ा/खड़ी हो और वह उसे देख ले कि वह आई हुई है। या यों ही समझ ले कि वह फिर आ गई है।

लेकिन सभी बालकनियां खाली या सूनी-सूनी सी थीं। केवल चैटर्जी वाले फ्लैट की बालकनी में उसने एक बच्चे को खड़ा हुआ पाया। बच्चे के बाल कुछ ऐसे थे कि वह यह तय नहीं कर पा रही थी कि लड़का था या लड़की।

उसे ध्यान आया कि जब वह यह घर छोड़कर चली गई थी तब मिसेज चैटर्जी अभी प्रेग्नेन्ट ही थी।

वह फिर अन्दर चली आई। तब तक उसके पति ने फिर वह उपन्यास उठा लिया था। सिगार सिर्फ उसकी उंगलियों की पकड़ में फंसा हल्का-हल्का धुंआ उगल रहा था।

तब उसने पति से पूछा—'यह मिसेज चैटर्जी की डिलीवरी कब हुई? क्या लड़का हुआ है उसे?'

पति शायद उपन्यास के किसी ऐसे स्थल पर पहुँच गया था, जहाँ से अलग हटकर कुछ बोलना उसे अरुचिकर सा लगा। बडा ही अजीब सा मुँह बनाता हुआ वह बोला—'क्या पता।'—फिर उसे लगा कि शायद बीबी कोई और सवाल पूछ बैठे, इसलिए खुद ही आगे बोला—देखो मैं तुम्हे एक बात बता दूँ—कि तुम थी—जब तक पडौस की औरतें वगैरह इस घर मे आया करती थी। अब चूँकि मैं अकेला हू इसलिए न तो कोई इस घर मे आती है या आता है एण्ड नॉर आई बॉदर कि किसे क्या हुआ है और किसे क्या होना है।'

पति के बात करने के लहजे की वह कड़ुवाहट उसे अच्छी नही लगी। उसे लगा कि उसके पति के स्वभाव में कोई विशेष अन्तर नही आया है। आज भी वह वैसा ही अनसोशियल सा है।

ढीठ।

फूहड।

तब भी वह ऐसा ही था।

उसे याद आया कि उनके बीच झगडो के पीछे का एक कारण उसके पति का ऐसा फूहड स्वभाव भी था।

शादी के शुरू शुरू के दिनो मे तो वह कुछ हँसमुख सा बना रहा, लेकिन जैसे जैसे दिन खिसकते गये वैसे-वैसे बीबी को लगने लगा कि वह हँसी सब दिखावा मात्र थी—एक ओढी हुई हँसी।

उसे ध्यान आया, तब एक बार उसकी सास ने उसे कहा था—'बहू! अच्छा हुआ, तुम इस घर मे आ गई हो। तुमने आकर मेरे बेटे को आदमी बना दिया है। वरना इस छोकरे का कोई ठिकाना ही नही था। सुबह आठ बजे घर से चलता था और रात ग्यारह—ग्यारह बजे तक घर लौटता था। जाने दिन का खाना भी वहा खाता था। अब तुम आई हो तो देखो, आफिस से सीधा घर तो चला आता है।'

लेकिन वह तब था।

अब तो उसे लग रहा है कि ऐसी बात सोचकर वह मन ही मन अपने पति पर जैसे अहसान जता रही है।

उसके बाद तो कितना कुछ बदल गया है। मांजी ऊपर वाले को प्यारी हो गई। देवर अब वहाँ विदेश में है। उसने वहाँ किसी नीग्रो

लड़की से शादी कर ली है। और वह……''वह भी पति से अलग रहने लगी है।

फिर वह बोली—'अकेले में बोरियत तो लगती होगी ?'

'क्यों ?'

'वो………ऐसा है कि अब माँजी भी नहीं है………और राकेश भी अब क्या वापिस आना है, जब उसने वहीं कहीं शादी करली है……… तो अकेले में तो बोरियत……!'

'नहीं कोई बोरियत-वोरियत नहीं लगती ।'—उसे लगा-वही फूहड़ जवाब !

वह कुछ नहीं बोली। कुछ देर को दोनों ही चुप रहे।

तब फिर पति ही बोला— इस टीचरी-वीचरी से कितना कुछ मिल जाता है ?'

'यहां कोई ढाई-तीन सौ ।' महज उत्तर देने के कारण उसके मुंह से ये शब्द निकले वरना उसे लगा कि पति का इस तरह उसकी नौकरी को 'टीचरी-वीचरी' कहना उसकी उपेक्षा करना ही था।

तब फिर पति ही बोला— हां sss ! बुरा नहीं है……''काम तो आराम से चल जाता होगा। ……बाप को भी अपनी कमाई से कुछ देती होगी ?'

'हां !'

तब वह एक ऐसे अजीब ढंग से मुस्कराया, जो बीबी को अच्छा नहीं लगा। लेकिन उसके ऐसे मुस्कराने से उसकी मूंछों मे आये फैलाव से बीबी को लगा कि उसके पति की मूंछें भी कुछ कुछ सफेद होने लगी थीं।

जैसे बात का सन्दर्भ बदलने को वह बोली—'मनीष जी जब आए थे, तब मैंने सोचा कि वे जरूरत मुझसे पूछेंगे कि हम दोनों के अलग हो जाने का क्या कारण था। लेकिन काफी देर तक की बातों मे, उन्होंने तुम्हारे और मेरे संबंध में एक भी बात नहीं की……तुमने उनको सब बता दिया था क्या ?'

लापरवाही से वह बोला—'नहीं मैंने तो नहीं बताया……वैसे बताने को उसमें था ही क्या ? ……कोई बहुत बड़ी बात होती तो बता भी देता। ……बचकानी सी बात उसे क्या बताई जाए……।'

तब फिर बीबी को लगा कि उसका पति फूहड़ का फूहड़ ही रहा। जिस बात को लेकर पति-पत्नी अलग हो गये हैं उस बात का उसके लिए जैसे कोई महत्व ही नही था।

वह फिर बोली— मनीष के चले जाने के बाद मैंने एक चिट्ठी भी लिखी थी...... ।'

पति बोला— 'हाँ, मिल गई थी वो ! .. .. लेकिन मैंने जान बूझकर उत्तर इसलिये नही दिया कि ऐसा करने से शायद वह बात एक सिलसिले मे बदल जाती और सच तो यही था कि तुम्हारे घर छोडकर चले जाने के बाद, ऐसा सिलसिला तुम्हारे या मेरे अहम् को कही न कही जाकर झुकाता ही.... . ।' बीबी को पति की यह बात अच्छी तो नही लगी। लेकिन बात को किस ढग से उसने 'पुट-अप' किया था, वह ढग उसे कुछ शऊरी सा लगा।

तब अचानक उसकी दृष्टि सामने लगे शराब बनाने वाली एक कम्पनी के कैलेण्डर पर उठ गई और उसे याद आया कि कुवारेपन से ही यार लोगो के साथ उसके पति को पीने की आदत थी। शादी के बाद उसी ने आकर धीरे धीरे उसे शराब पीने के गन्दे बुरे परिणामो का डर बताकर पीने-पिलाने की उसकी आदत छुडवा दी थी।

और आज कमरे मे शराब बनाने वाली किसी कम्पनी का कैलेण्डर देखकर उसके मन मे एक आशका सी उठी। बहुत धीमे स्वर मे पूछा उसने— 'ये क्या शराब-वराब फिर से पीनी शुरू कर दी क्या ?'

'क्यो ? .. ... ऐसा पूछने से तुम्हे क्या मिलना-मिलाना है ?'

उसे लगा कि पति ने बडे तल्ख स्वर मे यह बात कही थी। तब उसका सदेह निश्चय मे बदल गया कि— हाँ, पीता होगा। उसे लगा कि अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए और अगले का मुँह बन्द करने के लिये तल्खी से बोलना कुछ काम कर जाता है। और उसके पति ने भी ऐसा ही किया है।

पति शायद अब भी अपने उत्तर से खुद ही सतुष्ट नही था। इसलिए फिर बोला— मेरी समझ मे नही आता कि तुम अब भी इस घर की दीवारो मे मोह क्यो अटकाए हुए हो ?'

वह जैसे खो सी गई थी। इसी दीवार पर पहले जब वह यहाँ थी उसने 'मरफी' का कैलेण्डर लगा रखा था। 'मरफी' के कैलेण्डर का बच्चा उसे अपने कुवारेपन से ही अच्छा लगता रहा था।

शादी के बाद, जिन दिनों मिसेज चैटर्जी प्रैग्नैन्ट हुई थीं, तब उसने भी सोचा था कि जब उसे अपना बच्चा होगा तो वह उसके बाल मरफी के कैलेण्डर वाले बच्चे जैसे रखेगी। बालों के आखरी हिस्सों में गोल गोल छल्लों जैसे कर्ली-हेयर।

और आज वहाँ 'मरफी' के कैलेण्डर की बजाय शराब की बोतल वाला कैलेण्डर उसे अच्छा नहीं लग रहा था।

पूछा उसने—'विजय भैया ने इस साल 'मरफी' का कैलेन्डर नहीं दिया ?

'मैं गया ही नहीं लेने।'

पहले उसकी इच्छा हुई कि वह 'क्यों ?' जैसा कोई सवाल पूछे लेकिन उसे पता था कि एक बार फिर कोई तल्ख जवाब ही सुनने को मिलेगा इसलिये वह भी चुप रही।

थोड़ी देर बाद पति उठकर बालकनी की तरफ चला गया। बीबी ने तब तक तिरछी निगाह से पास वाले कमरे की तरफ देखा। उसने देखा, उस कमरे की दीवार से वह पेंटिंग लापता थी, जो वह एक बार दिल्ली में हुई एक आर्ट एग्जीबीशन से खरीद लाई थी।

वह भी उठकर बालकनी की तरफ चली गई। उसकी इच्छा हुई कि एक बार फिर वह अपने पति के साथ वैसे ही सटकर खड़ी हो जाए, जैसे अलग होने से पूर्व वे अक्सर बालकनी में खड़े खड़े इस बात की गिनती करते थे कि देखें, पन्दरह मिनिट के भीतर भीतर कितनी कारें रास्ते से गुजर जाती है।

लेकिन वह कुछ दूरी पर रेलिंग के सहारे आकर खड़ी हो गई। एक बार उसने इधर उधर दूसरी बालकनियों की तरफ देखा कि शायद अब ही वहाँ कोई खड़ा हो और इन दोनों को बालकनी पर एक साथ खड़ा पाकर मन में कोई एक गलतफहमी हो पैदा कर ले।

लेकिन कहीं भी उसे कोई दिखाई नहीं दिया। चैटर्जी वाली बालकनी पर खड़ा बच्चा भी अब वहाँ नहीं था। केवल वहाँ कोई एक गुड़िया और एक अंडरवेयर पड़ा हुआ था।

वह थोड़ा आगे बढ़ गई। पति के नजदीक आकर उसने पूछा — 'वो पेंटिंग तुमने क्या कहीं ''''''और जगह लगा दी है ?'

'कौन सी ?'

'जो··· जो मैं दिल्ली से खरीद लाई थी।'

'अच्छा··· ··· वो ······वो !'—उसके बाद उसने एक ठहाका मार कर कहा— 'वो तो मैंने अपने एक डाक्टर दोस्त को दे दी।··· ···मुझे तो कुछ पता नही ··· ·· लेकिन वो ही कह रहा था कि उस चित्र पर पिकासो के किसी एक चित्र का बहुत प्रभाव था ·· प्रभाव क्या था, उसकी कॉपी बना रहा था ··· ·· किसी का हाथ कहाँ तो किसी का पैर कहाँ····!' बीबी ने देखा, ऐसा कहते हुए पति ने अजीब सा मुह बना लिया था। फिर जैसे कोई व्यग्य करता हुआ पति बोला—'तो मैंने उसे कहा कि ले जाओ, अपने आपरेशन थियेटर मे लगा देना··· ···और नीचे शीर्षक दे देना—पोस्ट मार्टम · ··· क्यो ?-वह एक बार फिर फूहड ढग से हँस दिया।

बीबी को लगा जैसे यहा पति ने उसका या उसकी पसद का अपमान किया है।

वही खड़े-खड़े बीबी का हाथ अचानक पति के हाथ से छू गया। एक अजीब सी सुरसुरी उसके बदन मे उठी तो वह हैरान रह गई। उसे लगा कि वह एक ऐसी सुरसरी थी जो किसी अजनबी के स्पर्श से ही उठ सकती थी। तब फिर उसे खुद पर ही आश्चर्य लगने लगा कि अपने ही पति के प्रति यह ऐसी अजनबी की सी भावना क्यों आ गयी थी उसके मन मे ?

तब उसने देखा पति खुद ही थोडा दूर खिसक लिया था।

वह कही थोडा और खिसक जाए या कही वापिस कमरे मे लौट जाए, उससे पहले वह खुद ही अन्दर चली गई।

कमरे के द्वार के नजदीक आकर उसके कदम स्लीपिंग-रूम की तरफ खुद-ब-खुद बढ गये। उसने देखा—एक कोने में उनकी शादी की वही तस्वीर टगी था जिसमे उनकी सूरत इतनी साफ नही थी जितने कि उस तस्वीर मे फूलो के हार दिखाई दे रहे थे। उसे खुद भी वह तस्वीर पसद नही थी। इसलिये उस तस्वीर का किसी कोने मे लगा होना उसे कोई खास बुरा नहीं लगा।

फिर उसने देखा पलगो की जोडी वैसे ही एक दूसरे से सटी हुई थी। तकिए पर अभी तक 'स्वीट ड्रीम्स' के वही घिसे-पिटे दो शब्द लिखे हुए थे, जो उसने खुद ही कसीदे से बना-बना कर लिखे थे और जिनका अब कोई फैशन ही नही था।

तब अचानक उसकी दृष्टि सामने लगी एक खूंटी पर उठ गई, जिस पर उसका वही ब्लाऊज टंगा हुआ था जो उसके पति को बहुत पसंद था। उसे याद आया कि जब-जब भी वह पति के साथ उसके किसी मित्र के घर घूमने जाती तो उसकी हमेशा इसी ब्लाऊज के पहनने की जिद रहती।

उसे यह अजीब भी लगा और अच्छा भी।

ऐसे कुछ देर तक वह उस कमरे को निहारती रही। तब उसे लगा कि कोई एक भली सी गंध उस कमरे में थी जो उसकी बहुत जानी पहचानी सी थी।

फिर जब वह कमरे से बाहर आई तो देखा कि पति वापिस कमरे में आ गया था और किसी पैनी चीज से सिगार की नली को साफ करने लगा था।

अब पति ही बोला—'तुम्हारा कब जाने का प्रोग्राम है?'

उसे पति का वह सवाल अच्छा नहीं लगा। एक बार तो इच्छा हुई कि कह दे कि कौन सी तुम्हारे माथे आ पड़ी हूँ जो अभी से ही मेरे जाने की फिक्र लगी है?

' लेकिन यहाँ उसने महज़ औपचारिक होते हुए कहा—'कैम्प खत्म होते ही चली जाऊँगी।'

तब उसने सोचा कि पति पूछेगा कि कब कैम्प खत्म होता है?–लेकिन उसने ऐसा नहीं पूछा।

वह बोली–'वैसे ·······तुम चाहो, तो आज मैं होटल न जाकर तुम्हारे यहाँ ही ठहर लूँ।'

पति जैसे अचानक चौंक गया—'हूँ?'

अपनी बात को दोहराने के पहले उसने एक और सवाल कर लिया—'वो·······स्लीपिंग रूम मे, खूंटी पर मेरा कोई ब्लाऊज़ क्यों टाँग रखा है?'

उसने देखा कि इस बात पर पति कुछ लाल पीला हो गया था। वह बोला–'एक बार फिर मुझे कहना पड़ रहा है कि मेरी समझ मे नहीं आया कि तुम उस घर की हर चीज़ मे ऐसा मोह, ऐसी रुचि क्यों रखे हुए हो, जिस घर से तुम्हारे सम्बन्ध हमेशा हमेशा के लिये टूट चुके हैं·······?'

'हमेशा के लिये····?'–बीवी को यूँ ही लगा कि उसके इस प्रश्न में बहुत गर्मी थी और यह भी कि वह अन्दर ही अन्दर कांप सी गई थी।

तब फिर पति बोला–'देखो मैं तुम्हें स्पष्ट बता दूं कि अब हमारे कोई सम्बन्ध नहीं रहे हैं।'

बीबी को लगा कि अपने पर बहुत काबू पाने के बाद भी उसका मन भर आया था–अपनी भारी हो आई आवाज़ को सन्तुलित करती हुई सी वह बोली–'क्या कहीं भी कोई ऐसी गुंजाइश नहीं कि हम जुड़ सकें ......इस छोटी सी गलतफ़हमी को सहारा बनाकर, कब तक हम दोनों की ज़िद हमें एक दूसरे से अलग किये रखेगी ......?

पति ने कोई उत्तर नही दिया। केवल एक बार अपनी बीबी की तरफ देखा। फिर उसने उठकर आलमारी खोली। उसमे वह कुछ टटोलता रहा। बीबी ने देखा उस आलमारी मे कुछ बिखरे हुए कागज पड़े थे, और दो चार प्रकार की शराब की बोतलें।

पति ने एक शराब की बोतल निकाली। बीबी ने देखा कि उसके पति का लाल पीला चेहरा, बोतल के बाहर निकालने के बाद कुछ कुछ सतुलित सा हो गया था। एक खाली गिलास निकालकर उसने बीबी से कहा–'लो, इसमे थोड़ा पानी भर लाओ ......।'

बीबी को यह सब अजीब अजीब सा लगा और साथ मे उसे एक हल्की सी खुशी भी महसूस हुई कि–'देखो पति अब भी उस पर अपना कोई अधिकार समझता है।

पानी भरकर वह अन्दर आई तो देखा, पति ने थोड़ी सी शराब एक प्याले मे भर ली थी।

गिलास टेबुल पर रखकर, वह चुपचाप सोफा पर बैठ गई तब उसने एक बार फिर अपनी बात दोहराते हुए पति से कहा–'हा तो......मैं पूछ रही थी ...... कि अगर तुम कहो तो आज की रात होटल की बजाय मैं तुम्हारे यहा ही ठहर लूं ...... ?'

'नहीं ...... ऐसी कोई खास ......। तुम...... ...तुम होटल मे ही रह लेना......। कहते हुए पति ने एक बार गौर से बीबी की तरफ देखा।

बस ! ....बीबी को लगा–अब और नहीं ....अब और नहीं।

उसने सोफे पर पड़ा पर्स उठा लिया–'अच्छा ! .... तो मैं जा रही हूं ......।'

'वह जाने लगी तो पति ने उसे बुला लिया–'सुनो !'

वह रुकी ।

उसने देखा, उसके पति की आँखों में वह शरारत भर आई थी, जो अकसर बीबी को चूमने से पहले उसकी आँखो में उभर आया करती थी ।

एक टक उसकी तरफ देखता हुआ पति पलंग से उठा । तब अचानक उसका हाथ शराब की बोतल से जा टकराया ।

जमीन पर गिरकर बोतल टूट गई ।

तब एक नजर से पति ने बीबी को देखा, फिर एक दृष्टि टूटी हुई बोतल और फैली शराब पर फेंकी । फिर कुछ सोचकर वह बीबी से बोला- 'अच्छा तुम जाओ ।'

बीबी को यह बुरा लगा कि यह क्या है ?—खुद ही ने उसे बुलाया । वह रुकी है तो फिर खुद ही उसे जाने के लिये कह रहा है ।

बीबी को लगा कि आज यह तीसरी या चौथी बार पति ने उसका अपमान या अपमान जैसा ही कुछ किया है । उसकी इच्छा हुई कि जाते जाते वह भी कोई तल्ख बात पति से कह जाये ।

लेकिन तब उसने देखा कि पति जमीन पर झुककर काँच के टुकड़े समेटने लगा था ।

पति को काँच के टुकड़े समेटते देख, एक बार उसका मन हुआ कि वह भी झुककर टूटे टुकड़े समेटने मे पति की मदद करे । लेकिन फिर कुछ सोच कर उसने ऐसा नही किया ।

मुँह मोड़कर वह बाहर चली आई ।

तब मन ही मन वह उस क्षण को उस पल को कोसने लगी, जब उसका पति उठकर उसकी तरफ आने को था और शराब की बोतल ने गिरकर जैसे उसकी कोई बात बनते बनते बिगाड़ दी थी ।

तब फिर बाहर आकर उसे लगा कि वह व्यर्थ ही यहाँ चली आई थी ।

एक अंधेरा कॉजी कार्नर

७

उसे डिक्टेशन देते देते मिस मेहरा कुछ देर को रुक जाती है। वह शार्ट हैंड की पेन्सिल को उंगलियों के बीच घुमाने लगता है। कुछ देर को केबिन में बिल्कुल शांति रहती है। उसके बाद मिस मेहरा उससे पूछती है–'मिस्टर विमल ! मैं क्या कह रही थी ?'

डिक्टेशन दिये हुए लेटर का आखिरी हिस्सा वह पढ़कर सुनाता है—' • इन फ्यूचर सच मिस एप्रोप्रिएशन आफ मनी !'

ठीक है, ठीक है मैं समझ गई।'—थोड़ा रुककर मिस मेहरा फिर कहती है–'मिस्टर विमल ! आज रहने दो इस लेटर की वैसे कोई विशेष जल्दी भी नहीं है जाने क्यों आज मूड मेरा साथ नहीं दे रहा ।'

वह चुपचाप मिस मेहरा की तरफ देखने लगता है। मिस मेहरा फिर कहती है- मिस्टर विमल ! मैंने हमेशा तुम्हें अपना ही समझा है। मुझे एक सलाह दो। जाने क्यों, थोड़ा ही काम कर लेने के बाद मैं थक सी जाती हूँ। वैसे देखो ना, मेरी उम्र भी कोई खास नहीं है। तुम्हें पता है कि मेरी उम्र का पैंतीसवाँ साल भी अभी शुरू नहीं हुआ है ? फिर भी इतनी थकान क्यों रहती है ? तुम्हारी उम्र क्या है विमल !'

'मेरी ?....मैं तो अभी अठाईस के आस पास हूँ।'

'तुम्हें कभी थकान महसूस नही होती ?'

'वैसे....कभी कभी, जब ज्यादा काम.... !'

'नही नही मेरे कहने का मतलब है--आफिस में....?'

'नही—आफिस में तो ऐसी कोई खास थकान.... !"

उसकी बात को बीच मे ही काटकर, मिस मेहरा कहती है-'खैर, तुम्हें शायद खास थकान महसूस नही होती होगी। देखो, तुम स्टेनो हो ना। मेरे यहाँ बैठोगे, कुछ डिक्टेशन लेकर फिर अपने कैबिन में टाईप पर जा बैठोगे। फिर अगर थकान महसूस हुई, तो थोड़ा टहलने निकल जाओगे। लेकिन मैं कहाँ जाऊँ ?' एक जम्हाई लेकर वह फिर कहती है-'मैं तो कभी अगर थकान महसूस करती हूँ और थोड़ा टहलने के लिए बाहर लान मे निकल जाती हूँ तो अपने ऑफिस के क्लर्क आपस में खुसुर-फुसुर करने लगते हैं। वैसे, सच तो यह है, कि मैं उनकी अफसर हूँ, लेकिन ऐसी हालत में मुझे अपने क्लर्कों मे भी संकोच महसूस होने लगता है और फिर मालूम है, तब मैं क्या सोचती हूँ ?'– इतना कहकर वह फिर चुप हो जाती है। विमल भी चुपचाप मिस मेहरा की तरफ प्रश्न भरी निगाहो से देखने लगता है। मिस मेहरा फिर कहती है--'तब मैं सोचती हूँ कि स्त्री जाति को कभी अधिकारी का पद नही सम्भालना चाहिए।'

वह कोई उत्तर न देकर केवल गर्दन हिलाता है। मिस मेहरा की दृष्टि फिर शार्ट-हैंड की कापी पर जा पड़ती है। विमल के हाथ से पेंसिल लेकर वह कहती है-'तुम्हे कहा ना, इसे बन्द करदो।" अ....तुम्हे इतना संकोच क्यो हो रहा है ? इससे पहले भी मैंने तुम्हें दो चार बार कहा है कि तुम अपने आप को केवल मेरा स्टेनो ही न समझो" तुम तो" तुम तो"!' वह आगे कुछ नही कहती। कुछ देर बाद वह फिर बोलने लगती है- 'मिस्टर विमल ! तुम्हारी शादी हो गई ?'

'जी नही !'— वह संक्षिप्त सा उत्तर देता है।

'नही ? – वेरी गुड ! ....शादी करना भी मत। मैंने अपनी शादी-शुदा फ्रेंड्स की बुरी हालत देखी है।.......दे आर जस्ट इन हेल.......वे जैसे नरक मे हैं।'

वह कहता है—'खैर ! मैंने अभी इस सम्बन्ध में सोचा ही नही है, मिस मेहरा !—वैसे आपकी राय सही भी हो सकती है...." दर-असल, मैं

अभी तो इन बातों से दूर ही हैं। और मैं अपने दोस्तों की अपनी जिन्दगी के बारे में जानने की कोशिश ही नहीं करता।'

मानों कुछ झुंझलाकर मिस मेहरा कहती है—'नो! नो! डोंट गेट मैरिड! शादी बिल्कुल मत करना। मुझे दुनिया में केवल दो चीजों से नफरत है—तुम्हें मालूम है, वे कौन सी चीजें हैं?'

वह गर्दन हिलाकर 'ना' करता है।

मिस मेहरा कहती हैं—'एक तो शादी और दूसरी बीयर—इन दोनों चीजों से मुझे सख्त नफरत है।'

वह आश्चर्य से पूछता है—'बीयर से भी? बीयर तो बेहद मजेदार चीज है। मुझे तो जो मजा बीयर में आता है, वह और किसी भी ड्रिंक में नहीं आता। बीयर में तो एक हल्का सा बैलन्सड् नशा होता है"......बैलन्सड् नशा........।'

उसकी बात को बीच ही में काटकर मिस मेहरा कहती हैं—'ओह नो! मुझे तो उसमें से एक अजीब सी बदबू आती है—किसी कड़वी दवाई सी.........और सोचती हूं, जिस दिन बीयर पीने की मेरी इच्छा हुई, उस दिन शायद मेरी शादी करने की भी इच्छा हो जाएगी।'

इस पर वह हल्का सा ठहाका मारता है। मिस मेहरा भी थोड़ा मुस्कराती हैं, और फिर कहती हैं—'मिस्टर विमल! तुम्हें कोई एतराज होगा, यदि आज की शाम की चाय तुम मेरे साथ लो......आई मीन, मेरे बंगले पर!........मुझे तुमसे कई बातें करनी हैं। सच पूछो, तो मेरी अभी कोई अच्छी फ्रेंड भी नहीं रही। कालेज-डेज की मेरी सहेलियाँ सबकी सब शादी के बाद ढेर से बच्चे पैदा कर, जाने क्या हो गई हैं। उनसे बातें करते-करते मुझे अब उन में से किचिन के धुएँ की बदबू-सी आने लगती है। उनके साथ मेरा दम घुटने लगता है—सच!'

वह कहता है—'आपके हुकम को भला मैं कैसे टाल सकता हूं। वैसे शाम बिताने को मैं बैडमिंटन खेलने चला जाता हूं। आज की शाम आपके साथ ही बिता लूंगा।'

एक अजीब सी मुस्कान के साथ वह विमल की तरफ देखती है। विमल भी उसकी तरफ देखकर मुस्कराता है। पर उसे ऐसा लगता है कि आज मिस मेहरा की आंखों में कुछ है जो असाधारण है—कुछ अजीब-अजीब सा!

मिस मेहरा अब कहती हैं—'मैं थक गई हूं। आई शल टेक रेस्ट !' —और सिर पर दोनों हाथ रख कर कुछ देर को आंखें मूंद लेती है। विमल अपनी शार्ट हैंड बुक लेकर अपने केबिन में चला जाता है।

विमल को पता है कि मिस मेहरा एक अजीब क्रेज है वह हमेशा अपने से छोटी उम्र के लड़कों से सम्पर्क रखना पसन्द करती है। उनके साथ उठती बैठती है। उनके साथ चाय काफी पीती हैं, उनके साथ कॉफी हाऊस जाती हैं, उनके साथ डांस करती है, उनके साथ ही.........।



शाम को वह मिस मेहरा के बङ्गले जाता है मिस मेहरा बङ्गले के लॉन मे ईजी चेयर पर लेटे-लेटे कुछ पढ़ रही है। आगे बढ़कर वह उनसे नमस्ते करता है। वह मुंह पर से किताब हटाती है। विमल को देखकर, वह मानो उछलकर कहती है—'आओ, आओ, विमल आओ !'-और फिर घड़ी देखकर कहती है—'ओह ! देखो, सवा सात बज गये हैं-और यह उपन्यास पढ़ते-पढ़ते समय का ध्यान ही नहीं रहा।'

इस बीच विमल सामने रखी हुई एक केन-चेयर पर बैठ जाता है। किताब की तरफ देखकर थोड़ा मुस्कराकर वह पूछता है—'क्या पढ रही थीं आप ?'

किताब विमल की ओर बढ़ाकर मिस मेहरा कहती है—'डी० एच० लॉरेन्स का उपन्यास है – 'सन्स एण्ड लवर्स।'

किताब हाथ मे लेकर विमल उसके पन्ने पलटने लगता है। मिस मेहरा फिर कहती है—'मुझे लॉरेन्स बहुत पसन्द है। ही इज् माई फेवरेट राईटर ! —बहुत खूबसूरत लिखा है।'.........तुम वेलफेयर आफिसर मिस्टर जोशी को जानते हो ?'

विमल गर्दन हिलाकर 'हां' कहता है।

मिस मेहरा अपनी ही धुन में कहती जा रही हैं—'मिस्टर जोशी इस बात पर बहुत खीजते हैं, तब मैं उनसे कहती हूं—कि दुनियां मे सिर्फ एक ही लेखक हुआ है—और वह है—लॉरेन्स !'

विमल यह असमंजस में पड जाता है। वह अपनी कोई राय नहीं दे पाता। इसलिये कहता है—'मिस मेहरा ! सच तो यह है कि मुझे साहित्य

मिस मेहरा नहीं चाहती कि वह इतनी जल्दी ही चला जाए। इसलिये उससे कहती हैं—'चले जाना, ऐसी भी क्या जल्दी है ?'—फिर बात का रुख बदलकर कहती हैं—'मिस्टर विमल ! समझलो कि तुम शादी करना चाहते हो।"""तुम क्या चाहोगे कि लड़की की उम्र क्या हो ?'

'उम्र ?'

विमल अब सोचता है कि मिस मेहरा उसकी बॉस है और उसे 'फ्लैटर' करने का यही एक मौका है। कुछ देर सोचकर वह कहता है—'मिस मेहरा ! अगर आप मेरी हार्दिक इच्छा जानना चाहेंगी, तो मैं तो बस इतना कहूंगा कि अपने से चार पाँच साल बड़ी लड़की के साथ ही शादी करूंगा।'

'क्यों ?'—मिस मेहरा पूछती है।

विमल कहता है—'इसलिये"" इसलिये कि तीस-पैंतीस की उम्र के बाद, औरत के चेहरे में असली बैलन्स आ जाता है। उस उम्र से पहले औरत का चेहरा बदलता सा रहता है। कभी मासूम तो कभी कैसा"""तो कभी कैसा"""!'

'हूँ !'—मिस मेहरा केवल थोडा मुस्कराती ही है और विमल की इस बात पर सोचने लगती है।

अब विमल घड़ी की तरफ देखता है, 'अच्छा, मिस मेहरा ! अब इजाजत हो तो"" !'

मिस मेहरा जैसे किसी सपने से जागकर कहती हैं—'बाई द वे, मिस्टर विमल ! कल सण्डे है। अगर सुबह कुछ समय निकाल सको तो मैं चाहूँगी—कि कल आओ, किसी पिकनिक स्पॉट पर चलेंगे।'

जाते जाते विमल कहता है—'मैं जरूर कोशिश करूंगा कि आपको कम्पनी दे सकूँ।' और 'नमस्ते' कर, वह वहाँ से चला जाता है।

※

पिकनिक पर मिस मेहरा उससे कहती हैं, 'मिस्टर विमल ! अगर खुशामद न समझो, तो मैं एक बात कहूँ"" मैं समझती हूँ, तुम्हारा स्वभाव मेरे स्वभाव से काफी हद तक मेल खाता है। तुम्हारे स्वभाव में फालतू का दिखावा नहीं है—सच !'—कुछ देर बाद वह फिर कहती है, 'लेकिन एक

बात अब भी तुम मे है और वह मुझे अच्छी नही लगती—वह है तुम्हारा यह सकोच ! तुम अपने मन से इस संकोच को निकाल क्यो नही देते " तुम ···!'

फीका सा मुस्कराकर वह कहता है–'नही, नही ! ऐसी कोई खास बात नही है । मैं तो ······ मैं तो·······!'—सकोच के लिये, सकोच भरे इन इन शब्दो पर दोनो जोर-जोर से हसने लगते हैं ।

पिकनिक से लौटते हुए चलती कार मे मिस मेहरा उसे कहती है—विमल ! अगर तुम अपनी बैडमिण्टन से थोडा मोह निकाल पाओ, तो मैं तुम्हें एक निमन्त्रण दू " ··· ।'

शान्त स्वर मे वह कहता है—'कहिये ।'

विमल का हाथ अपने हाथ मे लेकर मिस मेहरा कहती हैं–'तुम रोज क्लब मे मुझे कम्पनी दे सकोगे ?'

कुछ सोचकर वह कहता है—'आपके हुक्म के आगे मैं भला इन्कार कैसे कर सकता हूं ?'

'ओहो !'—मिस मेहरा जैसे खीजकर कहती है—'फिर यह 'हुक्म-हुक्म' काहे का ? तुम्हे कहा ना, कि अपने मन से यह सकोच निकाल दो ।'

थोडा मुस्कराकर वह अपना हाथ खिसका लेता है ।



दूसरी रात मिस मेहरा के साथ वह क्लब मे जाता है । दोनो को आता देख, कुछ लोग आपस मे खुसुर-फुसुर करते हैं । विमल उस खुसुर-फुसुर की परवाह न कर दीवार मे लगे छोटे सुनहरी स्पीकर की तरफ देखता हुआ मिस मेहरा के साथ उस कोने में जा बैठता है, जिसका जिक्र उसने विमल से पहले ही कर रखा था ।

सोफे पर बैठती हुई मिस मेहरा कहती हैं—'यही है वह कॉजी कॉर्नर, जिसका जिक्र मैं तुमसे पहले ही कर चुकी हूं ·······कैसा है ?'

'अच्छा है ।'—वह सक्षिप्त सा उत्तर देता है । लेकिन उसके उत्तर की तरफ कोई ध्यान न देकर, मिस मेहरा उठकर टेबुल के ऊपर लगा शेडेड लैम्प बुझा देती हैं, और फिर एक हलका सा ठहाका मारकर कहती हैं—'तुम्हे

याद होगा, मैंने तुम्हें बताया था कि अपने कार्नर में ज्यादा रोशनी का होना मुझे अच्छा नहीं लगता। क्लब के दूसरे मेम्बर मेरी इस बात, इस कमजोरी पर खूब खुसुर-फुसुर करते हैं। बट यू सी, आई डैम केअर.........मुझे उनकी थोड़ी भी परवाह नहीं है।'—कुछ देर रुक कर वह फिर कहती है—'क्या इच्छा है?.........वैनीला चलेगी?'

वह सिर्फ कहता है—'जो आपको पसंद हो—वही चलेगा।'

मिस मेहरा ब्वाइ को दो वैनीला लाने को कहती है। और फिर विमल की तरफ देखकर कहती है—'वह सामने जो रिजर्वड टेबुल के पास वाली कुर्सी पर बैठा है ना, वे मिस्टर वर्मा है—रेलवे में बड़े आफिसर हैं। बट ही इज् अ डाग.........कुत्ता है! बोलते समय ऐसा लगता है, मानो पूंछ हिला-हिलाकर बोलता हो। मैं चाहती हूं--पुरुष वो जिसमे सोबरनेस हो...गंभीरता हो। पूंछ हिलाकर बोलने वाले ये कुत्ते मुझे अच्छे नही लगते।'

वह कोई उत्तर नही देता। केवल कहता है--'हां, हां, गंभीरता तो हरेक में होनी चाहिये।'

मानों चौककर, मिस मेहरा झट से कहती हैं--'नो! हीयर यू आर रांग!.........औरत को गंभीर नही होना चाहिये... ...औरत चंचल--पुरुष गंभीर... ...जब ही तो सोसायटी का बैलन्स बना रहेगा। हर औरत को चंचल होना चाहिये। मुझे ही देख लो ना, मैं कितनी चंचल हूँ--मस्त। गमगीन रहना मुझे अच्छा नहीं लगता।' क्षण भर रुक कर वह फिर कहती है--'लेकिन खैर, मेरे चचल रहने न रहने से सोसायटी का कोई लाभ होने का नही। मैं तो शादी करूंगी नही। फिर--औरत चचल, पुरुष गंभीर--का फार्मूला मुझ पर अप्लाई हो नही होता।'

वह गर्दन हिलाकर सिर्फ 'हूं' करता है।

और उस दिन के बाद विमल महसूस करता है कि मिस मेहरा अब अधिक और अधिक चचल रहने लगी है--शायद अपने कहे हुए उन शब्दो को एक बड़े सच का रूप देने के लिये।

⁂

.........और फिर एक दिन!

रोज चंचल रहने वाली मिस मेहरा उस दिन आफिस नही आई है। नियमानुसार शाम को विमल उसके पास जाता है। जाते ही पहला सवाल

यही पूछता है-- मिस मेहरा ! आज आप आफिस नहीं आईं। ·· ··· आपकी तबीयत तो ठीक है ना ?'

'हां, हां, इट्स आल राईट ! ··· ··· बिल्कुल ठीक है !' और फिर धीमी आवाज और उदास लहजे से वह कहती है--'ठहरो ! मैं जरा चेंज कर लूँ--क्लब चलेंगे।'--विमल को साफ लगता है कि मिस मेहरा की बातो मे वह रोज वाली चंचलता नही है।

क्लब तक पहुँचते पहुँचते विमल मिस मेहरा से पूछता है-'मिस मेहरा! आज आप इतनी उदास क्यो हैं ?'

फीका मुस्कराकर वह कहती है-'सच ? ·· ·· ऐसा लगता है क्या ?'

'हूँ !'--विमल एकटक मिस मेहरा की तरफ देखने लगता है।

धीरे-धीरे, मानो मरे से स्वर मे मिस मेहरा कहती हैं--'आज बहुत दिनो बाद मैंने फिर लॉरेंस का 'लेडी चैटरलीज़ लवर' पढा है। उपन्यास पढने के बाद, जब मैंने अपनी सूरत आईने मे देखी, तो मुझे लगा, अब मैं बहुत बडी हो गई हू। वैसे तो तुम्हे बता ही चुकी हूँ कि मेरी उम्र का पैंतीसवा साल·· ·· । और सच पूछो, तो आज पहली बार मैंने अपने फेवरेट राईटर को मन ही मन गालियां दी हैं--कैसा है। आज लॉरेन्स के लिये मेरे मन मे नफरत भर आई है।'--विमल चुपचाप उसकी तरफ देखने लगता है।

मिस मेहरा फिर कहती है—'और दु:ख इस बात का भी है कि जिन चीजो से मैं नफरत करती हूँ, उनके अदद मे बढोत्तरी हो रही है। पहले मुझे सिर्फ शादी और बीयर से नफरत थी, अब मैं लॉरेंस से भी नफरत करन लगी हूँ।'--विमल को लगता है कि मिस मेहरा की आवाज भारी हो गई है। शायद वह जल्दी ही रा भी दे।

··· और फिर क्लब क उस अन्धेरे कॉजी कॉर्नर मे बैठते-बैठते मिस मेहरा विमल से पूछता है—'कुछ पीओगे ?'

'जो आपकी इच्छा !' वह संक्षिप्त सा उत्तर देता है।

'तुम्हें अपने लिये जो पसन्द हो, मगवा लो। मैं तो आज बीयर पीऊँगी।'--विमल को लगता है कि मिस मेहरा की आवाज मे बेहद पीडा है, पीडा से उभरती हुई कम्पन है। आश्चर्य से वह पूछता है-'आप बीयर पीएँगी ?'

मुक्ति

◉

माला अचानक आ गई थी। रवि को यह बड़ा अजीब अजीब सा लग रहा था।

काफी लम्बे अर्से के बाद आई थी वह। इससे पहले वर्तिका से मिलने वह एक दो बार हास्टिल मे आई थी। तब ही रवि का उससे परिचय हुआ था और आज बिना कोई सूचना दिये वह आ गई थी।

रवि ने बहुत कोशिश की कि उसके चेहरे पर कोई ऐसा आसार न दिखाई दे, जिससे कि माला को लगे कि उसके आने से रवि सहम गया है या डर गया है।

माला मुँह से एक शब्द भी न बोल रही थी। केवल मूढ पर बैठे-बैठे ही सामने लगे एक अर्द्ध नग्न चित्र का देख रही थी।

उसकी यह चुप्पी रवि को और भी खलने लगी। तब विवश होकर रवि ही बोला—'कैसे आना हुआ है माला!'

साधारण स्वर में माला बोली—'तुमसे मिलने आई हू।'

'मुझसे?'

'हाँ।'

'सामान-वामान कुछ नही लाई हो?'

'हाँ, मैं बीयर पीऊँगी।'

और विमल के दिमाग में मिस मेहरा के वे शब्द-मेरी-राऊंड की तरह घूमने लगते हैं—'जिस दिन बीयर पीने की मेरी इच्छा हुई, उस दिन शायद मेरी शादी करने की भी इच्छा हो जाएगी।'

विमल को तब ऐसा लगता है कि उस अन्धेरे 'कॉज़ी कार्नर' मे कोई बड़े-बड़े मरक्यूरी बल्ब लगे हुए हैं, जिनकी तेज रोशनी में वह अपनी आँखें भी नहीं खोल पाएगा। ॐ

मुक्ति



माला अचानक आ गई थी। रवि को यह बडा अजीब अजीब सा लग रहा था।

काफी लम्बे अर्से के बाद आई थी वह। इससे पहले वर्तिका से मिलने वह एक दो बार हास्टिल मे आई थी। तब ही रवि का उससे परिचय हुआ था और आज बिना कोई सूचना दिये वह आ गई थी।

रवि ने बहुत कोशिश की कि उसके चेहरे पर कोई ऐसा आसार न दिखाई दे, जिससे कि माला को लगे कि उसके आने से रवि सहम गया है या डर गया है।

माला मुँह से एक शब्द भी न बोल रही थी। केवल मूढे पर बैठे-बैठे ही सामने लगे एक अर्द्ध नग्न चित्र को देख रही थी।

उसको यह चुप्पी रवि को और भी खलने लगी। तब विवश होकर रवि ही बोला—'कैसे आना हुआ है माला!'

साधारण स्वर म माला बोली—'तुमस मिलने आई हू।'

'मुझसे?'

'हाँ।'

'सामान-बामान कुछ नही लाई हो?'

'नहीं, आज ही वापिस जाना है मुझे ''इसलिये''''।' कहकर माल ने एक खुला हुआ लिफाफा रवि के हाथ में दे दिया।

लिफाफा हाथ में लेता हुआ रवि बोला–'क्या है इसमें ?'

'लिफाफा खुला हुआ है '' खुद ही देखलो।' कहकर माला मुड़ पर से उठकर पलंग पर लेट गी गई।

रवि ने फिर पूछा, 'मेरा मतलब है, किसने भेजा है यह ?'

'दीदी ने '''तुम्हारी वर्तिका ने !'—उसी ही लापरवाही से माला ने कहा।

काँपते हाथों से रवि ने लिफाफा खोला। उसमें एक फोटो थी— वर्तिका की और एक चिट्ठी। उसने चिट्ठी पढ़ी–

'रवि !

-- कई कई चिट्ठियाँ लिखी हैं मैंने लेकिन उत्तर न मिला।

—माला के हाथो अपनी लेटेस्ट फोटो और यह चिट्ठी भेज रही हूँ।

कई बाते समझाने को नही होती। बोलो, तैयार हो ?

तुम्हारी–

वर्तिका।'

उसने चिट्ठी का अर्थ भाप लिया लेकिन फिर भी ऐसा अभिनय किया, जैसे वह इन टूक शब्दो का मतलब नही समझ पा रहा था।

फिर उसने वर्तिका की लेटेस्ट फोटो देखी। बड़ी भौंडी लग रही थी वर्तिका उसमे। तब उसने माला से कहा–'कैसी अजीब फोटो भेजी है ?'

'ऐसे दिनो मे तो ऐसा ही लगता है।' माला की वही लापरवाही।

रवि को यह अच्छा नही लग रहा था। उसने कहा--'माला ! तुम ढंग से बात करो ! मैं क्या पूछ रहा हूँ '''?'

तब जैसे हल्के गुस्से से माला बोली--'तो फिर सुन लो रवि ! ''' दीदी को आठवाँ चल रहा है।'

'तो ?'

'तो क्या'''''' भोले क्यो बनते हो ? बोलो, करोगे दीदी से शादी ?'

'हूँ ?' वह असमजस मे माला की तरफ देखने लगा।

तब संयत स्वर में माला फिर बोली—'देखो, रवि ! गलती हो जाने के बाद पछताना क्या है। जब ऐसे भावनात्मक स्तर पर तुम्हारे सम्बन्ध पहुँच रहे थे, तब बहाव में तो न बहते तुम !''' तिस पर दीदी ने इतनी चिट्ठियाँ लिखी हैं तुम्हें और तुम हो कि चुप्पी साधे बैठे हो, किसी एक का तो उत्तर दे देते। और कुछ नहीं तो इतना ही लिख देते कि तुम उससे शादी नहीं करना चाहते !'

शादी ? ''उसका तो सवाल ही नहीं उठता, माला !''' ''' तुम क्या समझती हो कि तुम्हारी दीदी के पेट में जो बच्चा है, वह मेरा ही है ?'

प्रश्न भरी निगाहों से माला रवि की तरफ देखने लगी।

रवि फिर बोला—'देखो, माला ! मैं तुम्हें बता दूँ कि वर्तिका के संबंध कोई एक मेरे साथ ही नहीं थे। कॉलेज के कई और लड़के भी थे जिनसे तुम्हारी दीदी ने ऐसे सम्बन्ध रख रखे थे। वह यहाँ बहुत बदनाम हो चुकी थी—और 'पापुलर' भी।'' हाँ बाकी, यह सच है कि कॉलेज छोड़ने के आखिरी दिनों में वह मेरे साथ काफी रही है। लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं है कि '''!'

उसे बीच में ही काटकर माला बोली— खैर, हो सकता है कि यह सच हो, लेकिन यह गलती दीदी की भी है कि शादी से पहले, शादी का सुख भोगते हुए, उसने कोई 'प्रीकाशन्स' नहीं लिये।'

कुछ देर को दोनों चुप हो गये।

तब रवि बोला—'कॉफी पियोगी या बीयर ?'

'वैसे अक्सर मैं बीयर पीती नहीं लेकिन आज बीयर ही चलेगा। कॉफी के लिये फिर तुम उठोगे, बनाओगे ! ऐसे कुछ समय खराब होगा '''''' और मुझे जल्दी जाना है, जो भी पहली ट्रेन मिल गई।'

बीयर की बोतल उठाकर रवि ने एक गिलास भर कर माला की तरफ बढ़ा दिया। और एक गिलास उसने खुद अपने लिये भर लिया।

फिर रवि बोला—'बदनामी तो उधर बहुत हुई होगी ?'

'वो तो हुई है। आठवा कोई छिपा थोड़े ही रह सकता है।

'हूँ !'

'लेकिन अब यह भी कोई बड़ी बात नहीं रही। अब ऐसी बदनामी बड़ी अस्थायी हो गई है। और भी सुलझे हुए शब्दों में कहूँ कि ऐसी बदनामी

अब बहुत 'कॉमन' हो गई है। लोग ऐसी खबरें और ऐसी बातें सुनने के जैसे आदी हो गये हैं। वे रोज सुनते रहते हैं—आज इसने बच्चा गिराया.... आज उसने बच्चे को गन्दे नाले में बहा दिया....आज इसने ये किया... आज उसने वो किया।....देखो रवि! यह सब, उस समाज को सहना ही है, जिस समाज की लड़कियाँ बड़ी उम्र तक कँवारी रह जाती हैं.. बस, उसके बाद होता यह है कि 'करप्शन' और बढ़ता है। तुम्हारे जैसे लड़के ऐसी लड़कियों को भोगने के बाद भी उनसे शादी नही करते। जो भोगते हैं, वे ही जब शादी नही करेंगे तो और कोई भला क्यों करने लगा....।'

'देखो, माला!....वर्तिका के सम्बन्ध में मैंने तुम्हें बता ही दिया है कि....... !'

'नहीं, नही, मैं उसके लिए नही कह रही। मैं तो एक जनरल बात कह रही थी कि जब उन लड़कियों से कोई शादी करेगा नहीं, तो शारीरिक भूख तो इन्सान की बनी ही रहती है। फिर ऐसी लड़कियाँ आगे होकर लड़को को 'स्पॉइल' करती हैं....वैसे देखो! पहले बदनामी होती देख लड़कियाँ आत्म-हत्या कर लेती थी। लेकिन अब तो लगने लगा है कि यह भी कोई समाधान तो है नही। इसलिए जीओ....कैसे भी जीओ.... बस यही बाकी रह गया है लड़कियों के लिए.....।'

रवि बोला—'जब तुम ऐसा खुलकर बोल रही हो, तो मैं तुम्हें बता दूँ कि तुम्हारी दीदी में बहुत-बहुत शारीरिक भूख है, जिसे कालेज के एक-दो लडके नही मिटा सकते थे...वैसे, तुम लोगो ने पहले ही उसकी शादी क्यों नही करवा दी थी?'

'फिर वही बात!... मैं कहती हूँ रवि! हर माँ-बाप की आँखों में जवान लड़की खटकने लगती है। दीदी की शादी हम कब की कर देते, लेकिन हम लोगों में दहेज इतना देना होता है कि हम दे नही पा रहे थे। इसलिए यह सब....।'

'तो फिर इस तरह तुम्हारी शादी में भी देर हो सकती है। और फिर शारीरिक भूख मिटाने को, एक दिन तुम भी तुम्हारी दीदी की तरह किसी न किसी लड़के से सम्बन्ध बना लोगी...।'

माला भाँप गई कि रवि की बातो का रुख कहाँ बढ़ रहा है। वह बोली—'देखो रवि! तुम मेरे लिये कोई पादरी तो हो नही, जिसके सामने मैं अपना पाप 'कन्फेस' कर रही हूँ। और वैसे, इस मामले में पाप जैसा अब

कुछ रहा भी नहीं है। तुम क्या समझते हो कि मैं कोई 'कोल्ड' लड़की हूं?' ...ठंडी हूँ?...नो!...ये सब मैंने भी किया है, लेकिन सोच समझकर... सम्हल सम्हल कर...!'

लाजवाब होकर रवि चुप हो गया।

कुछ देर ऐसी चुप्पी बनी रही।

फिर माला ही बोली--'तो फिर तुम्हारा क्या उत्तर है?...दीदी से शादी नहीं करोगे तुम?'

'फिलहाल तो मेरा इन्कारी जवाब ही समझो!'

'चलो फिर जाने दो!... अच्छा। मैंनी थैंक्स फार योर बीयर!... आओ मेरे साथ स्टेशन तक।'

'चलो!'—कहकर रवि ने कपड़े बदल लिए। वह टाई लगा रहा था कि माला बोली-'हाँ, तो रवि! यह फोटो तुम अपने ही पास रखलो। दीदी की यादगार के बतौर तुम्हारे पास रहेगा। कभी शायद तुम अपने दोस्तो को शान से दिखा पाओ कि—देखो यारो! ऐसा भी हम कर सकते हैं।'

रवि को बहुत गुस्सा आया इस बात पर, बोला—'माला! इतना नीच समझा है तुमने मुझे?'

माला बोली—'गुस्सा मत करो रवि! अक्सर कॉलेज के लड़के ऐसा ही करते हैं, सोचा कहीं तुम भी.......!' वह फीका मुस्करा दी।

रवि ने टाई लगा ली थी। अब वह जूते पहन रहा था। तब माला फिर बोली—'मैंने तो डैडी से कहा था कि रवि के फ़ादर को लिख दें......!'

रवि चौंक गया—'फिर ... ..?'

'फिर डैडी नहीं माने। बोले—इसमे भी तो हमारी ही बदनामी है कि अपनी लड़की को ऐसी ढील क्यों दे दी हमने?...... रवि! हम लोग बड़ी ही 'आर्थोडॉक्स' फैमिली के लोग हैं।...तुम ही सोचो, इस युग का यह कितना बड़ा विरोधाभास है कि हमारी मम्मी दिन भर घंटियां बजा बजा कर भगवान के भजन गाती रहती है और उसकी एक लड़की शादी से पहले ही अपने पेट मे बच्चा ढोए हुए है।... सच कहती हूँ रवि! डैडी की जगह अगर मैं होती, तो तुम्हारे फादर को लिख देती।'

रवि अब काँप काँप गया था।...... बड़ी चंट लड़की है यह तो—उसने सोचा।

तैयार होकर उसने अपने कमरे को ताला लगाया और माला के साथ कमरे से बाहर निकल आया।

बाहर आकर उसने एक ठंडी सांस ली.........'तो सीधे स्टेशन चलता है।'

टेढ़ी नजरों से माला ने रवि की तरफ देखा—'और कहीं ले चलने का इरादा है क्या?'

'नहीं तो!'—रवि अब तो सच मे ही इस लड़की की बेबाकी से डर गया था।

स्टेशन कोई दूर नहीं था दोनों पैदल पैदल स्टेशन की तरफ जाने लगे। तब माला बोली, 'रवि! यह तुम्हें अजीब नही लग रहा है कि एक छोटी बहन अपनी बड़ी बहन के लिये 'प्लीड' कर रही है?'

रवि ने कोई उत्तर नहीं दिया।

स्टेशन आ गया था।

माला ने फिर कहना शुरू किया—'लेकिन रवि तुमने मेरे लिये सच में ही मुसीबत पैदा कर दी है। दीदी की शादी अब होगी नहीं। और जब तक उसकी शादी नहीं होगी, तो मेरी भी नही होगी। तुम ही सोचो रवि! कि बड़ी बहन के रहते हुए छोटी बहन की शादी कैसे हो जाएगी?

रवि ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुप चाप अपनी घड़ी के सैकण्ड कांटे की तरफ देखने लगा। उसे लगा कि समय कटते नही कट रहा है।

तब माला बोली.........'चलो तुम दीदी से शादी नही करना चाहते क्योंकि वह बहुत बदनाम है।.........तो फिर मुझसे शादी करोगे?'

'तुम से?'

'हां, हां, मुझसे।......... मैं तो तुम्हारे शहर की भी नही हूँ, बदनाम भी नहीं हूं.........।'

'लेकिन......!'

'लेकिन क्या?'

इस बीच गाड़ी धड़धड़ाती हुई प्लेटफार्म पर आ पहुँची। रवि बोला—'आओ, आओ! पहले अपने लिये कोई सीट ढूंढ लो। वरना भीड़ बहुत है। खड़े रहने को भी जगह नही मिलेगी।' माला समझ गई कि रवि यहां उसकी बात को टाल गया।

कम्पार्टमेंट मे बैठ लेने के बाद, माला फिर बोली—हाँ तो रवि! मेरी बात का जवाब।'

'देखो! म''' म''' माला। शादी तो मैं तुमसे कर भी लू '' लेकिन तुमने मुझे बता दिया है कि वर्तिका की तरह तुम्हारे भी सम्बन्ध और लडको के साथ रहे हैं।'

'तो क्या हुआ? मैं कोई 'प्रैगनेन्ट' नही हूँ''''' बदनाम नही हूँ''' क्या चाहिये तुम लडको को और?'

'लेकिन, फिर भी, माला! तुम्हे 'करप्ट' तो कहा जा सकता है।'

माला व्यंग्य से मुस्कराई, फिर बोली-'अच्छा? तो ऐसा है।' कुछ रुक कर वह फिर बोली–'मिस्टर रवि! अब जब कि बात अपने 'क्लाई मैक्स' तक आ गई है, तो मैं तुम्हे बता दूँ कि मै ऐसी वैसी नही हूँ। किसी भी गैर लडके के साथ मेरे कोई सम्बन्ध नही रहे हैं। मैं तो यह देखने आई थी कि तुम्हारा दिल कितना बडा है। इतना कुछ कर लेने के बाद भी तुम कितना छोटा दिल रखते हो, यह मैंने आज देख लिया।'

उससे कुछ कहते न बना।

माला ने तब फिर अपनी बात को आगे बढाया—.शादी तो दीदी की हो ही जाएगी। अब भी कई बोल्ड लडके दुनिया में हैं, जो दीदी जैसी लडकियो को अपना सकते हैं।''''' '' लेकिन रवि! तुम्हारे जैसे कार्ड और करप्ट लडके के साथ हम दीदी का पल्लू बाधना पसन्द नही करेगे—समझे?'

रवि चुपचाप माला को देखता रहा।

तब माला ही बोली-'अच्छा, रवि! अब तुम जाओ!'

वह गर्दन नोची किये वहाँ से चला आया। आगे आकर उसे लगा कि कुछ देर पहले उसके गले मे कोई फदा डाल दिया गया था, जिससे वह अब मुक्ति पा गया है।

उसे लगा कि यह शायद अन्त है। इसके बाद अब शायद कभी भी वर्तिका की चिट्ठी उसके पास नही आएगी।

प्लेटफार्म छोडने से पहले उसने स्टेशन कैंटीन की तरफ जाकर कॉफी का एक कप पीना चाहा।

उसका सिर जोरो से दुःख रहा था।

अंदर का बौनापन

दो-ढ़ाई घंटे पहले तार मिल गया था।

मैं, मेरी बीबी, चाहे मेरे बच्चे—सब खुश हो रहे थे कि आज टिक्कू आयेगा। मुझे अपने भाई के मिलने की खुशी थी, तो मेरी बीबी को मेरे भाई की बीबी के मिलने की और बच्चे तो शायद सबों के आने से खुश थे। वे खड़े खड़े आपस मे फुसफुसा रहे थे। कोई कहता—अंकलजी मोटे हो गये होंगे।...तो कोई बच्चा कहता—आंटी कैसी होगी?...हमने तो देखी नही।...तब फिर जैसे उसके उत्तर मे कोई कहता—विलायत की मेम होगी। अरे, बहुत गोरी गोरी होती है विलायत की मेम।

और इधर मैं था कि ट्रेन के लिये बार बार दूर तक झांक कर देखता कि कही गाड़ी आती दिखाई दे जाए। वैसे कोई खास बात नही थी, लेकिन थोड़ा थक गया था मैं। गाड़ी का समय निकल चुका था, लेकिन गाड़ी अभी तक प्लेटफॉर्म पर नहीं आई थी और न ही ऐसा लग रहा था कि गाड़ी लेट है।

वैसे टिक्कू ने पालम आने के लिए लिखा था। लेकिन मैं ही जानकर नही गया। कुछ विशेष तो होता नही वहाँ। अन्दर तो कस्टम वाले एक एक पेटी को खोल खोलकर देखते हैं और हम बुद्धू बने बाहर, कांच के पीछे से झांकते रहते हैं।

तो उसी कारण मैंने अपने मौसाजी को लिख दिया था कि आप वहाँ दिल्ली मे रहते हैं। टिक्कू को रिसीव करने आप ही पालम चले जाएँ और फिर जिस गाडी से टिक्कू और उसके बीबी बच्चे यहा के लिए रवाना हो, उसकी सूचना तार द्वारा मुझ तक पहुँचा दें।

दो ढाई घण्टे पहले तार मिल गया था।

तब वही स्टेशन पर खडे-खडे मैंने अपनी बीबी से पूछा—टिक्कू की बीबी से कैसे मिलोगी ?

बीबी ने एक बार आश्चर्य से मेरी तरफ देखा, फिर बोली—मिलने से आपका क्या मतलब है ?

मैंने कहा—वो ······ वो ऐसा है कि उसे गले मिलोगी या विदेशी ढग से हाथ मिलाकर ही उसका अभिनन्दन करोगी।

तब बीबी बोली—क्यो ? · ·· मेरे पैर नही छुएगी वो ?

मैं बोला—क्या पता ? शायद नही भी छुए। आजकल अपने इधर की छोरियाँ ही पैर नही छूती, तो वह विदेशी लडकी क्या छुएगी ?

बीबी भी शायद मेरी राय से सहमत थी, इसलिये चुप हो गई।



असल में हुआ ऐसा था कि टिक्कू के रिश्ते के लिये यहाँ हमने एक आदमी से बात करीब-करीब तय कर ली थी। तब टिक्कू को हमने सूचित किया था तो जवाब मे लौटती डाक से उसकी चिट्ठी आ गई थी कि हम लोग ऐसे ही जल्दी मे बात पक्की न करें। वह जब स्वदेश लौटेगा, तब सब तय कर लेंगे।

उन दिनो मुझे तो कोई शक नही हुआ था, लेकिन मेरी बीबी को कुछ-कुछ सदेह हो गया कि कहीं बाबू ने वही कोई लडकी पसद तो नही कर ली है !

मेरी बीबी टिक्कू को 'बाबू' के नाम से ही पुकारती है। हम लोगो ने जब शादी की थी, तब टिक्कू आठवी मे ही तो पढता था। उन्ही दिनो, जब वह दसवी क्लास मे आया था, तब स्कूल की किसी लडकी के साथ चल रहे अपने रोमास के छुट-पुट किस्से वह अपनी भाभी को बता दिया करता था। कभी-कभी शायद अपनी भाभी से वह कोई राय भी ले लिया करता था।

शायद टिक्कू की उन दिनों की बातों से या उसके रोमांटिक स्वभाव के आधार पर ही, उसकी भाभी के मन में ऐसा सन्देह उठा होगा कि-बाबू ने वहीं कोई लड़की पसंद तो नहीं करली है।

तभी फिर एक दिन हम दोनों को बड़ा धक्का सा लगा, जब हमारे पास टिक्कू का एक औपचारिक सा पत्र आया कि उसने वहीं एक विदेशी लड़की से शादी कर ली है। तब दोनों को लगा था कि आज अगर मां जी और बाबूजी जिन्दा होते तो शायद ऐसा नहीं होता। या उनके जिन्दा रहते हुए, टिक्कू को शायद ऐसा कुछ करने की हिम्मत ही नहीं होती।

हमें भी बुरा तो लगा था। लेकिन कर क्या सकते थे। वैसे कोई खास बात तो नहीं थी। लेकिन शर्म यों आ रही थी कि उन लोगों को हम क्या जवाब देंगे, जिन से हमने रिश्ता करीब-करीब तय कर लिया था।

तब फिर नहले पे दहला और—कि शादी को अभी छ, महीने ही मुश्किल से बीते होंगे कि टिक्कू की एक चिट्ठी आई कि उसके घर में लड़की ने जन्म लिया है। साथ में उसने स्पष्टीकरण के बतौर यह भी लिख दिया था कि – शादी के छः महीने बाद, बच्चा होने पर हम लोग हैरान न होवें। शादी से पहले हमारे भावनात्मक सम्बन्ध हो गये थे और जब कुछ छिपाना बाकी नहीं रहा था तो शादी करनी ही पड़ गई थी।

इस बात को हम लोगों ने अपने तक ही रखा था। लोग सुनते तो क्या कहते और फिर घर में एक जवान बहन भी है। उस पर इस बात का क्या असर होता!—अच्छा नहीं लगता।—यही सोचकर हम लोग इस बात को पी गये थे।

फिर दो साल बाद एक चिट्ठी और आई थी कि अब की बार टिक्कू के घर में एक लडके ने जन्म लिया है।

तब, उन दिनों एक दो बार हमने टिक्कू को लिखा था कि अपने पूरे परिवार का एक फोटो हमें भेज दे। लेकिन हर बार उसका यही उत्तर आता कि वह जल्दी ही बीबी-बच्चों के साथ स्वदेश लौटेगा। तब हम सब एक दूसरे से मिल लेंगे।

तब के बाद, अब जाकर टिक्कू अपने देश लौट रहा था।

❖

गाडी आई, तो सब लोग चौकन्ने हो गये। मैंने बच्चों को थोड़ा पीछे हटने के लिए इशारा किया। तब इंजन जब हम लोगों के बिल्कुल करीब से

गुजरा तो मैंने अपनी बीवी के चेहरे की तरफ देखा—तो लगा, उसकी आँखों मे एक अजीब सी चमक आ गई थी।

तभी हम लोगो ने देखा कि एक फर्स्ट क्लास के डिब्बे के द्वार पर टिक्कू खडा था। गाडी रुके ही रुके, उससे पहले हम लोगो ने एक दो-बार हाथ हिला दिए। हमारा छोटू मास्टर तो तालियाँ बजा बजाकर हँसने लगा—अंकल आ गये, अकल आ गये।

गाडी रुकी तो हम लोग भागे-भागे उस डिब्बे की तरफ गये जहाँ द्वार पर टिक्कू खडा था। उसे देखकर मुझे अपने बच्चो की फुसफुसाहट याद हो आई। टिक्कू सच मे, पहले से काफी मोटा हो गया था।

टिक्कू अब तक नीचे उतर आया था। पहले तो वह गले-वले नही मिला। हमे देखकर थोडा मुस्कराया फिर 'कुली-कुली' चिल्लाने लगा। कुली आया तो उसे समान वगैरह के सम्बन्ध मे कुछ कहकर, वह मेरी तरफ बढ आया। भाभी के उसने पैर छुए तो नही लेकिन थोडा उसी अन्दाज मे झुका कि जैसे अपनी भाभी के पैर छू रहा हो।

फिर उसने मेरे बच्चो के सिर पर हाथ फेरकर उन्हे एक-एक बार चूम लिया।

तभी हम लोगो की नजर डिब्बे से उतरती एक नीग्रो लडकी पर गई। पीछे-पीछे दो बच्चे भी उतर आए।

नीग्रो लडकी को देख कर हम लोग चौंक से गये। लेकिन फिर जल्दी ही हमने अपने आप को ऐसे सम्हाल लिया कि कही हमारे चौंक जाने का टिक्कू को कोई आभास न हो। उधर फिर अपने बच्चो की तरफ देखने से मुझे लगा कि मेरे बच्चो का भी जैसे वह सपना बिखर गया होगा जो वे फुसफुसा रहे थे कि—विलायत की मेम तो गोरी गोरी होनी है।

तभी टिक्कू ने पहले उसे नीग्रो लडकी को इशारे से बुलाकर, वही की भाषा मे कुछ कहा, जिससे लगा कि टिक्कू उसे हम लोगों का परिचय दे रहा था। तब वह नीग्रो लडकी मुस्कराई। उसके दाँत कोई ज्यादा सफेद से नही थे लेकिन उसके काले चेहरे के सामने दात कुछ सफेद लग रहे थे। होठ उसके मोटे-मोटे थे। बाल भी बहुत अधिक घुँघराले और छोटे-छोटे से थे। ऐसा लग रहा था, जैसे कई दिनो से उसने बालो को तेल-बेल नही लगाया था।

मैं अभी ऐसी फालतू की बातें ही सोच रहा था कि लड़की ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। मैंने उससे हाथ मिलाया। फिर वह मेरी बीबी की तरफ बढ़ गई। बीबी को शायद उससे हाथ मिलाना कुछ अजीब-अजीब सा लगने लगा जो उसने बस, जैसे हाथ उसके हाथ से छुआकर ही हटा दिया था।

कुली जब सामान उठाने लगा तो हम चोर निगाहों से टिक्कू के दोनों बच्चों की तरफ देखने लगे। हमने देखा लड़की काली-काली सी थी। शायद माँ पर गई थी। लेकिन लड़का तो ऐसा लग रहा था, जैसे बस, टिक्कू ही हो। उसे देखकर मुझे बचपन के वे दिन याद हो आए, जब मैं टिक्कू को गोद मे लेकर खेल खिलाया करता था। वह लड़का तब मुझे जैसे बचपन वाला टिक्कू ही लगा।

⁂

सामान बहुत था। बाहर आकर हमने टैक्सी कर ली। जब टैक्सी चली तो टिक्कू की नीग्रो बीबी बार-बार झांककर बाहर देखने लगी। उसके चेहरे से तब लगा कि हमारा शहर शायद उसे खास अच्छा नहीं लग रहा है। लेकिन मेरी बीबी का ध्यान उन लोगों के सामान पर लगा हुआ था कि पता नहीं टिक्कू विलायत से क्या-क्या लाया है या फिर रह-रहकर वह टिक्कू की बीबी की लुंगी की तरफ देख रही थी जो उस नीग्रो लड़की को बिल्कुल ही अच्छी नहीं लग रही थी।

तभी टिक्कू ने पूछा—सिन्धु कैसी है, दादा!.........बड़ी हो गई होगी अब तो?

मुझे लगा कि यहां टिक्कू ने महज़ कुछ बोलने के लिये ही औपचारिक सा सवाल पूछ लिया है। तब शायद यह भी पूछेगा, कि उसकी कहीं बात-वात चलाई होगी। इसलिये मैं बोला—हां! बड़ी तो हो गई है। एक दो घर भी ध्यान में हैं। अब तुम आ गये हो, तो कहीं न कहीं तय कर लेंगे।

वैसे, यह सच भी था कि हमारी बहन अब काफी बड़ी दीखने लगी थी। पिताजी अगर आज जिंदा होते, तो वे यह कभी गवारा नहीं करते कि इतनी बड़ी लड़की अभी तक घर ही बैठी रहे।

तब टिक्कू फिर बोला—दादा ! ग्राजकल ये साले कस्टम वाले बहुत तग करने लगे है। एक-एक चीज को ऐसे देखते है, जैसे हमारे पास कोई चोरी का माल हो········ और फिर ग्रच्छा हुग्रा कि मैं माल कोई ज्यादा नही लाया।

मैंने भी महज उत्तर देने के लिए कह दिया—हाँ ऽऽऽ ! सुना है कि ग्राजकल बहुत स्ट्रिक्ट हो गये हैं।

तब मुझे लगा कि इस बात की ग्रभी कोई जरूरत नही थी। लेकिन शायद चल रही बात को बदलने के विचार से ही उसने किसी गम्भीर बात के बीच, ऐसी कोई हल्की-फुल्की बात कह डाली। लेकिन साथ के साथ मुझे यह भी लगा कि टिक्कू ने यह ग्रस्पष्ट रूप से बता दिया कि वह माल कोई ज्यादा नही लाया है। शायद उसे डर होगा कि उसका भाई उससे कुछ माँग न ले।········ तो पहले से ही उसने कह दिया है कि वह माल ही कम लाया है।

तभी एक क्षण को तो मैंने सोचा कि कह देता हू—सामान तो बहुत है।

लेकिन तब फिर मुझे खुद ही लगा कि वह कह सकता है कि वो तो ग्रौरो को देने के लिए कुछ सामान-वामान वहा से मिला है। सो तो उन्हें देना ही।

इसलिये ग्रपने शक को मैंने ग्रपने तक ही सीमित रखा। बोला कुछ नही है।

लेकिन उस शक से ग्रलग हटकर मुझे यह ग्रच्छा लगा कि टिक्कू ने मुझे 'दादा ही कहकर पुकारा था। वरना मैं तो यही सोचे बैठा था कि जिस लडके ने शादी करने तक मे हम से कोई सलाह नही ली। वह भला क्या हम लोगो को इज्जत से बुलाएगा।



हम घर पहुचे तो सिन्धु बाहर ही खडी थी। टैक्सी को ग्राता देख वह शायद समझ गई थी कि हम लोग ही होगे। वरना हम लोग तो ऐसे पडोस मे रहते हैं, जहा पर ग्रक्सर कभी कोई कार या टैक्सी नहीं ग्राती। केवल कभी-कभी किसी स्कूटर की ग्रावाज सुनाई दे जाती है। वह भी तब

जब हमारे घर से दो घर आगे वाले घोपाल बाबू की बीवी को दौरे आते हैं—और तब डॉक्टर उसे देखने चला आता है।

टैक्सी रुकी, तो टिक्कू की बीवी चुपचाप बच्चों के साथ बाहर आकर खड़ी हो गई। हम लोग सामान उतार कर अन्दर ले गये। टिक्कू ने सिन्धु की चोटी पकड़ कर आते ही उसे छेड़ना शुरू कर दिया। फिर उसने सिन्धु को अपनी बीवी से परिचय करवाया। मुझे लगा, सिन्धु को शायद अपनी नई भाभी अच्छी नहीं लगी। उससे हाथ मिलाने के बाद, उसने मुँह फेर कर चेहरे की अजीब सी मुद्रा बनाई। सिन्धु को ऐसा करते देख मेरी बीवी भी अजीब ढंग से मुस्करा दी।



पहले तो बहुत हल्की-फुल्की सी बातें होती रहीं। फिर वे लोग जब नहा धोकर नाश्ते से फारिग हुए तो नीग्रो लड़की ने अपनी भाषा मे टिक्कू से कुछ कहा। तब टिक्कू बोला—भाभी! सिर-दर्द की कोई टेबलेट वगैरह है क्या?...........इसका सिर दुःख रहा है।

मेरी बीवी बोली—हाँ, है!

तब फिर पानी के साथ ही टिकिया लेकर उसकी बीवी खटिया पर लेट गई।

उसके लेटने से पहले—जब वह नाश्ता कर रही थी—तब मैंने देखा कि उसके चेहरे पर जैसे कुछ ऐसे ही भाव थे कि वह कहां आ गई है।

हमारा छोटा सा और कम फर्नीचर वाला घर शायद उसे अच्छा नहीं लगा था। मेरा ऐसा अनुमान है कि तब, नाश्ता करते हुए, उसने अपनी भाषा में टिक्कू से ऐसा कुछ शायद कहा भी था। लेकिन टिक्कू ने उस वक्त अपने चेहरे पर कोई फर्क नहीं आने दिया तो मुझे लगा शायद कहीं मैं ही गलत सोच बैठा होऊँ।

बैठे-बैठे तब एक बार मेरी निगाह उस लेटी हुई नीग्रो लड़की की तरफ उठ गई, तो मुझे उसका शरीर बड़ा असन्तुलित सा लगा। हालांकि नहा लेने के बाद, वह पहले से कुछ ठीक ठीक या अच्छी लग रही थी। उसने अब जापानी डिजाइन की एक बढ़िया सी लपेट ली थी लेकिन उस लुंगी के रंगों का मिक्शचर कुछ ऐसा था, जो उसके काले शरीर पर नहीं फब रहा था।

यह शायद थकी हुई थी, जो लेटते ही उसे नींद आ गई और वह बहुत जोरों के खर्राटे भरने लगी।

तब मेरी बीवी बहुत धीमी आवाज में टिक्कू से बोली—बाबू! तुमने हम लोगों की तो नाक ही कटवा दी।

टिक्कू शायद बात को समझ तो गया, लेकिन फिर भी हैरानी का अभिनय करता हुआ सा बोला—क्यों, क्यों?

उसकी भाभी बोली—अगर तुझे शादी ही करनी थी, बाबू! तो कोई लडकी तो लेता। यह क्या हाथी उठा लाये हो? ···यहां, हम लोगों ने तेरे लिए ऐसी लड़की ढूँढ रखी थी, जो तू देखता ही रह जाता।

टिक्कू को यह बात बुरी लगे ही लगे, उससे पहले तो मुझे ही बुरी लगी। मुझे आज पहली बार लगा कि मेरी बीवी कितनी फूहड है। बात कहने का कोई सलीका या ढंग होना चाहिए। यह क्या कि बैठे ठाले, एक औरत की हाथी से ही तुलना कर डाली।

टिक्कू को बुरा लगा या नहीं, यह तो कह नही सकता। लेकिन वह तो जोर जोर से ठहाके मारने लगा। फिर जब उसके ठहाके कुछ कम हुए, तो बोला–तुम्हे पता नहीं है, भाभी! कि इस हाथी के पास कितना पैसा है। अरे, वहा के एक लखपति सेठ की लडकी है। यह तो बस, साथ फस गई। फस भी क्या गई, यो समझलो कि हसी हसी मे हम लोग कुछ ऐसा कर बैठे कि शादी कर लेने के सिवा और कोई रास्ता ही नही था।

यहा मेरी इच्छा हुई कि मैं भी कुछ बोलू और कह दू कि कुछ भी किया, लेकिन गले में घटी बाधने की ऐसी क्या जरूरत आ पड़ी थी? लेकिन फिर मुझे लगा, कि मैं टिक्कू का बड़ा भाई हूँ। ऐसी गैरजिम्मेदाराना बात मेरे मुंह से शोभा नही देगी। इसलिये मैं चुप ही रहा।

तब शायद बात का रुख बदलने के लिए टिक्कू मेरी तरफ देखकर बोला—दादा! मैंने आपको कुछ दिन पहले लिखा था कि मैं आने को हूं. आप लिख भेजें कि मैं आपके लिए क्या ले आऊं?···· ··· " लेकिन आपने तो इस बात का कोई उत्तर ही नहीं दिया।" ""बहरहाल, मे आपके लिए एक घडी लाया हूँ। नये डिजाईन की है। आलार्म भी उसी मे फिट्स है।

मुझे लगा कि इस बात पर मुझे खुश होना चाहिए था। लेकिन न जाने क्यो मुझे कोई विशेष खुशी नही हुई।

उस क्षण, मैं तो यह सोच रहा था कि कल से लोग जब मिलने आएँगे तो टिक्कू की नीग्रो बीबी को देखकर क्या सोचेंगे या फिर क्या कहेंगे। पड़ोस के कुछ बच्चे तो अब भी झांक-झांककर, अपने घर वालो तक शायद यह खबर ले जा चुके हैं कि टिक्कू आया है और उसके साथ पता नहीं कौन काली औरत आई है।

तब टिक्कू फिर बोला—घड़ी निकाल दूँ, दादा!·········उस सफेद बैग मे है।

वैसे ही मैं बोला—अ·········क्या जल्दी है। आराम से निकाल लेंगे।

लेकिन मेरी बीबी के चेहरे से लग रहा था कि वह तो तत्काल, उसी ही क्षण सब कुछ देख लेना चाहती थी कि बाबू बाहर से क्या-क्या ले आया है।

तब फिर मेरी बीबी ने टिक्कू से सवाल किया—बाबू! वहां क्या अपना भी कुछ पैसा जमा किया है या लखपति बीबी के सहारे हो चल रहे हो।

ऐसे सवाल से न जाने उसे कैसा लगा यह मैं तो भाप नही पाया। लेकिन उसने तो बस यही उत्तर दिया—अरे, भाभी! जमा किसके लिए करूँ वहाँ?···········पहले पिताजी को जरूरत पड़ती थी तो लिख दिया करते थे। अब आप लोगों ने कभी पैसे-वैसे के लिए लिखा नही तो मैं समझा कि भगवान की दया से दादा को अच्छी तनख्वाह मिल जाती होगी। इसलिये शायद आप लोग नही लिख रहे हैं। रही इस लड़की की बात! सच बताऊँ, भाभी! अभी तक मुझे ही खुद पता नहीं है कि इसके पास कितना पैसा है। वैसे दो-चार मकान इसके नाम है। एक पूरा बागान भी है। कुछ रकम फिक्स मे है। बाकी सोना-वोना तो बहुत है।········पूरा हिसाब, तो सच कहता हूँ, भाभी! मैंने आज तक नहीं लगाया।

तब मुझे लगा कि कहीं नीग्रो लड़की से शादी करने की गलती को वह रुपये-पैसे के पर्दे मे तो नहीं ढकना चाहता। कि देखो, काली है तो क्या हुआ?—पैसा कितना है और फिर पैसा कमाने के लिए ही तो हम लोग विदेश जाते हैं।

तब फिर मैं सोचने लगा कि, देखो—टिक्कू कैसी बेहूदा बात कह गया। पिताजी लिखते थे, तो वह पैसे-वैसे भेज देता था। मैं नहीं लिखता तो

इसे लगने लगा है कि भगवान की दया से हमें जरूरत नही पड़ती होगी। ...... हम तो इस शर्म के मारे नही लिखते थे कि— छोटा भाई है, उसके सामने क्या हाथ फैलाएं ?— तो इसे लगता है कि हम तो सुख से रह रहे हैं। यह जो घर में जवान बहन बैठी है, उसकी शादी मे जो खर्चा होगा वह सब क्या मैं अपनी इस क्लर्की से ही कर पाऊंगा ? अपनी ही बहन के प्रति क्या टिक्कू की जिम्मेदारी नही है ?

एक क्षण को तो सोचा कि मैं स्पष्ट कह दूं—कि भई ! तुम्हें अगर ठीक लगे तो कुछ भेज दिया करो। यहाँ मेरे चार-चार, पाच पाच बच्चे हैं। तुम्हारी—मेरी बहन है। पूरी गृहस्थी है। क्या नही चाहिए ?

लेकिन उससे पहले ही मेरी बीबी बोल दी— बाबू ! तुम अपने भैया को वहाँ विदेश क्यों नही बुला लेते ? .... यहाँ तो ये क्लर्की करते-करते बस दाल-रोटी ही जुटा पाते हैं। सच पूछो बाबू ! कई दिनो से सोने की एक अंगूठी बनवाने की इच्छा है लेकिन बनवा नहीं पाते। बचत ही कहाँ है कुछ जो सोना-वोना बनवाया जाए।

ऐसा कहते हुए मेरी बीबी की नज़र नीग्रो लड़की की बाहों की तरफ उठ गई, जिसमें सोने के मोटे-मोटे कंगन मुझे भी दिखाई दे रहे थे।

लेकिन कुल मिलाकर बीबी की यह बात मुझे अच्छी नही लगी। मुझे लगा यह सब कुछ-कुछ भीख मागने जैसा है।

तभी फिर मुझे टिक्कू की यह बात याद हो आई कि उसने कहा था कि वह माल-वाल ज्यादा नही लाया है। तब लगा, टिक्कू के उस बात के कहने का एक कारण यह भी तो हो सकता है। उसे शायद लगा हो कि यहा के लोगो की तो ऐसे ही कुछ न कुछ मागने की आदत होती है। इसलिए माल-वाल के लिए कुछ गोल-मोल ही बता देना ठीक है।

हुआ भी वैसे ही। टिक्कू शायद अपनी भाभी की बात समझ गया। बोला—अगूठी ही चाहिए ना, भाभी ! ...... अरे, मेरी मिसेज़ के पास बहुत हैं, एक तुम ले लेना।

मैंने देखा, मेरी बीबी इस बात से बहुत खुश नज़र आ रही थी। लेकिन मैं मन ही मन, छोटे भाई के सामने अपने को बौना महसूस करने लगा था। यह स्थिति मुझे स्वीकार नहीं थी कि कोई ऐसा हुआ हो, जो मैं न जुटा पाया हूं और मेरे छोटे भाई के सामने उस चीज़ के लिये मुझे हाथ फैलाना पड रहा हो।

टिक्कू उसे सोने की अंगूठी देगा, इस खुशी में मेरी बीबी को कुछ सूझ ही नहीं रहा था। लेकिन फिर भी कुछ न कुछ बोलने के लिये मुझसे कहा—कितनी बार मैंने आपसे कहा है कि हम दो बार विदेश हो आये। वहाँ जो भी जाता है, उसका घर बन जाता है। पाँच-छः बरस में ही वारे-न्यारे हो जाते हैं।

टिक्कू को तब लगा कि कहीं मैं इस बात के लिये हां कर दूं या कहीं उसे ऐसा न कह दूं कि चलो, मुझे वहां बुलालो। इसलिये मेरे बड़े लड़के की तरफ देख कर वह बोला—अरे नहीं, भाभी। दादा को अब कहां विदेश भेजोगी। ?........अब तो अपना मनीष बड़ा हो जाए, तब उसे वहां बुलवा लेंगे। हमारे वहाँ दो चार अच्छे फर्म हैं। कहीं न कहीं मनीष को लगवा देंगे। वैसे हमारे ससुर साहब की भी फाऊंटेन पैन्स की एक फैक्ट्री है, वहीं कहीं लगवा देंगे।

मुझे लगा, जैसे टिक्कू की इस बात से मैं उपेक्षित हुआ हूँ। वह नहीं चाहता कि मैं इसके यहां जाऊं। या वहाँ जाकर उसकी आजादी में खलल बनूं और कहीं यह भी न जान लूं कि वह, वहाँ और क्या क्या कर रहा है या कैसे कैसे कर रहा है।

एक बार घूर कर मैंने अपनी बीबी की तरफ देखा कि वह समझ जाए कि उसकी ऐसी बातें मुझे अच्छी नहीं लग रही हैं।

तब टिक्कू फिर बोला—दादा! सिन्धु की बात जब कभी भी कहीं तय हो जाए, तो मुझे लिख देना। मैं कुछ साड़ियां और पैसे वैसे भेज दूंगा या और भी किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तो लिख देना।

मैंने कहा—हां, लिख दूंगा, जब तय होगा।

इस बीच हमने देखा, टिक्कू की नीग्रो बीबी ने करवट बदली। शायद उसकी आंख खुल गई थी। उठकर उसने चुंधियाई आंखों से बिस्तर पर कुछ देखना चाहा। फिर उसने टिक्कू को इशारे से बुलाकर कुछ दिखाया। एक क्षण को मैंने देखा, कि टिक्कू के चेहरे में भी एक तरह का तनाव आ गया। बोला—ये क्या, दादा! अपने यहां खटमल हो गये हैं?

टिक्कू की यह बात मुझे शायद वैसे बुरी नहीं लगती। लेकिन मुझे उसके सवाल करने की मुद्रा पर, आश्चर्य लगा कि जैसे वह कभी इस घर में नहीं रहकर गया हो और उसने यहां कभी खटमल नहीं देखे हों।

तब मैंने बिल्कुल ही साधारण लहजे मे कहा—हा टिक्कू ! इस मौसम में तो अक्सर होते ही हैं। ... वैसे कल एक बार स्प्रे कर लेंगे।

जैसे बडी असमजस की स्थिति मे टिक्कू ने कभी खटिया की तरफ देखा, तो कभी हम लोगों को। वह शायद सोच नही पा रहा था कि उसे क्या कहना चाहिये।

तभी फिर उसकी बीबी ने अपनी ही भाषा मे टिक्कू से कुछ कहा। टिक्कू के चेहरे से तब लगा कि कोई ऐसी बात है, जो टिक्कू हम लोगो से छिपा रहा है, या नही कहना चाहता।

तब फिर मैंने ही पूछ लिया—वह क्या कह रही है टिक्कू ?

टिक्कू बोला—वह कह रही है, ऐसे मे तो उसे रात को नीद नहीं आएगी।

जानकर भी मैंने पूछा—कैसे मे ?

कुछ कुछ सकोच से टिक्कू बोला—इसका खून शायद मीठा है। खटमलो मे इसे नीद ही नही आती।

तब मेरी बीबी बोली-बाबू ! अपनी भाषा मे उसे कह दो कि भई, आज की रात ऐसे ही गुजार लो, कल कुछ बदोबस्त कर लेंगे।

इस पर टिक्कू बोला—नही ! वो · वो ऐसा है, भाभी !.... सच तो यह है कि मुझे भी खटमलो मे नीद नही आती।

तब मुझे लगा कि शायद उसको और उसकी बीबी को यह घर अच्छा नही लगा है। वहा बड़े-बड़े आलीशान घरो मे रहकर देख लिया होगा तो अब यह घर उन्हे क्यो कर अच्छा लगने लगा।

तब फिर एक और शका ने मेरे मन मे जोर पकड लिया कि कही ऐसा तो नही है कि खटमलो के होने का तो जैसे सहारा लिया जा रहा है। असल मे अपनी आजादी मे उन्हे शायद यहा खलल सा महसूस होने लगा है।

टिक्कू की बीबी भी अब पूर्णतया जाग गई थी। वह इधर-उधर दीवारो पर लगी तस्वीरो की तरफ देखने लगी थी। टिक्कू को शायद बहुत देर बाद अब याद आया कि उसने अपने मा-बाप की तस्वीर तो अपनी बीबी को दिखाई ही नही।

आगे बढकर उसने अपनी बीबी को वह तस्वीर दिखाई, जिसमे बापू और माँ एक साथ खडे थे तब नीग्रो लडकी ने बापू की टोपी की तरफ

इशारा करके टिक्कू से कुछ कहा। उसकी बात मेरी समझ में तो नहीं आई, लेकिन उसके हाव-भाव से मैं भांप गया कि बापू के सिर पर टोपी का होना, उस लड़की को अजीब सा लगा है या फिर शायद अच्छा नहीं लगा है।

टिक्कू ने ऐसे हमारे और रिश्तेदारों की तस्वीरें भी अपनी बीबी को दिखाई।

हम लोग चुपचाप यह सब देखते रहे।

थोड़ी देर को मुझे लगा कि वातावरण बोझिल-बोझिल सा हो गया था।

हम लोगों को चुप देख, वे लोग आपस में अपनी भाषा में ही कुछ बातें करते रहे।

तब फिर कुछ देर बाद टिक्कू ने आकर कहा—दादा! ऐसा करते हैं। हम लोग होटल में ठहर लेते हैं। और कुछ नहीं""बस ऐसे ही"" सिर्फ सोएँगे वहीं। बाकी दिन भर तो आप लोगों के साथ होंगे ही।

मैंने एक बार अपनी बीबी की तरफ देखा। वह हतप्रभ सी टिक्कू को देखने लगी थी। उसे शायद उस टिक्कू से ऐसे वाक्य की आशा नहीं थी, जिसे 'बाबू बाबू' कहकर उसने अपने ही बच्चे की तरह हमेशा लाड़-प्यार दिया था।

तभी मुझे लगा कि टिक्कू मेरा उत्तर जानने के लिए मेरी तरफ देख रहा था। मैंने तो बस इतना ही कहा—देखो""जैसा तुम लोगों को ठीक लगे, वैसा करो।

न जाने क्यों ऐसा कहते हुए मेरी आवाज भारी हो आई थी।

टिक्कू शायद भांप गया कि होटल में जाकर ठहरने की उसकी बात से मुझे दुःख हुआ है। तब जैसे मुझे खुश करने के लिए बात को बदलता हुआ सा वह बोला—मैं समझता हूँ, दादा! मनीष के काम पर लग जाने के बाद, अपने इस घर की आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाएगी।

टिक्कू की बात मुझे उस वक्त के संदर्भ से कहीं भी जुड़ी हुई नहीं लगी। मुझे तो लगा जैसे अपनी झेंप मिटाने के लिए उसे कुछ न कुछ तो बोलना था। सो बोल दिया।

मैंने कोई उत्तर नहीं दिया।

उसी समय, इस विषय से हटकर मैंने कुछ और सोचना चाहा। एक बार इच्छा हुई कि टिक्कू के दोनों बच्चों से कुछ संदर्भहीन या बचकानी सी

बातें करूँ। लेकिन तब फिर मुझे लगा कि वे बेचारे मेरी भाषा तो समझ नही पाएँगे।

❁

शाम हुई तो खाना बन गया। अक्सर शाम को जल्दी ही हमारे यहा खाना बन जाता है। इस बीच वे लोग अपने दोनो बच्चो के साथ कहीं टहलने निकल गये थे और अभी कुछ देर पहले ही लौटे थे। जब वे लौट रहे थे तो हमने देखा, पडौस की कुछ औरतें अपनी बालकनियो पर खडी इन लोगो को देख देखकर मुस्करा रही थी या फिर आपस मे कुछ फुसफुसा रही थी।

तब मुझे टिक्कू पर गुस्सा आया कि पैसे-वैसे के लालच मे आकर, वह एक नीग्रो लडकी को इस घर की बहू बनाकर लाया है। इधर हमारी नाक कटवाई है सो अलग।

हम लोग खाना खाकर उठे तो उनकी अपनी भाषा मे खुसर-फुसुर से मुझे लगा, वे शायद अब वहा से खिसकने की सोच रहे थे।

तब मैंने देखा कि नीग्रो लडकी ने उठकर अपना एक सफेद बैग खोला। उसमे से उपहार जैसी कुछ चीजें निकाली, जिनमे शायद वह घडी भी थी, जिसका जिक्र सुबह टिक्कू ने मुझसे किया था। फिर शायद टिक्कू के कहने पर उसकी बीबी ने अपने एक छोटे से बाक्स मे से सोने की एक अगूठी भी निकाली। मैंने देखा वह बॉक्स कई अलग-अलग प्रकार के गहनो से भरा हुआ था।

फिर उसकी बीबी ने चमचमाती हुई एक साडी निकाली। शायद वह सिन्धु के लिये थी।

तब टिक्कू ने धीमे से अपनी बीबी से कुछ कहा, तो उसने एक बार तो मेरे दो बच्चो को टकटकी से देखा। फिर एक और बैग खोलकर, उसमे से छाट-छाट कर उसने बच्चो के कुछ कपडे निकाले। मैंने देखा, वे कपडे कोई ज्यादा अच्छे या नये नही थे। एक कमीज का तो एक बटन भी टूटा हुआ था। और एक फ्राक था, जिसके पीछे वाले जिप से लग रहा था कि फ्राक पहले से ही काफी पहना हुआ था।

यह मुझे अच्छा नही लगा। मुझे लगा, क्या अपने ही छोटे भाई के

सामने मैं इतना छोटा या गरीब हूँ, जो मेरे बच्चे वे कपड़े पहनेंगे, जो उनके बच्चों ने कई दिनों तक पहन लिये लगते है ।

तब वैसा ही हुआ, जैसा मैंने सोचा था । टिक्टू बोला-दादा ! ये सब चीजें आप लोगों के लिये हैं । घड़ी आप रख लेना । अंगूठी भाभी के लिये है और साड़ी सिन्धु के लिये । जापान का काम किया हुआ है इस साड़ी पर । यहां की करेन्सी के हिसाब से करीब-करीब साढ़े चार सौ रुपये खा गई है । रख लेना । सिन्धु की शादी-वादी में काम आ जाएगी ।.........और ये कुछ कपड़े बच्चों के लिये हैं । वैसे ये कपड़े अच्छे ही हैं । लेकिन हमारे बच्चे तो बड़े जिद्दी हैं, इन्हें पहनते ही नहीं । तभी वहीं सोच लिया था कि......... ।

मैं एकटक उसकी तरफ देखने लगा, जबकि मेरी बीवी की नजर टिक्कू के दिये हुए सामान पर लगी हुई थी ।

और कुछ न कहकर, मैंने अपनी बीबी से सिर्फ इतना कहा-इन सब चीजो को उठाकर रख दो !

फिर मैंने टिक्कू की तरफ देखकर कहा—अपनी बीबी को यहीं ठहरने के लिये मना लिया तुमने ? ...... वैसे कोई बड़ी बात तो है नही । कल स्प्रे कर लेंगे । और दिन में थोड़ा सभी खाटों को धूप में रख देंगे........ ।

लेकिन टिक्कू बोला—नही, दादा ! अच्छा नही लगता । इसका स्वभाव कुछ ऐसा ही है । बुरा मान जाएगी ।.........वैसे हम अभी जब घूमने गये थे, तब बाइ-द-वे एक होटल में तय कर आए हैं ।.........वहाँ बस, सोना ही तो है । बाकी तो दिन भर.........।

मुझे दुःख हुआ कि खटमल उसका या इसकी बीबी का खून पीयेंगे, इसलिये इस घर का खून अलग जाकर सोएगा ।

लेकिन मैंने कोई विरोध नही किया । मुझे लगा कि वह जबर्दस्ती अपनी बीबी के स्वभाव की बात बीच में ले आया है । असल मे, तय तो उन लोगों ने पहले से कर ही कर लिया था ।



उसकी बीबी का सिर-दर्द शायद अभी तक कम नहीं हुआ था । इसलिये उसने एक टिकिया और एक कप चाय की मांग की ।

चाय-वाय पीकर वे लोग उठे । जैसे मेहमान थे । या जैसे कहीं चाय पीने को ही थोड़ा देर बैठ गये थे ।

तब मैंने कहा—किसी सामान वामान की जरूरत हो तो ले जाओ — ऐसा न हो कि कहीं होटल में फिर तुम्हें तकलीफ हो।

टिक्कू बोला—नहीं, दादा ! वैसे होटल अच्छा है। हम अन्दर देख आए हैं। 'हर चीज वहाँ मुयस्सर है।' हर तरह की सुविधा है वहां।

मैं चुप हो गया। एक बार फिर वातावरण बोझिल-बोझिल सा लगने लगा।

सिन्धु तब मुँह फेरकर चौके मे चली गई।

वे भी अब जान लगे, तो मुझ लगा जैसे मेरे घर पर कोई बड़े आदमी डिनर पर आये थे और खाना-वाना खाकर अब वापिस जा रहे हैं।

तब फिर एक बार मैंने उनकी दी हुई चीजो की तरफ देखा। मुझे लगा, जैसे मेरा छोटा भाई सच मे ही कोई बहुत बड़ा आदमी हो गया है।

एक बार मन म आया कि सब की सब चीजें टिक्कू को लौटा दूँ कि हम जरूरत नहीं है लेकिन तब फिर लगा, कि अगर उसने सच में ही वापिस ले भी ली तो मैं इतना कुछ भी कहा जुटा पाऊँगा।

कोई एक कड़वा सा घूँट पीकर मे मौन रहा।

उनके चले जाने के बाद, मैंने एक नजर अपनी बीवी की तरफ देखा जो बहुत खुश थी कि देखो वे लोग इतना कुछ दे गये हैं और ठहरेंगे भी होटल पर मुझ लगा कि अभी वह कह देगी—कि अच्छा हुआ वही होटल मे हो वही वे लोग ठहर लेंगे। वरना अपने पास एक तो बिस्तरा की कमी है और दूसरे मेहमानो के पीछे जो दिन भर का झमट उठाना पडता है, उसमे तो कुछ छुटकारा मिल गया।

मैं एकटक बीवी की तरफ देखन लगा कि वह कुछ कहे। लेकिन तब मुझे लगा कि वह शायद सोच रही है कि उसकी ऐसी बात मुझे अच्छी भी लगेगी कि नहीं।

तभी हमे एक आवाज सुनाई दी। चौके म सिन्धु के हाथ से शायद कोई बतन गिर गया था। ※



आतंक

●

गये कई दिनों से ब्लेक आउट रहा। रोशनी के नाम पर लोगों ने केवल सूरज की रोशनी ही देखी थी या फिर रात में दुश्मनों के जहाजों से बम गिरने के पहले की रोशनी।

उसने कोशिश की कि वह अपनी बीवी को देखे, लेकिन घुप्प अन्धेरे मे उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अन्धेरे में हाथ बढ़ाकर उसने बीवी के शरीर को छू कर देखा। सिकुड़ी-सिमटी उसकी बीवी पास ही सो रही थी। उसने फिर बीवी के शरीर को छू कर देखा। अन्धेरे में ही उसकी बीवी की सहमी सी आवाज आई क्या है ?

—तुम्हे नींद आ गई क्या ?

—नहीं।

—तो कुछ बोलो ना !

—क्या बोलूँ ?

—कुछ भी·······! भले यही—कि आज तुमने कितनी रोटियाँ पकाईं और भले यह भी—कि, घासलेट न मिलने के कारण, स्टोव की बजाय, तुमने आज

लकड़ियां जलाई—और लकड़ियों के धुएँ के कारण तुम्हारी आंखों मे पानी आ गया ....।

—ऐसा तो होता ही रहता है।

—तो फिर कुछ और..........।

सहमे से स्वर मे उसकी बीबी फिर बोली—एक बात बताऊँ ?

—बताओ !

—हँसोगे तो नहीं ....?

—नहीं !

—कल रात आपको जल्दी ही नींद आ गई थी। मैं न जाने क्यों लड़ाई के डर से जाग रही थी.........।

—तो फिर ?

—फिर .... फिर मैंने देखा कि बड़े-बड़े नाखूनों वाली कोई लम्बी सी उंगलियां, सांप की तरह रेंगती हुई खिड़की से अन्दर आई।........ और मेरी गर्दन को कसने लगी।

—अच्छा ?....... लेकिन अन्धेरे मे तुम यह सब कैसे देख पाई ....?

—नहीं............देख नहीं पाई।..........मुझे कुछ ऐसा महसूस हुआ।............लेकिन ऐसा लग रहा था, जैसे मैं वह सब देख रही थी..... ...।

—तब फिर तुम्हारी चीख निकल गई होगी ?

—नहीं तो।.......... मेरे गले को वे उंगलियां जो कसे थीं..... ...।

उसे लगा कि वह कांप रही थी। इसलिए उसने बीबी को अपनी बांहो मे भर लिया—लेकिन तुम यों कांप क्यों रही हो ?

कोई उत्तर देने की बजाय बीबी उसके शरीर से चिपट गई। कुछ देर को दोनों कुछ नहीं बोले। थोड़ी देर बाद उसने बीबी से कहा—थोड़ी देर को मुझे छोड़ो तो।

—क्यों ?

—छोड़ो तो, तुम्हें एक बात बताऊँ।

पलंग से उठकर, दीवार के सहारे वह अपनी टेबुल तक आया। वहां से टेबुल लैम्प उठाकर वह वापिस धीरे-धीरे पलंग के पास आया। बीबी से बोला—सुनो। लिहाफ को अपने मुँह तक ओढ़ लो तो एक चीज बताऊँ।

वह और बीबी लिहाफ में छिप गये और फिर मुंह तक ओढ़ लिए। लिहाफ के अन्दर उसने टेबुल लेम्प जलाया। लिहाफ के अन्दर रोशनी फैल गई। खुशी से उसने बीबी की तरफ देखा--तुम्हें कैसा लग रहा है?

कैसा भी नहीं·········।

कैसा भी नहीं?······ कमाल है।··········मुझे तो बड़ा अच्छा लग रहा है।··········कई दिन बीत गये हैं कि हम लोगो ने कोई जलता हुआ बल्ब नहीं देखा।······ ······इस वक्त यह बल्ब मुझे किसी अमेरीकन लड़की सा लग रहा है।

बीबी ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने फिर बल्ब की गोलाई पर ऐसे हाथ फेरा जैसे किसी जवान लड़की के गालों पर प्यार से हाथ फेर रहा हो। कुछ देर को वह ऐसा ही करता रहा। फिर उसने बल्ब की रोशनी बीबी के चेहरे पर फेंकी। अधिक रोशनी के कारण उसकी बीबी बल्ब की तरफ नहीं देख पाई इसलिए उसने अपनी आंखें मूंद ली। उसने फिर बीवी से कहा—सुनो! इस बल्ब की रोशनी में तुम बहुत हसीन लग रही हो!

चुंधियाई हुई आखो से बीबी ने उसकी तरफ देखा। उसने फिर बीबी से कहा—लो। थोड़ी देर को तुम लैम्प को अपने हाथो में पकड़ लो। मैं आज तुम्हें इस रोशनी मे चूमूंगा। जबसे ब्लेक आउट हुआ है, तब से मैं तुम्हे अन्धेरे मे ही चूमता आया हूं।

चुंधियाई आँखों से ही बीबी ने फिर आश्चर्य से उसकी तरफ देखा और लैम्प अपने हाथों में लेकर फिर आँखें मूंद ली। लिहाफ के अन्दर छिपे लैम्प की रोशनी मे वह बीबी को चूमने लगा।

चूमते-चूमते उसे शायद पता ही नहीं रहा कि लिहाफ का थोड़ा हिस्सा उनके सिर से हट गया था। बाहर से आई किसी सीटी की आवाज पर उसे होश आया और उसने एकदम लैम्प बुझा दिया। लिहाफ हटाकर वह फिर दीवार के सहारे अपनी टेबुल के पास आया। टेबुल लैम्प टेबुल पर रखकर वह फिर वापिस पलंग पर आकर लेट गया।

बीवी बोली – सीटी क्यो बजी?

ऐसे ही।···शायद रोशनी ने लिहाफ की कैद से बाहर निकलने की कोशिश की होगी····।

बीवी शायद उसकी बात को नहीं समझ पाई। इसलिए चुप रही। वह फिर बोला—न जाने अभी और कितने दिनों तक दुश्मन के आतंक से हमारी रोशनी कैद रहेगी।

बीवी ने फिर भी कोई उत्तर नही दिया।

अचानक बाहर सायरन बज उठा। अपनी टाँगें पेट में समेटकर बीबी और सिकुड़ गई। उसने बीबी से पूछा—तुम अभी तक काँप रही हो?

काँपते स्वर मे बीबी बोली—खिड़की से फिर वे ही कल वाली लम्बी लम्बी उंगलियाँ आ रही हैं"'आज मुझे उनके तेज नाखूनो का एहसास हो रहा है।

कानो मे उंगलियाँ डालकर, बीबी ने तकिये मे अपने दांत गड़ा दिये।

उसने भी अपनी नाईट ड्रेस से रूमाल निकालकर अपने दांतो के बीच रख लिया।

गड़ · · ड · ··· ड · · ड ··· ··· ड ··· ··· ।

······ और अचानक बिजली कौंध गई और साथ ही जोर का एक धमाका हुआ।

कुछ देर को मौत जैसा सन्नाटा रहा। हवा की साय साय के सिवाय वहा और कोई आवाज नही थी।

····और तब एक बार फिर सायरन बजा।

मुह से रूमाल निकालकर उसने धीमी आवाज मे बीबी से कहा—कही बम गिरा शायद।

—हाँ गिरा।· ·· वे लम्बी-लम्बी उंगलिया खिड़की से अदर आईं, और फिर भाग गईं।

—मेरे मुह का स्वाद खारा हो गया।

—क्यो?

—लैम्प जलाते वक्त लिहाफ ओढने से मुझे पसीना आ गया था। और जिस रूमाल से मैंने पसीना पोंछा था, वही रूमाल मुझे मुँह मे डालना पड़ गया।······ लेकिन तुम काप क्यो रही हो?

—आपको पसीना आया था, लेकिन मुझे सर्दी लग रही है।

—तुम डरपोक हो· ···।

—हा ·· ·· मुझे डर है बड़े नाखूनो वाली लम्बी उंगलियो का।··· वे फिर खिड़की से आएँगी।···मैं खिड़की बद कर दूँ?

—नही।··· ··· तुम खिड़की बद करोगी तो फिर मुझे पसीना आ जाएगा। और फिर मेरे मुँह का स्वाद खारा हो जाएगा।

बीबी को अभी तक कापता देख, उसने उसे अपनी बाँहो मे भर लिया। बीबी का कापना अब कुछ कम हो गया। उसने फिर बीबी से पूछा—तुमने कभी किसी आदमी का खून बहते देखा है?

—नहीं।.........लेकिन मैं उसकी कल्पना कर सकती हूँ।.........मैंने आज अपनी लाल नेल-पालिश नाले मे फेंक दी।

—क्यों ?

—क्योंकि रात वे लम्बी-लम्बी उंगलियां मेरे गले तक आई थीं। और अगर वे अपने तेज नाखून मेरे गले में गाड़ देतीं, तो लाल नेल पालिश मेरे गले पर फैल जाती।.........

थोड़ी देर को दोनों कुछ नही बोले।

उसने फिर बीबी से कहा—मुझे सीटी का डर हो रहा है, नहीं तो मैं एक चीज देखना चाहता था।

कौन सी......... ?

—सिविल डिफेन्स की ट्रेनिंग में हमें एक आतंकित चेहरा दिखाते हैं, जितनी आंखें आतंक के कारण फटी-फटी होती हैं। इसलिये मेरी इच्छा हो रही है कि लैम्प जलाकर मैं तुम्हारे आतंकित चेहरे को देखूं।.........और फिर देखूं कि सिविल डिफेन्स वाले उस चेहरे और तुम्हारे चेहरे में क्या फर्क है।

बीबी मौन रही।

उससे फिर कहना शुरू किया—सुनो ! अब हम एक दूसरे की बाँहों मे सो रहे हैं। समझ लो कि हम दोनों को नीद आ जाती है और फिर अचानक दुश्मन के किसी बम के धमाके से अपना यह मकान ढह जाता है। और हम दोनों इसी ही हालत में यहां दब जाते हैं। तब, सुबह को लोग जब मलवा हटाएंगे, तो हम उन्हें इस हालत में पड़े मिलेंगे।.........और तब निश्चय ही फोटोग्राफर अपनी फोटो खीचना चाहेगे।

बीबी एकदम उससे अलग हो गई। आश्चर्य से वह बोला—क्यों क्या हुआ ?

—नही।.........मैं नही चाहती कि मरने के बाद हम दोनों की इस हालत में कोई फोटो खीची जाय।

उसने फिर बीबी को खीच कर अपनी बाँहों में भर लिया और बोला—चलो छोड़ो। तुम्हें अगर यह अच्छा नही लगता, तो फिर एक और बात सुनो.........।

—कौनसी ....?

—हम दोनों इसी हालत में एक दूसरे की बाँहों में सो रहे हैं। दुश्मन का बम अपने ऊपर आकर गिरता है। हम दोनों के टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं। सुबह को जब लोग आएंगे तो अपने टुकड़े देखकर उनके

लिये यह पहचानना मुश्किल हो जायेगा कि कौन सा टुकड़ा किसके शरीर का है।

उसकी बीवी ने उसे अपनी बाहों में और जोर से कस लिया— आप ऐसी बातें न करें। नहीं तो फिर बड़े नाखूनों वाली वे लम्बी लम्बी उंगलियां.......

बीवी को सान्त्वना देता हुआ वह बोला—नहीं डरो मत। अब कुछ देर को कोई बम नहीं गिरेगा। दूसरा सायरन बज चुका है।

तब अपनी बाँहों का कसाव कम करती हुई बीवी बोली—तुम थोड़ी देर को मेरे साथ बाहर चलोगे?

—क्यों?

—मुझे बाथरूम में जाना है। मैंने काफी देर से रोक रखा है..........।

—तो जाओ। मैं क्यों साथ चलूं?

—मुझे डर लग रहा है।

उसे हंसी आ गई। बोला—नहीं। तुम झूठ बोल रही हो। अगर तुमने काफी देर से रोक रखा होता, तो बम फटने से तुम्हारा बिस्तर में ही बह जाता।

—क्यों?

—होता है। ऐसा ही होता है। बम फटने के डर से लोग कहीं के कहीं जा छिपते हैं। और जब बम फटने का धमाका होता है तब पेशाब तो क्या, लोगों की टट्टी भी निकल जाती है।

तब डरे डरे से स्वर में बीवी बोली—ऐसा ही होता है ना?

—हां, हां, ऐसा ही होता है.......।

तो आपको सच बताऊं। मेरा भी गाउन थोड़ा खराब हो गया है। जब धमाका हुआ, तो मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ, लेकिन फिर जल्दी ही मैंने अपने को सम्भाल लिया.......।

—खैर, ऐसी कोई खास नहीं है ऐसा होता है।—थोड़ी देर ठहर कर वह अपनी बीवी से बोला—उठो गाउन बदल लो।

—लेकिन इस अंधेरे में....... ?

—तुम्हारी मरजी.......।

कुछ देर को फिर दोनों चुप हो गये।

अब बीवी बोली—क्यों आप चुप हो गये.......?

—चुप ?.......नहीं, चुप नहीं हुआ। सोच रहा था कि भले ही रा गाउन ऐसे ही रहे। यह भी एक अनुभूति है।..... ...अब तो देखो।

अपना कोई बच्चा नहीं है। लेकिन अगर लड़ाई बंद हो गई और हम दोनों बच गये, तो अपने भी कोई बच्चा होगा। तब कभी कभी वह बच्चा बिस्तर में पेशाब भी कर देगा। और ऐसे कभी कभी तुम्हारे कपड़े भी खराब हो जायेंगे।.........तब तुम्हें बच्चे के उस पेशाब से नफरत नहीं होगी।......... और कपड़े खराब हो जाने के बाद भी कभी कभी सुस्ती के कारण तुम उठना नहीं चाहोगी।.........अब तुम्हें कुछ गीला गीला लग रहा होगा?

---हाँ।

---चलो उठो। तुम्हें बाथरूम जाना है ना?

दोनो पलंग से उठे। बीवी ने उसका हाथ पकड़ लिया। उसे लगा कि बीवी का हाथ काफी ठंडा हो गया था। तब अंधेरे मे पैरों की मदद से चप्पल ढूंढता हुआ वह बोला---सुनो तो। समझलो, किसी बम के फटने से मैं मर जाता हूं, और तुम बच जाती हो। फिर तुम बाथरूम मे कैसे जाओगी?

बीवी ने कोई उत्तर नही दिया। बल्कि अपने दोनो हाथों में अपना हाथ भीच लिया। तब वह बोला--मैं बताऊँ तुम क्या सोच रही हो?

--क्या?

--तुम सोच रही हो कि ऐसी हालत मे तुम बिस्तर में ही बहा दोगी।.........भले गाउन के साथ तुम्हारा पूरा बिस्तर भी खराब हो जाए।

बीवी ने फिर भी कोई उत्तर नही दिया।

चुपचाप दोनों बाहर निकल आए। बाहर आकर बीबी बाथरूम में गई बाहर खड़े-खड़े उसने ऊपर देखा। आसमान में उसे चांद की पतली लकीर नजर आई। रोशनी का भूखा वह, एकटक चांद की उस पतली लकीर को देखता रहा।

थोडी देर बाद बाहर आकर मजबूती से उसका हाथ पकड़कर डरी-डरी सी बीबी बोली-- मुझे आया ही नहीं...... ...।

--क्यो?

कांपती सी बीबी बोली---जैसे ही मैं अन्दर गई, तो बाथरूम की खिड़की से वे लम्बी-लम्बी उंगलियां अदर घुस आई और मेरे गले पर.........।

---बाथ रूम में भी.........?

--हां ऽऽऽऽ।--और फिर रूआंसे स्वर में बीबी बोली--आपने......... आपने अपने मरने की बात क्यों कही.........?

एक जोरदार ठहाका मारकर उसने बीबी के गले में बांह डाल ली और दोनों कमरे के घुप्प अंधेरे में चले गये।

सच तो यह था कि वह बीबी से भी अधिक आतंकित था। ჻

आवरण
प्रकाश वर्मा
जोधपुर